कल्पलता
(KALPLATA)

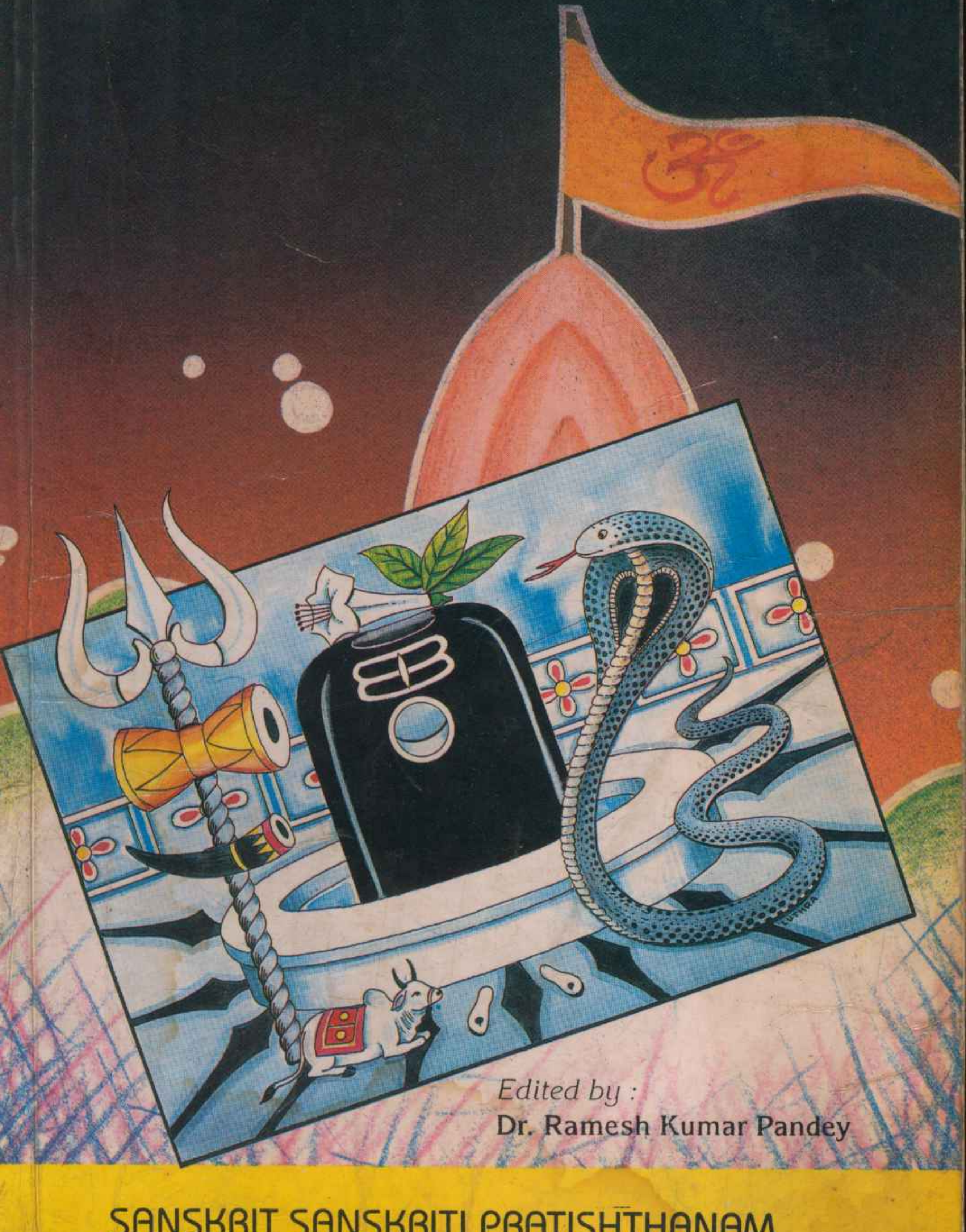

Edited by :
Dr. Ramesh Kumar Pandey

SANSKRIT SANSKRITI PRATISHTHANAM
NEW DELHI

ABOUT THE BOOK

The book is likely to act as a turning point in the life of the reader and is bound to bring about a change in his thinking and behaviour.

Cover Picture
TADAKESHWAR MAHADEV
West Bengal

सत्यं शिवं सुन्दरम्

आशीर्वादः

श्री हरिः शरणम्

स्वामी विजयेन्द्रसरस्वती
शङ्कराचार्यः

स्वामी जयेन्द्रसरस्वती
शङ्कराचार्यः

पूज्यानां श्रीकाँची-कामकोटि-पीठाधिपतीनाम्

उपहार

कल्पलता की **पाँच प्रतियाँ** अपने प्रियजनों को **उपहार स्वरूप** देकर उनके तथा अपने आध्यात्मिक जीवन को सफल बनाएँ।

शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती
काँची काम कोटि पीठम्
काँचीपुरम्।

प्राप्ति स्थान :

नीता प्रकाशन
ए-4, रिंग रोड, साउथ एक्सटेंशन, भाग-1,
नई दिल्ली-110049
दूरभाष : 4636010-20-30, फैक्स : 4636011

आचार्यों का निर्देश है कि यह ग्रन्थ जन-जन तक पहुँचाया जाए, इस पुण्य कार्य में सबका सहयोग आवश्यक है।

• प्रकाशक

कल्पलता

(KALPALATA)

A Collection of Devotional Poems

Edited by :
Dr. Ramesh Kumar Pandey

Sanskrit Sanskriti Pratishthanam

E-80, South Extention Part-1,
New Delhi-110049

Published by :

Smt. Shanti Devi Gupta

neeta prakashan

Educational Publisher

A-4, Ring Road, South Extn. Part-I
New Delhi-110049 INDIA

Phone : (91-11) 4636010-20-30 ❒ Fax : (91-11) 4636011,
Gram : Loveneeta ❒ E Mail : neeta@giasdl01.vsnl.net.in

© All Rights Reserved

First edition : 1997 - 1000
Second edition : 1997 - 6000
Third edition : 1998 - 11000

PRICE :

Paper back Rs. 110.00
Library ed Rs. 150.00
$ 10.00

Printed at Sona Printers Pvt. Ltd. B-181 Okhla Ph-1, N.D.-20. Ph: 6811313-4-5-6

दूरभाष : (एस. टी. डी. ०४११२-२२११५)

श्रीचन्द्रमौलीश्वराय नमः
श्रीशंकर-भगवत्पाद-परम्परागतम्
पूज्यानां श्रीकाँची-कामकोटि-पीठाधिपतीनां
जगद्गुरु-श्रीशंकराचार्य-स्वामि-पादानां
श्रीमठ-संस्थानम्

नं. १ सालै-मार्ग काँचीपुरम् ६३११५०२
यात्रास्थान : हरिद्वार (उ० प्र०)

सन्देश

"जन्तूनां नरजन्म दुर्लभम्" इस वाक्य के अनुसार संसार में कई प्रकार के जीव-जन्तु होने पर भी मनुष्य-जन्म अत्यन्त दुर्लभ है और यह अनेक पुण्यों से प्राप्त होता है। इस मनुष्य-जीवन को सच्चा जीवन बनाने के लिए मानव (जनता) के अनेक कर्त्तव्य हैं। आजकल जिस प्रकार मुनष्य अपने साधारण कार्यक्रम के लिए नित्य-चर्या लिखता है, उसी प्रकार उसे अपनी जीवन-चर्या तैयार करनी चाहिए।

इस दिशा में **नीता प्रकाशन** हमारे आशीर्वाद से संस्कृत-संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कार्य कर रहा है। **कल्पलता** नामक ग्रन्थ का, जिसमें दैनिक-व्यवहारश्लोक, नित्यपूजनविधि, पारायणश्लोक, चर्पटपञ्जरिका आदि स्तोत्रों एवं मन्त्रों के अतिरिक्त नैतिक-शिक्षा की दृष्टि से प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका भी संगृहीत है, नित्य कार्यों, अनुष्ठानों एवं जीवन के उत्थान के लिए प्रकाशन किया गया है। हर एक मानव ये स्तोत्र पढ़कर, भगवत्प्रसाद लेकर जीवन की आध्यात्मिक उन्नति के शिखर पर पहुँचे, ऐसा मेरा मानव-मात्र को आशीर्वाद है।

स्वतन्त्रता की स्वर्ण-जयन्ती पर मेरा यह शुभ सन्देश।

इत्थं नारायणस्मृतिः
(पूज्यपादस्वामी श्रीजयेन्द्रसरस्वती)

लिप्यन्तरण को कैसे पढ़ें ?

संस्कृत-भाषा को अनेक लिपियों में लिखने की परम्परा है; भारत वर्ष में सबसे अधिक प्रचलित देवनागरी है। इसमें कुल 48 वर्ण हैं –– 13 स्वरवर्ण तथा 35 व्यञ्जन वर्ण। व्याकरण के प्राचीन विद्वानों ने इन वर्णों को व्यावहारिक भाषा-वैज्ञानिक विधि से व्यवस्थित किया है। जिसे पाश्चात्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है। लिप्यन्तरण की जो विधि कल्पलता में प्रयुक्त हुई है वह ऐसी विधि है, जिसे पिछले 100 वर्षों से विद्वानों ने संस्कृत-ध्वनियों के उच्चारण के लिए स्वीक़ार किया है। पाठकों की सुविधा के लिए उसकी एक तालिका अगले पृष्ठ पर दी जा रही है।

How to Read the Transliteration ?

Sanskrit language has been written in a variety of scripts. The mode of writing most popular throughout India, however, is called **Devanāgarī**, which consists of forty-eight characters: thirteen vowels and thirty-five consonants. Ancient Indian Sanskrit grammarians arranged this alphabet according to practical linguistic principles, and this order has been accepted by all Western Scholars. The system of transliteration used in this Kalpalatā conforms to a system that scholars in the last hundred years have accepted to indicate the pronunciation of each Sanskrit sound. For the guidance of readers, a table of Sanskrit sounds is being given on next page.

THE TABLE OF SANSKRIT SOUNDS

VOWELS.

Initial	Medial	Equivalent
अ	–	a
आ	ा	ā
इ	ि	i
ई	ी	ī
उ	ु	u
ऊ	ू	ū
ऋ	ृ	ṛ
ॠ	ॄ	ṝ
ऌ	ॢ	ḷ
ए	े	e
ऐ	ै	ai
ओ	ो	o
औ	ौ	au

CONSTANTS.

	Equivalent,	
क	ka	Gutturals
ख	kha	
ग	ga	
घ	gha	
ङ	ṅa	
च	ca	Palatals
छ	cha	
ज	ja	
झ	jha	
ञ	ña	
ट	ṭa	Cerebrals
ठ	ṭha	
ड	ḍa	
ढ	ḍha	
ण	ṇa	
त	ta	Dentals
थ	tha	
द	da	
ध	dha	
न	na	

	Equivalent	
प	pa	Libials
फ	pha	
ब	ba	
भ	bha	
म	ma	
य	ya	Semivowels
र	ra	
ल	la	
व	va	
श	śa	Spirants
ष	ṣa	
स	sa	
ह	ha	

: ḥ (Visarga)

ṃ (Anusvāra) & (Anunāsika)

ँ, ꣳ चिह्न को अनुस्वार समझिये।

ँ, ꣳ Marks indicate the Anūsvara.

अनुग्रह

श्रद्धालु पाठकों के हाथों में **कल्पलता** का तीसरा संस्करण देते हुए हम अत्यन्त गौरव एवं हर्ष का अनुभव कर रहे हैं। सच्ची निष्ठा से इस संग्रह का स्वागत करते हुए आपने जो हमारा उत्साह बढ़ाया है, उसका ही यह परिणाम है कि **तीसरा संस्करण** इतने कम समय में आपके सामने प्रस्तुत है।

इस संग्रह को तैयार करने में **जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती जी एवं शङ्कराचार्य श्री विजयेन्द्र सरस्वती जी,** (काञ्चीकामकोटि), **जगद्गुरु शङ्कराचार्य श्रीमाधवाश्रम जी** का जो अनुग्रह हमें प्राप्त हुआ है, उसका लाभ सभी को प्राप्त हो, यही हमारी कामना है।

इसके अतिरिक्त जिन सन्तों के आशीर्वाद एवं उपदेश से इस संग्रह को परिमार्जित किया गया है, उनमें **श्री मौनी बाबा,** लक्ष्मीकुण्ड, वाराणसी, स्वामी **श्रीसत्यमित्रानन्द जी,** भारत माता मन्दिर, हरिद्वार तथा स्वामी **श्री चिन्मयानन्द जी,** परमार्थ निकेतन, हरिद्वार प्रमुख हैं। कल्पलता के इस संस्करण के निर्माण में जिन महापुरुषों ने अपने सत्परामर्श से लाभान्वित किया है। उनमें भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश **श्री रंगनाथ मिश्र** एवं काशी के विख्यात विद्वान् **डॉ. भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'** मुख्य हैं। आदरणीय इन समस्त **गुरुजनों, आचार्यों** एवं **महापुरुषों** के प्रति हम अपनी प्रणत-कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसी प्रकार इनका सहयोग एवं मार्ग-दर्शन हमें प्राप्त होता रहेगा।

पूर्ण प्रयत्न करने के बाद भी कुछ अशुद्धियाँ रह सकती हैं, जिनके लिए विद्वज्जनों से प्रार्थना है कि आवश्यक संशोधन करते हुए हमें सूचित करने की कृपा करें, इसके लिए हम आपके कृतज्ञ रहेंगे।

प्रकाशक

श्रीकाञ्ची-कामकोटि-पीठम् द्वारा कल्पलता का हरिद्वार में विमोचन-समारोह

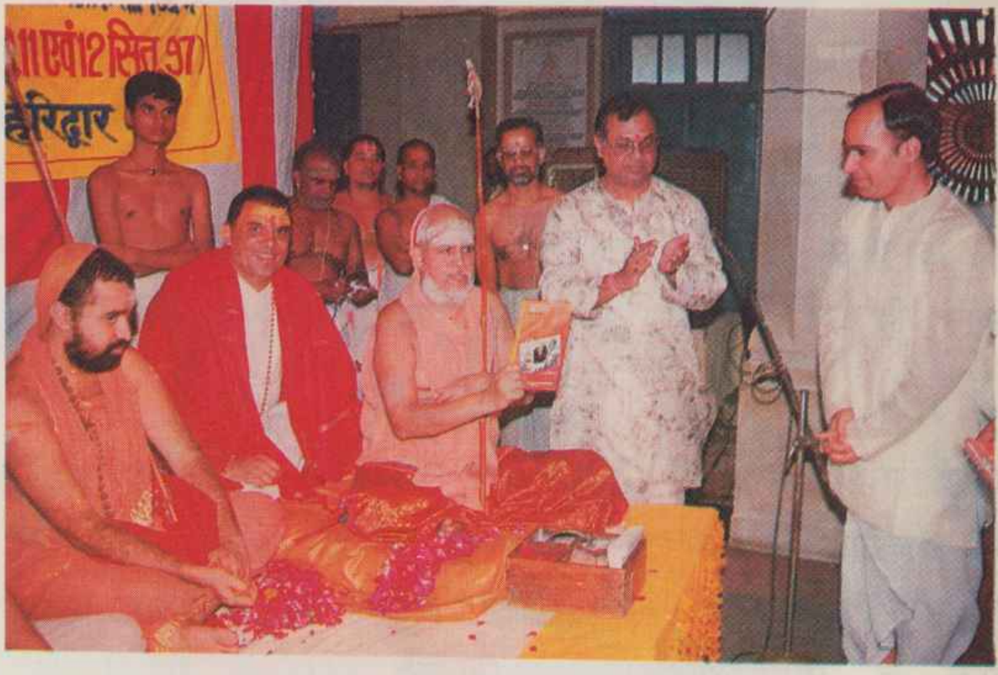

शङ्कराचार्य जी कल्पलता का विमोचन करते हुए।

शङ्कराचार्य जी राधेश्याम गुप्ता एवं लेखक को आशीर्वाद देते हुए।

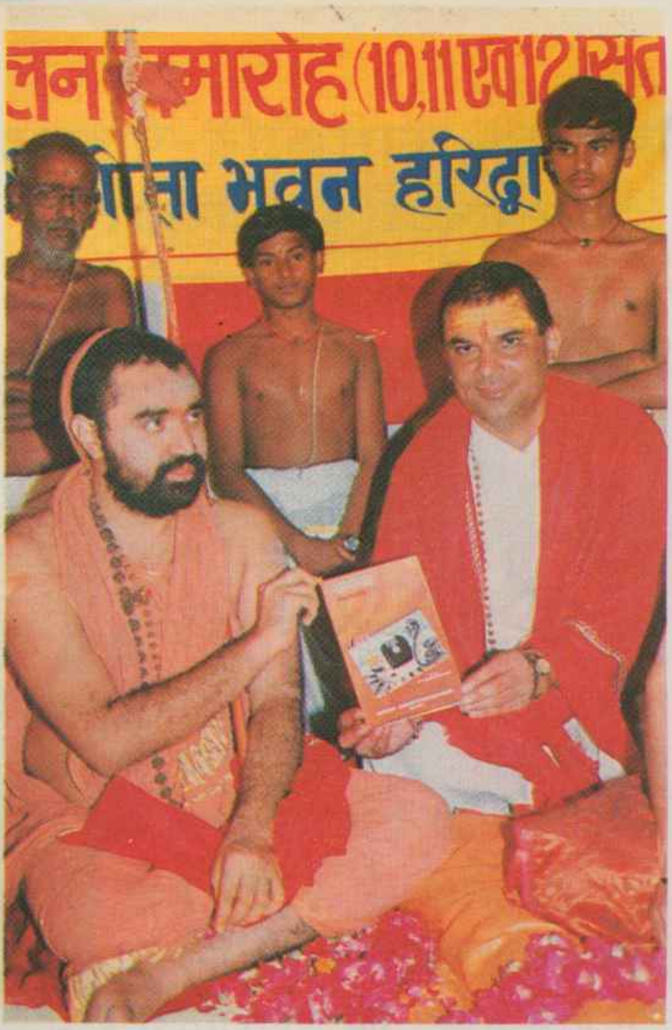

शङ्कराचार्य जी एवं ब्रह्मचारी जी कल्पलता को दर्शाते हुए।

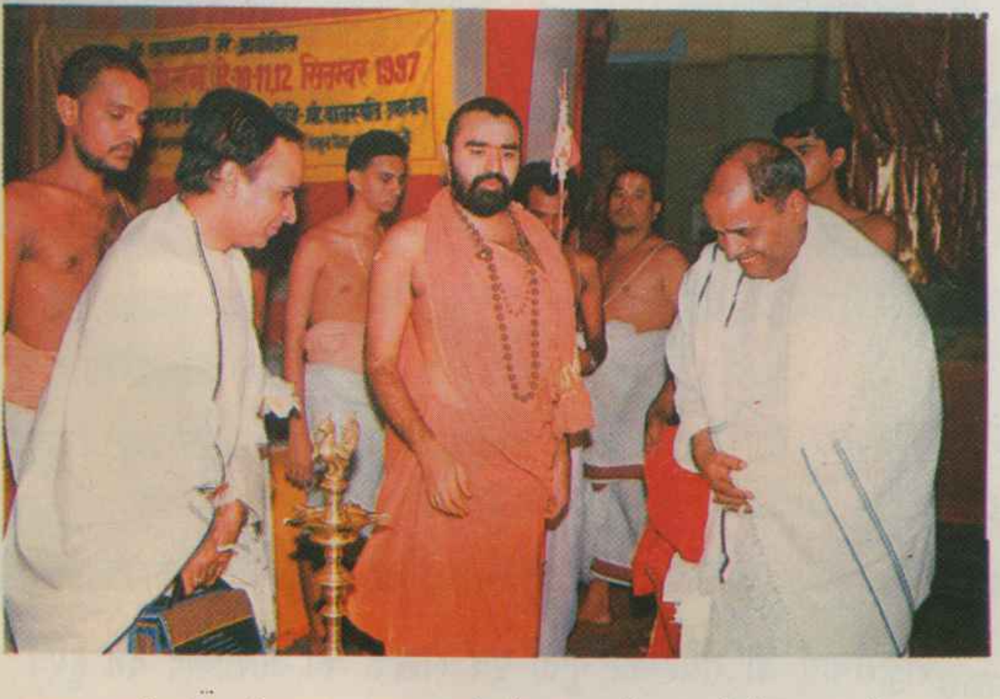

शङ्कराचार्य जी राधेश्याम गुप्ता एवं लेखक को आशीर्वचन कहते हुए।

वन्दना के स्वर

भगवान् की बड़ी विचित्र लीला है, वह हर प्राणी के प्रति अत्यन्त दयालु है। उसकी प्रेरणा से निरन्तर विस्मयकारी घटनाएँ घटती रहती हैं। इधर कुछ दिनों से मेरे मन-मस्तिष्क में काफी उथल-पुथल चल रही थी; हृदय अशान्त था। अचानक मन में हरिद्वार की यात्रा का विचार उठा और दूसरे दिन ही निकल पड़ा।

हरिद्वार पहुँचकर माँ-गङ्गा के शीतल जल में गोता लगाया तो लगा कि सारी बैचेनी छू-मन्तर हो गयी। सात्त्विक मन से सन्ध्या-वन्दनादि से निवृत्त होकर जैसे ही खड़ा हुआ कि पास से किसी ने कहा कि आजकल हरिद्वार में ही काम-कोटि पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी जी चातुर्मास्य कर रहे हैं। मैने पूछा - "कहाँ?" उत्तर मिला - "बिड़ला निकेतन में।" मैं बिड़ला निकेतन पहुँच गया। वहाँ पता चला कि स्वामी जी के दर्शन सायंकाल होंगे। सन्ध्या-समय पूज्यपाद स्वामी जी के चरणों का दर्शन-लाभ हुआ और घण्टों वार्तालाप का अवसर मिला। उन्हीं के आशीर्वाद से 'कल्पलता' संग्रह तैयार करवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं अत्यन्त प्रणत भाव से स्वामी जी के चरणों में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

हमारे देश का साहित्य, संस्कृति एवं सभ्यता इतनी उच्च कोटि के हैं कि उनसे आधुनिक विश्व की सारी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इसकी श्रेष्ठता को सम्पूर्ण विश्व में स्वीकार किया गया है। ऐसी गरिमामयी भारतीय संस्कृति

का विश्व के धरातल पर पूर्ण प्रचार-प्रसार हो, यही मेरी हार्दिक कामना है।

डॉ0 रमेश कुमार पाण्डेय ने मेरे प्रस्ताव को सद्यः स्वीकार करते हुए बड़ी लगन से सरल हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद के साथ इस ग्रन्थ को तैयार किया। इस कार्य में संस्कृत-संस्कृति-प्रतिष्ठानम् के अध्यक्ष प्रो. वाचस्पति उपाध्याय का दिशा-निर्देश निरन्तर मिलता रहा। डॉ0 के. पी. ए. मेनोन् ने बड़े स्नेह भाव से सम्पूर्ण ग्रन्थ का अवलोकन किया और सत्परामर्श से मुझे उपकृत किया। अतः इन महानुभावों के इस अमूल्य सहयोग के लिए मैं कोटि-कोटि आभार व्यक्त करता हूँ।

संस्कृत-संस्कृति-प्रतिष्ठानम् की अभी स्थापना हुई है। यह संस्था देश के बच्चों में संस्कृति एवं संस्कृत के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित की गई है। इसी क्रम में यह ग्रन्थ पुष्प आपके सामने प्रस्तुत है, जिसमें पूज्यपाद स्वामी जी के आशीर्वाद की सुगन्ध है। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह ग्रन्थ जन-जन तक पहुँचेगा और उनमें भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धाभाव भरेगा।

जयतु संस्कृतं जयतु संस्कृतिः

राधेश्याम गुप्ता

FOREWORD

I feel immensely happy to have been asked to write a few words of appreciation about the book entitled KALPALATĀ which has been edited by my colleague and a front rank Sanskrit scholar Dr. Ramesh Kumar Pandey. Kalpalatā as the name signifies is really capable of showering beatitude and happiness. It is a collection of didactic poetry which have been culled from different sources. In the world of literature, the term 'didactic poetry' is usually applied to a group of compositions which are precisely meant for inculcating the moral tendencies. They are not tracts or text books giving metrical exposition of complex, philosophical and moral themes, but which give an impressive poetical expression to traditional wisdom or to wisdom which springs from intimate observation of men and manners. A careful reader and spiritual seeker will find that the collections in 'Kalpalatā' aim at providing expressions of human soul craving for attaining sublimity at its acme. Each of the verse collected re-assures that here humanity will find its full expressions and poetry will display richness and depth. In one sense, didactic poetry leans perceptibly towards Sanskrit devotional poetry. In fact, Kalpalatā is full of verses which are invaluable vehicle of devotion and meditation for achieving the Puruṣārthas–Dharma, Artha and Kāma leading to the final beautitude (Mokṣa–the summum bonum of human existence). It is felt that a person who has either acquired the merit in this birth or in the previous birth feels inclined to worship HIM. In view of this, we feel that reading and chanting of these verses will keep a spiritual seeker away from the stress and strain of life and also lead him from darkness to light.

We all know that material things have never been capable of providing the inner peace of mind. It is a proven truth that "Man does not live by bread alone". In plain words "Roṭā, Kapaḍā aur Makān" are bare necessities of life but beyond that it is of utmost importance to develop an inner vision to solve the complexities of life.

Spiritual seekers especially those who are not well conversant with the divine language **'Devavāṇī'** Sanskrit will find pleasure in reciting the Ślokas, because with great efforts the learned editor has produced the Kalpalatā with English, Hindi translations and has also provided us with transliteration of the verses. In my considered opinion even our foreign students who are deeply devoted to Ancient Indian wisdom will find this book very useful. The collected Stutis in this book contain invaluable spiritual advices. It also provides the seeker to uplift his mind, body and soul.

Under the inspiring guidance and blessings from His Holiness Acharya Kanchi Kamakoti Pithadhipati Jagadguru Shankaracharya Swami Shri Jayendra Saraswati Ji, our respected friend Shri Radhe Shyam Gupta embarked upon such a noble work. Smt. Shanṭi Devi Gupta of Neeta Prakashan who has a deep religious bend of mind, undertook herself the task of funding the publication of this collection. I hope and trust she will keep funding such publication in future also. The editor of this 'Kalpalatā' Dr. Ramesh Kumar Pandey has done his job with meticulous care. May God shower his blessings on him.

Prof. Vachaspati Upadhyaya
Vice-Chancellor
S. L. B. S. Rashtriya Sanskrit
Vidyapeeth, New Delhi - 110016

Daily worship, why?

Man is considered the most superior of all creatures. The deeds of his past life determine, what form a creature takes in his next life. This proves that the human form is the result of good deeds done in past lives. To make this life worthwhile and to attain liberation man should strive hard.

Praying to God is one way of attaining release. It is the one enjoyable way. Prayer ensures success in this world and in the other world. The Puranas tell us that prayer is the most potent way of destroying our sins.

Prayer is an important aspect of Indian culture. Indian civilization is endangered today, and we must fight the danger. We must impress upon those influenced by western cultures the importance of the Indian way of life. We must make the children – the citizens of tomorrow– value our culture. For this, we must make them understand and imbibe the principles of the Gita and the Ramayana. But this is possible only when children know a little Sanskrit (the language of the gods). Sanskrit can enlighten us about India, and also provide solutions to larger problems which are being faced by the world.

The Sanskrit–Sanskriti–Pratishthanam espouses Indian culture and Sanskrit. It especially attempts to teach children. This booklet is the first step in this direction. It contains mantras that are recited every day, and some stotras. These have been explained in simple Hindi and English to make them properly understood.

Ramesh Kumar Pandey

CONTENTS

1. दैनिक-व्यवहारश्लोकाः
Verses for daily use 1-12

2. नित्य - पूजापद्धतिः
The method of daily worship 13-17

3. षोडशोपचारपूजनम्
Ṣoḍaśopacārapūjanam 18-28

4. पारायण-श्लोकाः
Verses for daily reading 29-48

5. चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्
Carpaṭapañjarikāstotram 49-57

6. शिवताण्डवस्तोत्रम्
Śivatāṇḍavastotram 58-70

7. शिवमहिम्नः स्तोत्रम्
Śivamahimnaḥ Stotram 71-109

8. पुरुषसूक्तम् (शुक्लयजुर्वेद)
Puruṣasūktam (Śuklayajurveda) 110-118

9. श्रीसूक्तम्
Śrīsūktam 119-128

10. शिवसङ्कल्पसूक्तम् (शुक्लयजुर्वेद)
Śivasṅkalpasūktam (Suklayajurveda) 129-133

11. रत्नमालिका
Ratnamālikā 134-140

दैनिक-व्यवहारश्लोकाः
VERSES FOR DAILY USE

प्रातः पठनीयाः श्लोकाः
Verses to be recited in the morning

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थिता गौरी प्रभाते करदर्शनम्।।1।।

karāgre vasate lakṣmīḥ karamadhye sarasvatī /
karamūle sthitā gaurī prabhāte karadarśanam //

कर के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्यभाग में सरस्वती तथा मूलभाग में गौरी निवास करती हैं।, इसलिए प्रातः कर-दर्शन करना चाहिए।

Lakshmi resides at the tips of the fingers, Saraswati in the middle of the hand (palm) and Gauri at the roots of the palm (near the wrists). Thus the hand should be seen in the morning.

समुद्रवसने देवि ! पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।2।।

samudravasane devi! parvatastanamaṇḍite /
viṣṇupatni namastubhyaṃ pādasparśaṃ kṣamasva me //

समुद्ररूपी वस्त्रों को धारण करने वाली, पर्वत रूपी स्तन वाली, भगवान् विष्णु की पत्नी, हे वसुधा देवी, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मेरे पादस्पर्श को क्षमा करो।

O Devi (Earth), wife of Lord Vishnu, whose clothes are the ocean, whose breasts are the mountains, I salute you and beg your forgiveness for placing my feet on you.

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा।
पञ्च *कन्याः स्मरेन्नित्यं महापातक-नाशनम्।।3।।

ahalyā draupadī sītā tārā mandodarī tathā /
pañca kanyāḥ samarennityaṃ mahāpātakanāśanam //

अहल्या, द्रौपदी, सीता, तारा और मन्दोदरी इन पाँच कन्यायों का नित्य स्मरण करने से महापातक का नाश हो जाता है।

Remembering regularly the Pancha Kanya - Ahalya, Draupadi, Sita, Tara and Mandodari - redeems one from sin.

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः।।4।।

puṇyaśloko nalo rājā puṇyaśloko yudhiṣṭhiraḥ /
puṇyaślokā ca vaidehī puṇyaśloko janārdanaḥ //

महाराज नल, युधिष्ठिर, जनकनन्दिनी सीता एवं भगवान् जनार्दन का गुणानुवाद करने से महान् पुण्य प्राप्त होता है।

Praising king Nala, Yudhisthira, Vaidehi and Janardana leads to merit.

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्याः नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम्।।5।।

karkotakasya nāgasya damayantyāḥ nalasya ca /
ṛtuparṇasya rājarṣeḥ kīrtanaṃ kalināśanam //

कर्कोटकनाग, नल, दमयन्ती तथा राजर्षि ऋतुपर्ण के नाम का कीर्तन करने से कलि का प्रभाव नष्ट होता है।

---

* यहाँ 'कन्या' शब्द स्त्री (सामान्य) अर्थ में प्रयुक्त है।

In this context, the word 'Kaṇyā' is used in the sence of women in genral.

Reciting the names of the serpent Karkotaka, Damayanti, Nala and the great seer Rituparna leads to the destruction of Kali.

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।6।।

aśvatthāmā balirvyāso hanūmāṃśca vibhīṣaṇaḥ /
kṛpaḥ paraśurāmaśca saptaite cirajīvinaḥ //

अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनूमान्, विभीषण, कृप और परशुराम ये सात महापुरुष अमर हैं।

Ashvathama, Bali, Vyasa, Hanuman, Vibhishana Kripa and Parashurama – these seven are immortal.

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी
भानुश्शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रश्शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।7।।

brahmā murāristripurāntakārī
bhānuśśaśī bhūmisuto budhaśca /

guruśca śukraśśanirāhuketavaḥ
kurvantu sarve mama suprabhātam //

ब्रह्मा, मुरारि, त्रिपुरासुर का विनाश करने वाले शिव, सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये सभी मेरा प्रातःकाल शुभ बनाएँ।

Brahma, Murari, Shiva, Sun, Moon, Mangal (Mars), Budha (Mercury), Guru (Jupiter), Shukra (Venus), Shani (Saturn), Rahu and Ketu, may all these make an auspicious morning for me!

भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च
मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनोऽथ दक्षः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।8।।

bhṛgurvasiṣṭhaḥ kraturaṅgirāśca
manuḥ pulastyaḥ pulahaśca gautamaḥ I

raibhyo marīciścyavano'tha dakṣaḥ
kurvantu sarve mama suprabhātam II

भृगु, वसिष्ठ, क्रतु, अङ्गिरा, मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीचि, च्यवन और दक्ष सभी मेरा प्रातःकाल शुभ बनायें।

Bhrigu, Vasishtha, Kratu, Angira, Manu, Pulastya, Pulaha, Gautama, Raibhya, Marichi, Chyavana and Daksha - may all these make an auspicious morning for me.

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः
सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च।
सप्त स्वरास्सप्त रसातलानि
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।9।।

sanatkumāraḥ sanakaḥ sanandanaḥ
sanātano'pyāsuripiṅgalau ca I

sapta svarāssapta rasātalāni
kurvantu sarve mama suprabhātam II

सनत्कुमार, सनन्दन, सनातन, आसुरि, पिंगल, सप्तस्वर और सप्त रसातल सभी मेरा प्रातःकाल शुभ बनाएँ।

Sanatkumara, Sanaka, Sanandana, Sanatana, Seven Swaras, Asuri, Pingala and seven netherworlds - may all these make an auspicious morning for me.

सप्तार्णवास्सप्त कुलाचलाश्च
सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिलोकाः भुवनानि सप्त
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।10।।

saptārṇavāssapta kulācalāśca
saptarṣayo dvīpavanāni sapta I

bhūrādilokāḥ bhuvanāni sapta
kurvantu sarve mama suprabhātam II

सातों समुद्र, सातों कुलपर्वत, सप्त ऋषिगण, सातों द्वीपवन और सातों भुवन, सभी मेरा प्रातःकाल शुभ बनाएँ।

The seven oceans, the seven lordly mountains, the seven seers, the seven island forests and the seven upper worlds including the earth - may these make an auspicious morning for me.

पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथाऽऽपः
स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभस्सशब्दं महता सहैव
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।।11।।

pṛthvī sagandhā sarasāstathā'paḥ
sparśī ca vāyurjvalitaṃ ca tejaḥ I

nabhassaśabdaṃ mahatā sahaiva
kurvantu sarve mama suprabhātam II

गन्धयुक्त पृथ्वी, सुस्वादु जल, स्पर्शपूर्ण वायु, तेजस्वी अग्नि, और शब्द युक्त आकाश-ये सभी महत् तत्त्व के साथ मेरा प्रातःकाल शुभ बनाएँ।

Fragrant Earth, tasty Water, Air with its beautiful touch, lustrous Fire and the Sky with sounds along with 'mahat' - may these make an auspicious morning for me.

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।12।।

gururbrahmā gururviṣṇuḥ gururdevo maheśvaraḥ /
guruḥ sākṣātparam brahma tasmai śrīgurave namaḥ //

गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु महेश्वर है, गुरु ही साक्षात् परम ब्रह्म है, ऐसे पूज्य गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ।

The preceptor is Brahma, he is Vishnu and Maheshwara as well, he is also the supreme Brahman. To him, I bow down.

अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।13।।

ajñānatimirāndhasya jñānāñjanaśalākayā /
cakṣurunmīlitaṃ yena tasmai śrīgurave namaḥ //

मैं, नेत्र के अज्ञान रूपी तिमिरान्ध को ज्ञान रूपी अञ्जन-शलाका से खोलने वाले पूज्य गुरु को नमस्कार करता हूँ।

I bow down to the preceptor who has opened my eyes which were blind due to the cataract of ignorance through the rod of collyrium in the form of knowledge.

स्नानारम्भसमये पठनीयाः श्लोकाः

Verses to be recited before taking a bath

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।1।।

gaṅge ca yamune caiva godāvari sarasvati /
narmade sindhu kāveri jale'smin sannidhiṃ kuru //

हे गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी, आप सभी इस जल में उपस्थित हों।

O Ganga, Yamuna, Godavari, Saraswati, Narmada, Sindhu and Kaveri, please be present in this water, all of you !

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतादपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।2।।

gaṅgā gaṅgeti yo brūyād yojanānāṃ śatādapi /
mucyate sarvapāpebhyo viṣṇulokaṃ sa gacchati //

'गङ्गा-गङ्गा' इस प्रकार जो व्यक्ति सैकड़ों योजन दूर से भी कहता है, वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है और अन्त में वैकुण्ठ धाम को जाता है।

The one who ṣays 'Ganga-Ganga' even from a distance of hundred of miles is redeemed of all his sins goes to heaven.

स्नानान्ते साष्टाङ्गं सूर्यनमस्कारः

Full prostration and prayer to the Sun after bath

मित्राय नमः, रवये नमः।
सूर्याय नमः, भानवे नमः।
खगाय नमः, पूष्णे नमः।
हिरण्यगर्भाय नमः, मरीचये नमः।
आदित्याय नमः, सवित्रे नमः।
अर्काय नमः, भास्कराय नमः।
श्रीछायासमज्ञासमेत-श्रीसूर्यनारायणस्वामिने नमः।।

mitrāya namaḥ, ravaye namaḥ /
sūryāya namaḥ, bhānave namaḥ /
khagāya namaḥ pūṣṇe namaḥ /
hiraṇyagarbhāya namaḥ, marīcaye namaḥ /
ādityāya namaḥ, savitre namaḥ /
arkāya namaḥ, bhaskarāya namaḥ /
śrīchāyāsamajñāsameta-śrīsūryanārāyaṇasvāmine namaḥ //

मैं छाया एवं समज्ञा सहित श्री सूर्यनारायण स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(ये बारह सूर्य हैं, इन सभी का अलग-अलग नाम लेते हुए नमस्कार करना चाहिए।)

My salutations to the Sun god and Chāyā and Samajñā.

(These are the Twelve Suns, We should pray to all of them invoking their respective names.)

भोजनकाले पठनीयाः श्लोकाः

Verses to be recited before meals

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्य-सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।।1।।

annapūrṇe sadāpūrṇe śaṅkaraprāṇavallabhe /
jñānavairāgya-siddhyarthaṃ bhikṣāṃ dehi ca pārvati //

हे भगवान् शिव को प्राण से भी अधिक प्रिय माँ पार्वती! तुम ही सर्वदा परिपूर्ण रहने वाली अन्नपूर्णा हो, मुझे ज्ञान और वैराग्य की सिद्धि के लिए भिक्षा प्रदान करो।

O Parvati! who is Annapurna and dearer to Lord Shiva than his life, grant me knowledge and freedom from all worldly attachment.

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्।।2।।

ahaṃ vaiśvānaro bhūtvā prāṇināṃ dehamāśritaḥ /
prāṇāpānasamāyuktaḥ pacāmyannaṃ caturvidham //

मैं ही विश्व के कल्याण हेतु अग्नि होकर, प्राण और अपान वायु के रूप में प्राणियों के शरीर में स्थित होकर चतुर्विध अन्नों का पाचन करता हूँ।

I am the fire of digestion in every living body, and I am the air of life, outgoing and incoming, by which I digest the four kinds of foodstuffs.

यात्रारम्भ-काले पठनीयाः श्लोकाः

Verses to be recited before journey

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।1।।

sumukhaścaikadantaśca kapilo gajakarṇakaḥ /
lambodaraśca vikaṭo vighnanāśo vināyakaḥ //

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।2।।

dhūmraketurgaṇādhyakṣo bhālacandro gajānanaḥ /
dvādaśaitāni nāmāni yaḥ paṭhecchṛṇuyādapi //

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।3।।

vidyārambhe vivāhe ca praveśe nirgame tathā /
saṅgrāme saṅkaṭe caiva vighnastasya na jāyate //

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाश, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन ये बारह नाम जो व्यक्ति विद्यारम्भ, विवाह, प्रवेश, निर्गम (यात्रा) तथा संग्राम में या किसी अन्य प्रकार के संकट आने पर पढ़ता या सुनता है, उसका विघ्न समाप्त हो जाता है।

One who recites or hears the twelve names - Sumukha, Ekadanta, Kapila, Gajakarnaka, Lambodara, Vikata, Vighnanasha, Vinayaka, Dhumraketu, Ganadhyksha, Bhalachandra and Gajanana - never faces obstacles in the beginning of studies, marriage ceremony, journies and in the battle field.

वनमाली गदी शार्ङ्गी शङ्खी चक्री च नन्दकी।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु।।4।।

vanamālī gadī śārṅgī śaṅkhī cakrī ca nandakī /
śrīmān nārāyaṇo viṣṇurvāsudevo'bhirakṣatu //

वनमाला, गदा, धनुष, शंख, चक्र और तलवार (नन्दक) धारण करने वाले श्रीमान्, सकल जगत् के स्वामी, वसुदेव के पुत्र, भगवान् विष्णु चारों तरफ से मेरी रक्षा करें।

O Lord Vishnu! known as Vanamali, Gadi, Sharngi, Shankhi, Chakri, Nandaki, Narayana, Shriman and Vasudeva, protect me on all sides.

शयनात् प्राक् पठनीयाः श्लोकाः

Verses to be recited before sleep

अगस्तिर्माधवश्चैव मुचुकुन्दो महाबलः।
कपिलो मुनिरास्तीकः पञ्चैते सुखशायिनः।।1।।

agastirmādhavaścaiva mucukundo mahābalaḥ /
kapilo munirāstīkaḥ pañcaite sukhaśāyinaḥ //

अगस्ति, माधव, महाबली मुचुकुन्द, कपिल एवम् आस्तीक मुनि ये पाँच महापुरुष सुखकारी शयन देने वाले हैं।

Agasti, Madhava, mighty Muchukunda, Kapila and Seer Astika- These five are famous for granting sound sleep.

अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं सोमं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं कृष्णं जपेत् दुःस्वप्नशान्तये।।2।।

acyutaṃ keśavaṃ viṣṇuṃ hariṃ somaṃ janārdanam /
haṃsaṃ nārāyaṇaṃ kṛṣṇaṃ japet duḥsvapnaśāntaye //

अच्युत, केशव, विष्णु, हरि, सोम, जनार्दन, हंस, नारायण और कृष्ण के जपने से दुःस्वप्न नहीं होते हैं।

One who mutters Achyuta, Keshava, Vishnu, Hari, Soma, Janardana, Hansa, Narayana and Krishna, never gets bad dreams.

ब्रह्माणं शङ्करं विष्णुं यमं रामं दनुं बलिम्।
सप्तैतान् यः स्मरेन्नित्यं दुःस्वप्नस्तस्य नश्यति।।3।।

brahmāṇaṃ śaṅkaraṃ viṣṇuṃ yamaṃ rāmaṃ danuṃ balim /
saptaitān yaḥ smarennityaṃ duḥsvapnastasya naśyati //

ब्रह्मा, शङ्कर, विष्णु, यम, राम, दनु और बलि – इन सातों के नाम का नित्य स्मरण करने से दुःस्वप्न नष्ट होता है।

One who regularly remembers Brahma, Shankara, Vishnu, Yama, Rama, Danu and Bali, never gets bad dreams.

नित्य - पूजापद्धतिः
Nitya - pūjāpaddhatiḥ

(The method of daily worship)

ईश्वर की आराधना न केवल अपने लिए, अपितु लोक-कल्याण के लिये भी आवश्यक है। सार्वजनिक मन्दिरों में भगवान् की पूजा, वहाँ नियुक्त पुजारी के द्वारा सम्पन्न की जाती है। घरों में विशिष्ट पूजा कर्म-काण्डी पण्डितों के द्वारा सम्पन्न की जाती है, किन्तु दैनिक पूजा हर व्यक्ति को स्वयं पूजा-स्थल पर बैठ कर व्यक्तिगत रूप से करनी चाहिए।

The worship of God is necessary not only for one's own well being, but for the well-being of all. The priests of temples conduct the ceremonies of worship. In homes special 'pujas' are conducted by priests, but daily worship should be done by every individual himself.

हमारे समाज में निराकार निर्गुण ब्रह्म को भी साकार सगुण रूप देकर पूजने की प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से ही प्रचलित है। इसका कारण यही है कि सगुण साकार की पूजा सुगम है। विभिन्न देवताओं की भिन्न-भिन्न मूर्तियाँ मन्दिरों में प्रतिष्ठित एवं निरन्तर पूजित हो रही हैं। इस सगुण उपासना से सुख की प्राप्ति होती है।

In our society even formless God is given a form and worshipped, and this is a very old practice. The reason for this is that it is easier to worship a God with a definite form. Different Gods have been visualized differently and

a variety of images have been established and are worshipped regularly in temples. Worship through images gives great benefits.

उपासना भी दो प्रकार की होती है। एक बाह्य पूजा और दूसरी आन्तरिक या मानसिक पूजा। बाह्य पूजा के लिये पूजा सामग्री की जरूरत होती है। मानसिक पूजा थोड़ी कठिन होती है। इसलिये गृहस्थों के लिये बाह्य पूजा का विधान है। बाह्य पूजा में आराध्य के रूप में मूर्त प्रतिमा या चित्र को प्रतिष्ठित किया जाता है। पूजा के प्रारम्भ करने से पहले जलपात्र में तीर्थ-जल, पुष्प, चन्दन, अक्षत, रोली, यथासंभव दूध, नैवेद्य के लिये गुड़, सामयिक फल और महा नैवेद्य के रूप में अन्न आदि पूजन-सामग्री का प्रबन्ध कर लेना चाहिए।

Worship is of two kinds. One is external and the other is internal worship. External worship involves tangible materials. internal worship is more difficult, and this is the reason for which householders engage in external worship. External worship involves the worship of an image or a picture of God. Before worship begins, water from a holy place, flowers, sandalwood, rice, red powder, milk (if possible), jaggery for offering, fruit that is in season, and food as offereing to the Gods all must be put together.

नियमित रूप से पूजन के पूर्व पूर्ण स्नान सर्वोत्तम है किन्तु विवशतावश कण्ठ तक स्नान काफी है। स्नान के उपरान्त अपनी परम्परा के अनुसार भस्म, चन्दन, रोली का तिलक करके उपर्युक्त पूजन-सामग्री के साथ पूजन-स्थल पर पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके पूजा के लिए बैठना चाहिए।

It is advisable to have a full bath before worship, but if this is difficult, one is permitted to wash upto one's neck.

After a bath, according to one's tradition, having put a mark of ashes, sandalwood paste or red powder (Roli) on the forehead, and with the appropriate worship paraphernalia, the worshipper should proceed to the spot of worship, and sit with his face towards the east or north.

आराध्य मूर्त्ति के सामने अपने आसन पर बैठने के बाद आचमन करना चाहिए। '**ॐ केशवाय स्वाहा, ॐ नारायणाय स्वाहा, ॐ माधवाय स्वाहा**', कहकर तीन बार हथेली में थोड़ा पानी लेकर पीएँ। यह आचमन कहलाता है। इसके बाद **ॐ गोविन्दाय नमः** कहकर हाथ धोना चाहिए।

Sitting in front of the image on his seat, the worshipper should sip holy water after uttering the following words thrice: **om Keśavāya svāhā, om Nārāyaṇāya svāhā, om Mādhavāya svāhā'**. This is called Aachamana. Then saying the following **'Om Govindāya Namaḥ'** he should wash his hands.

पूजक को चाहिए कि वह सुखपूर्वक आसन लगाकर बैठे, फिर दाहिनी हथेली पर थोड़ा जल लेकर संकल्प करे। **ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्** ....(मेरे समस्त पापों के विनाश द्वारा श्री परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए ....) कहने के बाद आराध्य देव का नाम लेकर '**आराधनां करिष्ये**' (पूजा करता हूँ) कहे।

The worshipper should sit comfortably. Then he should take a little water in his right palm and resolve to complete his worship. **mamopātta – samasta – durita – kṣayadvārā Srīparameśvara – prītyartham** (By destroying my sins and to please my god...'). After uttering this, he should then add the name of deity and say **'ārādhanāṃ kariṣye'**. (I will worship.)

इसके बाद हाथ धोकर, तीर्थ-जल में फूल भिगो कर थोड़ा जल, पूजन सामग्री, आराध्य देवता तथा अपने ऊपर छिड़क ले। उसके बाद हाथ में

अक्षत, और फूल लेकर '***षोडशोपचार-पूजां करिष्ये**' (षोडश अङ्गों वाली पूजा करता हूँ) कहकर पूजा प्रारम्भ करे।

After this, he should wash his hands; and should wet the flowers in holy water; then sprinkle the water on the items used for worship, on the deity and on himself. After this, he should take into his hands rice and flowres and say '**ṣodaśopacāra - pūjāṃ kariṣye**' (I shall perform the worship with sixteen parts), and begin worship.

---

*पूजन के दो प्रकार प्रचलित हैं–

Two methods of worship are popular –

1. **पञ्चोपचार-पूजनम्** (Pañcopacāra-pūjanam)

गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यमिति पञ्चकम्।।

gandhapuṣpe dhūpadīpau naivedyamiti pañcakam **II**

अर्थात् गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, तथा नैवेद्य के द्वारा किया जाने वाला पूजन **पञ्चोपचार-पूजन** कहलाता है।

Paṅcopacāra-pūjanam is performed with fragrance, flowers, incense, lamps and offerings.

2. **षोडशोपचार-पूजनम्** (Ṣoḍaśopacāra-pūjanam)

आवाहनासने पाद्यम् अर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीतं च, गन्धमाल्यान्यनुक्रमात्।।

धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा।
पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश।।

āvāhanāsane pādyaṃ arghyamācamanīyakam /
snānam vastropavitaṃ ca gandhamālyānyanukramāt //
dhūpaṃ dīpaṃ ca naivedyaṃ tāmbūlaṃ ca pradakṣiṇā /
puṣpañjaliriti proktā upacārāstu ṣodaśa //

अर्थात् आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, माल्य, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा और पुष्पाञ्जलि के द्वारा किया गया पूजन **षोडशोपचार-पूजन** कहलाता है।

Ṣodaśopacāra-pūjanam is performed with invoking, offering seat, water to wash feet, water to wash hands, water to drink, water for bath, clothes, sacred thread, fragrance, garlands, incense, lamps, offering food, betel leaf, circumambulation and flowers.

षोडशोपचारपूजनम्
Ṣoḍaśopacārapūjanam

आगच्छ देव देवेश! मर्त्यलोकहितेच्छया।
पूजयामि विधानेन प्रसन्नस्सम्मुखो भव।।

āgaccha deva deveśa martyalokahitecchayā /
pūjayāmi vidhānena prasannassammukho bhava //

हे देवेश! मैं मर्त्यलोक की हित-कामना से विधानपूर्वक आपकी पूजा करता हूँ, आप प्रसन्न हों और सम्मुख उपस्थित हों।

O Lord of the gods ! I pray to you for the welfare of the earth. May you be pleased and present before me !

1. **आह्वयामि** (आवाहन करता हूँ) कह कर आराध्य देवता का आवाहन करें।

Saying this **'āhvayāmi'** (I call.). invoke the deity.

पादासनं कुरु प्राज्ञ ! निर्मलं स्वर्ण-निर्मितम्।
भूषितं विविधै रत्नैः कुरु त्वं पादुकासनम्।।

pādāsanaṃ kuru prājña! nirmalaṃ svarṇa-nirmitam /
bhūṣitaṃ vividhai ratnaiḥ kuru tvaṃ pādukāsanam //

हे सर्वज्ञ ! स्वर्ण से निर्मित, विविध रत्नों से भूषित पादुकासन पर अपने चरण रखिए।

O omniscient ! place your feet on golden, bejewelled sandals.

2. **आसनं समर्पयामि** कहकर आराध्य देवता पर अक्षत, रोली डालें।

Saying the following : **'āsanaṃ samarpayāmi'** (I offer the seat.) sprinkle rice and red powder on the deity.

गङ्गादिभ्यः सुतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

gaṅgādibhyaḥ sutīrthebhyo mayā prārthanayāhṛtam /
toyametatsukhasparśaṃ pādyārthaṃ pratigṛhyatām //

हे ईश! गङ्गा आदि तीर्थों से मेरे द्वारा प्रार्थना-पूर्वक लाया हुआ, सुखस्पर्श वाला जल, आप पैर धोने के लिये ग्रहण करें।

O Lord, accept the water that gives pleasure, that has been brought from the Ganga and other holy places for washing your feet.

3. **पाद्यं समर्पयामि** कहकर पाद-प्रक्षालन के लिए थोड़ा जल छोड़ें-

Saying the follwing: **'pādyaṃ samarpayami'** (I offer the padyam) sprinkle a little, water for the washing of the deity's feet.

गन्धोदकेन पुष्पेण चन्दनेन सुगन्धिना।
अर्घ्यं गृहाण देवेश भक्तिं मे सुस्थिरां कुरु।।

gandhodakena puṣpeṇa candanena sugandhinā /
arghyaṃ gṛhāṇa deveśa bhaktiṃ me susthirāṃ kuru //

हे प्रभु! सुगन्धित जल, पुष्प एवं सुगन्धित चन्दन से युक्त अर्घ्य को ग्रहण करें और मुझे स्थिर भक्ति प्रदान करें।

O Lord of Gods.! Please accept this respectable oblation of scented water, flowers, paste of sandal and fragrant incense; and grant me unwavering devotion.

4. **अर्घ्यं समर्पयामि** (अर्घ्य प्रदान करता हूँ) कह कर थोड़ा जल छोड़ें।

Saying the following: **'arghyaṃ samarpayāmi'**, (I offer the arghyam.) sprinkle a little water.

कर्पूरोशीरसुरभिशीतलं विमलं जलम्।
गङ्गायास्तु समानीतं गृहाणाचमनीयकम्।।

karpūrośīrasurabhiśītalaṃ vimalaṃ jalam /
gaṅgāyāstu samānītaṃ gṛhāṇācamanīyakam //

हे प्रभु! मैं कर्पूर से सुरभित और उशीर से शीतल गङ्गा का स्वच्छ जल ले आया हूँ, इसे आप आचमन के लिए स्वीकार करें।

O Lord, I have brought pure water of the Ganga that is as fragrant with camphor and as cool as scented grass. Please accept this for drinking.

5. **आचमनीयं समर्पयामि** (आचमन हेतु जल प्रस्तुत करता हूँ) कह कर थोड़ा जल छोड़ें।

Saying the following : **'ācamanīyaṃ samarpayāmi'** (I offer the achamaniyam) sprinkle a little water.

मन्दाकिन्यास्समानीतं हेमाम्भोरुहवासितम्।
स्नानाय ते मया भक्त्या नीरं स्वीक्रियतां विभो।।

mandākinyāssamānītaṃ hemāmbhoruhavāsitam /
snānāya te mayā bhaktyā nīraṃ svīkriyatāṃ vibho //

हे सर्वव्यापक परमात्मन्! मैं स्वर्णकमलों से सुवासित गंगा का जल आप के स्नान के लिये भक्तिपूर्वक समर्पित करता हूँ, आप कृपया इसे स्वीकार करें।

O Lord, please accept the water I have offered for your bath, which is fragrant due to golden lotuses of the Ganga.

6. स्नानार्थं जलं समर्पयामि (स्नान हेतु जल समर्पित करता हूँ।) कह कर थोड़ा जल छोड़ें। इस समय अपनी शक्ति के अनुसार दूध, मधु, पञ्च गव्य, फल रस आदि से भी भगवान् का स्नान कराया जा सकता है। इसे पञ्चामृत कहते हैं।

Saying the following : **'snanārthaṃ jalaṃ samarpayāmi'** (I offer the water for the both) sprinkle a little water. At this time, the deity can be anointed with milk, yogurt, honey, five cow products and fruit juice. This is called Panchamrita.

वस्त्रं सूक्ष्मं दुकूलं च देवानामपि दुर्लभम्।
गृहाण त्वं प्रभो देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

vastraṃ sūkṣmaṃ dukūlaṃ ca devānāmapi durlabham /
gṛhāṇa tvaṃ prabho deva prasanno bhava sarvadā //

हे देव! यह अति-उत्तम सूक्ष्म वस्त्र एवं दुकूल आप ग्रहण करें और हमेशा प्रसन्न रहें।

O Lord, please accepet these superior clothes and angavastra and remain gratified.

7. वस्त्रं समर्पयामि (वस्त्र देता हूँ) कह कर यदि वस्त्र हों तो वस्त्र, अन्यथा अक्षत डालें।

Saying the following : **'vastraṃ samarpayāmi'** (I offer clothes.) give clothes if possible, or otherwise, rice.

यज्ञोपवीतं सहजं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
आयुष्यं देव वर्चस्वम् उपनीतं गृहाण भो।।

yajñopavītaṃ sahajaṃ brahmaṇā nirmitaṃ purā /
āyuṣyaṃ deva varcasvaṃ upavītaṃ gṛhāṇa bho //

हे देव! पहले ब्रह्मा द्वारा निर्मित आयु और बल को बढ़ाने वाला यह यज्ञोपवीत आप को समर्पित है, कृपया आप इसे ग्रहण करें।

O Lord, I offer this sacred thread created by Brahma in the beginnig which increases life and energy. Please accept it.

8. **यज्ञोपवीतं समर्पयामि** (यज्ञोपवीत प्रदान करता हूँ) कह कर यज्ञोपवीत पहनायें अन्यथा अक्षत डालें।

Saying the following: '**yajñopavītaṃ samarpayāmi**' (I offer the sacred thread.) put on the sacred thread, or else sprinkle rice.

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ मार्दवं प्रतिगृह्यताम्।।

śrīkhaṇḍaṃ candanaṃ divyaṃ gandhāḍhyaṃ sumanoharam I
vilepanaṃ suraśreṣṭha mārdavaṃ pratigṛhyatām II

हे परमेश्वर! मैं मनोहर, अत्यन्त सुगंधित दिव्य एवं मृदु चन्दन का लेप आप को कर रहा हूँ। कृपया इसे स्वीकार करें।

O Lord, I am applying soft, fragrant and divine sandal-wood paste, please accept it.

9. **गन्धं समर्पयामि** (गन्ध समर्पित करता हूँ) कहकर चन्दन का तिलक आराध्य के ललाट पर करें।

Saying the following : '**gandhaṃ samarpayāmi**' (I offer fragra-nce.) put a sandalwood-paste mark on the forhead of the deity.

माल्यादीनि सुगन्धीनि नानावर्णानि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि, पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

mālyādīni sugandhīni nānāvarṇāni vai prabho I
mayā-hṛtāni puṣpāṇi pujārthaṃ pratigṛhyatām II

हे प्रभु ! मेरे द्वारा पूजा के लिए लाए गए विविध वर्णों के सुगन्धित पुष्पों एवं मालाओं को ग्रहण करें।

O Lord, please accept the garlands and many coloured fragrant flowers, I have brought for your worship.

10. **माल्यं समर्पयामि** (माल्यादि प्रदान करता हूँ) कहकर आराध्य को माला पहनाएँ तथा पुष्पों को अर्पित करें।

Saying the following: **'mālyaṃ samarpayāmi'** (I offer garland.) garland the deity and offer flowers.

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

vanaspatirasodbhūtaḥ gandhāḍhyaḥ sumanoharaḥ /
āghreyaḥ sarvadevānāṃ dhūpo,yaṃ partigṛhyatām //

हे प्रभु! वनस्पतियों के रस से निर्मित अत्यन्त सुगन्धित मनोहारी यह धूप, जो कि सभी देवों के द्वारा सूँघने योग्य है, आप ग्रहण करें।

O Lord, please accept the incense made of the essence of the trees which is fragrant and pleasant and which is worth smelling by gods.

11. **धूपं समर्पयामि** (धूप देता हूँ) कह कर धूप दें

Saying the following **'dhupaṃ samarpayami'** (I offer incense.) offer the incense.

साज्यं त्रिवर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

sājyaṃ trivartisaṃyuktaṃ vahninā yojitaṃ mayā /
dīpaṃ gṛhāṇa deveśa trailokyatimirāpaham //

हे देवेश! त्रिलोक के अन्धकार का हरण करने के लिए घृत से पूर्ण, तीन बत्तियों से युक्त तथा अग्नि से प्रज्वलित किया गया यह दीप आप ग्रहण करें।

O Lord, please accept this lamp which contains ghee, which illumines the three worlds, which has three wicks and which is ablaze with fire.

12. दीपं दर्शयामि (दीप दिखाता हूँ) कह कर दीप दिखायें।

Saying the following: 'dīpaṃ darśayāmi' (I show deepam.) offer the lamp.

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मय्यचलां कुरु।
मयेप्सितं वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।

naivedyaṃ grihyatāṃ deva bhaktiṃ mayyacalāṃ kuru I
mayepsitaṃ varaṃ dehi paratra ca parāṃ gatim II

हे देव! नैवद्य ग्रहण करें, मुझे स्थिर भक्ति प्रदान करें, वांछित वर दें और परलोक में मोक्ष प्रदान करें।

O Lord, accept the offerings, grant me unwavering devotion, whatever I have asked for, and liberation in the other world.

13. नैवेद्यं समर्पयामि (नैवेद्य प्रदान करता हूँ) कहकर आराध्य के सामने नैवेद्य को प्रस्तुत करें।

Saying the following: 'naivedyaṃ samarpayāmi' (I put offerings.) present the offerings to the deity.

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ल्या दलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्ण-संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

pūgīphalaṃ mahaddivyaṃ nāgavallyā dalairyutam |
karpūracūrṇasaṃyuktaṃ tāmbūlaṃ pratigṛhyatām ||

हे देव! दिव्य सुपारी, पान के पत्ते में कपूर चूर्ण के साथ प्रदान करता हूँ, कृपया ग्रहण करें।

O Lord, I present divine betel nut with the betel leaves and camphor powder together. Please accept this.

14. **ताम्बूलं समर्पयामि** (ताम्बूल प्रदान करता हूँ) कहकर पान-सुपारी का अर्पण करें।

Saying the following: '**tāmbūlaṃ samarpayāmi**', (I offer the betel leaf.) offer the betel nuts and betel leaves.

'सक्षुद्रं सर्वलोकानां तिमिरस्य निवारणम्।
आर्तिक्यं कल्पितं भक्त्या गृहाण त्वं सुरेश्वर।।'

sakṣudraṃ sarvalokānāṃ timirasya nivāraṇam |
ārtikyaṃ kalpitaṃ bhaktyā gṛhāṇa tvaṃ sureśvara ||

हे देवाधिदेव सारे जगत् के सम्पूर्ण अन्धकार के विनाश के लिए मैंने भक्ति पूर्वक इस आरती को तैयार किया है, कृपया आप इसे ग्रहण करें। ऐसा कहकर कपूर की आरती करे।

O Lord, I have prepared with devotion this 'aarti' for the destruction of the darkness of all the worlds. Please accept it. Saying this do 'aarti' with camphor.

15. पुष्पाञ्जलिः (Offering of flowers)

फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात्फल-प्रदानेन सफलाश्च मनोरथाः।।

phalena phalitaṃ sarvaṃ trailokyaṃ sacarācaram /
tasmātphalapradānena saphalaśca manorathāḥ //

सम्पूर्ण चर-अचर त्रिलोक, फल से ही फलित है। फल प्रदान करने से मनोरथ सिद्ध होता है। ऐसा कहकर पुष्प चढ़ाये।

The entire three world movable or immovable - are the result of offerings; this leads to the fulfilment of what one desires. Saying this, offer flowers.

16. प्रदक्षिणा (circumambulation)

निम्नलिखित मन्त्रोच्चारपूर्वक प्रदक्षिणा करे।

Saying following mantra, perform the circumambulation.

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे।।

yāni kāni ca pāpāni brahmahatyāsamāni ca /
tāni sarvāṇi naśyanti pradakṣiṇapade pade //

हर प्रकार के पाप, यहाँ तक कि ब्रह्म हत्या के समान पाप भी परिक्रमा करने से नष्ट हो जाते हैं। (अतः मेरी प्रदक्षिणा स्वीकार करे।)

All sins can be destroyed through performing circumambulation. (Please accept my circumambulation).

यह कहते हुए देवता की तीन बार परिक्रमा करें और मूर्त्ति पर पुष्प चढ़ाये।

Saying this, circumambulate the deity thrice, and offer flowers and rice to the image.

इसके बाद अपनी सुविधा के अनुसार अष्टोत्तरशत-नामावली या सहस्र नामावली से भगवान् की पूजा करे। नाम लेते समय हर बार एक-एक

पुष्प भगवान् पर चढ़ाये। समय के अभाव में आराध्यदेव का आठ बार नाम लेकर पुष्प चढ़ाए जा सकते हैं।

After this, according to convenience, worship the God with 108 or 1000 names. With each name, offer a flower. If there is a shortage of time offer flowers eight times while reciting the names of the deity.

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

mantrahīnaṃ kriyāhīnaṃ bhaktihīnaṃ sureśvara /
yatpūjitaṃ mayā deva ; paripūrṇaṃ tadastu me //

हे परमेश्वर ! मन्त्र से रहित, क्रियाविधान के बिना, भक्ति से हीन जो कुछ भी मैंने आपका पूजन किया, वह परिपूर्ण हो।

O Lord, please accept my worship , even though it is without appropriate mantras, method and devotion. May the worship of mine be complete.

अपराध-सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व पुरुषोत्तम।।

aparādha-sahasrāṇi kriyante'harniśaṃ mayā /
dāso' yamiti māṃ matvā kṣamasva puruṣottama //

हे पुरुषोत्तम! मेरे द्वारा दिन-रात अगणित अपराध होते रहते हैं, फिर भी मुझे दास समझ कर मेरे अपराधों को क्षमा करें।

O! Purushottama! I commit infinite sins day and night, but treat me as your servant, please forgive my sins.

यह कहते हुए देवता को नमस्कार करे। उसके बाद निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर पुष्प और अक्षत से ईश्वर की पूजा करे।

Saying this, salute the lord. After that read the following sentences and worship the deity with flowers and rice.

1. छत्रं धारयामि — छत्र धारण करता हूँ

   chatraṃ dhārayāmi — I hold an umbrella.

2. चामरं वीजयामि — चँवर डुलाता हूँ

   cāmaraṃ vījayāmi — I fan with a 'Chamara'.

3. नृत्यं नर्तयामि — नृत्य कराता हूँ

   nṛtyaṃ nartayāmi — I dance dances.

4. वाद्यं घोषयामि — वाद्य बजाता हूँ

   vādyaṃ ghoṣayāmi — I play instruments.

5. आन्दोलिकाम् आरोहयामि — झूले पर झूलाता हूँ

   āndolikāṃ ārohayāmi — I swing (you) on a swing.

6. समस्तभक्त्योपचार-राजोपचार-

   samastabhaktyopacāra-rājopacāra

   शक्त्योपचारपूजां समर्पयामि।

   śaktyopacārapūjāṃ samarpayāmi

   हर प्रकार की भक्ति, राजविधि एवं शक्ति से पूजा कर रहा हूँ।

   I worship with all kinds of devotee methods and power.

उसके बाद **'अनेन पूजनेन भगवान् .... प्रसन्नो भवतु** (इस पूजा से भगवान् .... प्रसन्न हों) कहकर फूल एवं जल भगवान् के सामने समर्पित करे। पूजा के अन्त में प्रारम्भ की तरह तीन बार आचमन करे।

Saying the following: **'anena pūjanena bhagavān ..... prasanno bhavatu'.**

offer flowers and water. At the end, sip water thrice, as at the beginning of the worship.

पारायण-श्लोकाः

Verses for daily reading

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।1।।

śuklāmbaradharaṃ viṣṇuṃ śaśivarṇaṃ caturbhujam /
prasannavadanaṃ dhyāyet sarvavighnopaśāntaye //

सभी प्रकार के विघ्नों की शान्ति के लिये श्वेत वस्त्र धारण करने वाले, चन्द्रमा के समान कान्ति वाले, चार भुजाधारी प्रसन्न मुखमण्डल वाले भगवान् विष्णु का ध्यान करना चाहिए।

One should meditate on Lord Vishnu who wears white clothes, is lustrous like the moon, has four arms, has a pleasant face and removes all obstacles.

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थल-कौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।।2।।

saśaṇkhacakraṃ sakirīṭakuṇḍalaṃ
sapītavastraṃ sarasīruhekṣaṇam /
sahāravakṣasthalakaustubhaśriyaṃ
namāmi viṣṇuṃ śirasā caturbhujam //

शङ्ख, चक्र, किरीट एवं कुण्डल को धारण करने वाले, पीताम्बर धारण करने वाले, कमल के समान नेत्र वाले, हार एवं कौस्तुभ की शोभा से युक्त वक्षःस्थल वाले, चतुर्भुजी भगवान् विष्णु को सिर झुका कर प्रणाम करता हूँ।

I bow down and offer reverential salutation on to Lord Vishnu who wears a conch shell, disc, crown and earrings; who wears yellow clothes; who has eyes like a lotus; whose chest is adorned by a garland and the Kaustubha gem; and who has four arms.

गजाननं भूतगणादिसेवितं
कपित्थजम्बूफल-चारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं
नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।3।।

gajānanaṃ bhūtagaṇādisevitaṃ
kapitthajambūphalacārubhakṣaṇam /
umāsutaṃ śokavināśakārakaṃ
namāmi vighneśvarapāda pankajam //

हाथी के मुखमण्डल वाले, प्राणियों के समूह से सेवित, कैथ-जामुन आदि फलों को चाव से खाने वाले, पार्वती के पुत्र, समस्त शोक का विनाश करने वाले भगवान् विघ्नेश्वर के चरणकमलों को प्रणाम करता हूँ।

I salute the lotus feet of Lord Ganesha (remover of obstacles) who has the face of an elephant, is served by all beings, eats fruits with relish, the son of Paravati and who dispels all grief.

वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।4।।

vakratuṇḍamahākāya sūryakoṭisamaprabha /
avighnaṃ kuru me deva! sarvakāryeṣu sarvadā //

वक्रतुण्ड (हाथी की सूँड) वाली महा काया को धारण करने वाले, करोड़ों सूर्यों के समान कान्ति वाले, हे गणेश देव! मेरे सारे कार्यों के विघ्नों को सदा के लिये दूर करो।

The Lord Ganesha who has an elephant's trunk and huge body, who is as lustrous as crores of the suns. O Lord! Please ward off all the obstacles of my all activites for ever.

मयूराधिरूढं महावाक्यगूढं
मनोहारि देहं महच्चित्तगेहम्।
महीदेवदेवं महादेवभावं
महादेवबालं भजे लोकपालम्।।5।।

mayūrādhiruḍhaṃ mahāvākyagūḍhaṃ
manohāri dehaṃ mahaccittageham /
mahidevadevaṃ mahādevabhāvaṃ
mahādevabālaṃ bhaje lokapālam //

मैं मयूर पर विराजमान महा-वाक्यों से भी अनिर्वचनीय, मनोहारी शरीर वाले, विद्वानों के चित्त में निवास करने वाले, राजाओं के स्वामी, महादेव स्वरूप, लोक की रक्षा करने वाले भगवान् शिव के पुत्र कार्तिकेय को भजता हूँ।

I pray to Lord Kartikeya; the son of God Shiva sitting on peacock, who is indescribable even by the mahāvākyās, who has a charming body and who lives in the minds of scholars, who is the lord of kings, who is like Shiva and who is the protector of the world.

अपस्मार-कुष्ठ-क्षयार्शःप्रमेह-
ज्वरोन्मादगुल्मादिरोगा महान्तः।
पिशाचाश्च सर्वे भवत्पत्रभूतिं
विलोक्य क्षणात् तारकारे द्रवन्ते।।6।।

apasmāra-kuṣṭha-kṣayārśaḥ-prameha-
jvaronmādagulmādirogā mahāntaḥ I
piśācāśca sarve bhavatpatrabūtiṃ
vilokya kṣaṇāt tārakāre dravante II

हे तारकारि! तुम्हारे पत्र के भस्म को देखकर अपस्मार, कुष्ठ, क्षय, अर्श, प्रमेह, ज्वर, उन्माद, गुल्म आदि रोग और बड़े-बड़े राक्षस भाग जाते हैं।

O destroyer of Taraka ! All types of diseases such as epilepsy, leprosy, piles, fever and madness and all demons run away when they see your sacred ash.

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं
निर्मलभासित-शोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं
तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।7।।

brahmamurārisurārcitaliṇgaṃ
nirmalabhāsitaśobitaliṅgam I
janmajaduḥkhavināśakaliṅgaṃ
tatpraṇamāmi sadāśivaliṅgam II

ब्रह्मा, मुरारि, (विष्णु) आदि देवों से पूजित, निर्मल कान्ति से शोभित, जन्म के दुःख के विनाशक, निरन्तर कल्याण करने वाले, शिवलिङ्ग को मैं प्रणाम करता हूँ।

I offer my reverantial salutations to the Shivalinga that is worshipped by Brahma and Murari (Vishnu), which is charming with pure lustre, destroys the affliction of birth, and always brings happiness.

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
शिव शिव करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।8।।

karacaraṇakṛtaṃ vākkāyajaṃ karmajaṃ vā
śravaṇanayanajaṃ vā mānasaṃ vā'parādham I
vihitamavihitaṃ vā sarvametatkṣamasva
śiva śiva karuṇābdhe śrīmahadeva śambho II

हे करुणा-सागर, महादेव! हाथ, पैर, वाणी, शरीर, आँख, कान अथवा मन से विहित या अविहित जो भी मेरे अपराध हैं, उन सब को आप क्षमा करें। (हे शिव शम्भू आपकी जय हो।)

O Mahadeva! who is a sea of compassion ! Please forgive all my sins, which are not committed or committed by hands, feet, voice, body, eyes, ears or mind. Praise be to you, O Shiva-Shambhu.

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।9।।

nāgendrahārāya trilocanāya
bhasmāṅgarāgāya maheśvarāya I
nityāya śuddhāya digambarāya
tasmai nakārāya namaḥ śivāya II

विशाल सर्प की माला धारण करने वाले, तीन नेत्रों वाले, भस्म का शरीर पर लेप करने वाले, सनातन, शुद्धस्वरूप वाले, दिगम्बर भगवान् शिव को नमस्कार है, जो 'नम: शिवाय' में 'न' वर्णस्वरूप हैं।

I bow to Lord Shiva who wears a garland of a large snake, has three eyes, adorns his body with sacred ash, is eternal, is pure, and who is clothed by the directions. He is like the 'na' of 'Namah Shivaya'.

मन्दाकिनीसलिल - चन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथ-महेश्वराय।
मन्दारमुख्यबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकाराय नम: शिवाय।।10।।

mandākinī-salilacandanacarcitāya
nandīśvarapramathanāthamaheśvarāya /
mandāra-mukhyabahupuṣpasupūjitāya
tasmai makārāya namaḥ śivāya //

गंगा के जल रूपी चन्दन से चर्चित शरीर वाले, नन्दी तथा प्रमथगणों के स्वामी, मन्दार आदि प्रमुख पुष्पों से पूजित, भगवान् शिव को नमस्कार है; जो 'नम: शिवाय' में 'म' वर्ण स्वरूप हैं।

I bow to Lord Shiva who is anointed with the water of the Ganga that is like sandalwood paste, is the lord of Nandi and the Pramathaganas, is worshipped by mandara and other nice flowers, and who is like the 'ma' in 'Namah Shivaya'.

शिवाय गौरीवदनारविन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।11।।

śivāya gaurīvadanāravinda-
sūryāya dakṣādhvaranāśakāya I
śrīnīlakaṇṭhāya vṛṣadhvajāya
tasmai śikārāya namaḥ śivāya II

हे कल्याण स्वरूप! पार्वती जी के मुखकमल को विकसित करने वाले सूर्य, दक्ष के यज्ञ के ध्वंसक, नीलकण्ठ, जिनकी ध्वजा में बैल का चिह्न है, जो 'नमःशिवाय' में 'शि' वर्ण स्वरूप हैं, उन शिव को नमस्कार है।

I bow to Lord Shiva who is auspicious, is the sun that blossoms the lotus like face of Goddess Parvati is the destroyer of Daksha's sacrifice, in whose banner bears the ensign of bull and who is like the 'shi' in 'Namah Shivaya'.

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमादि-
मुनीन्द्र-देवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानर-लोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।12।।

vasiṣṭhakumbhodbhavagautamādi-
munīndra-devārcitaśekharāya I
candrārkavaiśvānaralocanāya
tasmai vakārāya namaḥ śivāya II

वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों तथा देवों से जिनका मस्तक पूजित है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन 'नमःशिवाय' में 'व' वर्ण स्वरूप शिव को नमस्कार है।

I bow to Lord Shiva whose head is worshipped by great sages like Vasishtha, Agastya and Gautama, and by gods; whose eyes are the moon, the sun and the fire; and who is like the 'va' in 'Namah Shivaya'.

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।।13।।

yakṣasvarūpāya jaṭādharāya
pinākahastāya sanātanāya I
divyāya devāya digambarāya
tasmai 'yakārāya namaḥ śivāya II

यक्ष स्वरूप धारण करने वाले, जटाधारी, जिनके हाथ में 'पिनाक' नामक धनुष है, जो नित्य हैं, दिव्य हैं, दिगम्बर हैं, ऐसे उन 'नमःशिवाय' के 'य' वर्ण-स्वरूप शिव को नमस्कार करता हूँ।

I bow to Lord Shiva who takes the form of a Yaksha, who has matted hair on his head, who holds the bow called 'Pinaka' in his hand , who is eternal and divine, who is clothed by the directions, and who is like the 'ya' in 'Namah Shivaya'.

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलौकैकनाथम्।।14।।

śāntākāraṃ bhujagaśayanaṃ padmanābhaṃ sureśaṃ
viśvādhāraṃ gaganasadṛśaṃ meghavarṇaṃ śubhāṅgam I
lakṣmīkāntaṃ kamalanayanaṃ yogibhirdhyānagamyaṃ
vande viṣnuṃ bhavabhaya haraṃ sarvalokaikanātham II

शान्त आकार वाले, सर्पों की शय्या पर सोने वाले, जिनकी नाभि में कमल है, देवताओं के स्वामी, जो सम्पूर्ण जगत् के आधार हैं, जो आकाश की तरह व्यापक हैं, मेघ की घटा के समान जिनकी छटा है, शुभ अङ्गों वाले, लक्ष्मी के पति, कमल की तरह सुन्दर आखों वाले, योगियों की उत्कृष्ट समाधि के द्वारा जो जाने जाते हैं, संसार के भय को हरने वाले ऐसे परमेश्वर, सभी लोकों के स्वामी भगवान् विष्णु की मैं वन्दना करता हूँ।

I praise the Lord Vishṇu who is tranquil in form, who sleeps on the bed of serpents, whose navel has a lotus, who is the lord of the gods and the foundation of the world, who is all-pervasive like the sky, whose colour is like that of dark clouds, whose limbs are auspicious, who is Lakshmi's husband and lotus eyed, who is known by meditation to the yogis, and destroys fear and who is lord of all the worlds.

मेघश्यामं पीतकौशेयवासं
श्रीवत्साङ्गं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम्।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं
वन्दे विष्णुं सर्वलोकैकनाथम् ।।15।।

meghśyāmaṃ pītakauśeyavāsaṃ
shrīvatsāṅgaṃ kaustubhodbhāsitāṅgam I
puṇyopetaṃ puṇḍarīkāyatākṣaṃ
vande viṣṇuṃ sarvalokaikanātham II

मेघ के समान श्यामवर्ण वाले, पीताम्बर धारण करने वाले, श्रीवत्स के चिह्न एवं कौस्तुभ मणि से उद्भासित वक्षःस्थल वाले, सम्पूर्ण लोकों के स्वामी भगवान् विष्णु की मैं वन्दना करता हूँ।

I praise Lord Vishnu who is dark like clouds, who wears yellow clothes, who is Lakshmi's husband, whose chest is adorned by the sign of Shrivatsa and the Kaustubha gem; who is auspicious, lotus-eyed and the lord of all the worlds.

आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।16।।

āpadāmapahartāraṃ dātāraṃ sarvasampadām /
lokābhirāmaṃ śrīrāmaṃ bhūyo bhūyo namāmyaham //

आपत्तियों का विनाश करने वाले, सभी सम्पत्तियों को देने वाले, संसार में सबसे सुन्दर, भगवान् श्री राम को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

I bow again and again to Lord Rama who is the destroyer of obstacles and giver of all (kinds of) wealth; and who is the most charming person in the world.

आर्तानामार्त्तिहन्तारं भीतानां भीतिनाशनम्।
द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम्।।17।।

ārtānāmārttihantāraṃ bhītānāṃ bhītināśanam /
dviṣatāṃ kāladaṇḍaṃ taṃ rāmacandraṃ namāmyaham //

पीड़ितों की पीड़ा का हरण करने वाले, डरे हुए लोगों के डर का विनाश करने वाले, शत्रुओं के लिए यमराज के दण्ड-स्वरूप श्री रामचन्द्र को मैं नमस्कार करता हूँ।

I bow to Lord Rama who destroys the pain of those who are afflicted, and the fear of those who are frightened, and who punishes enemies like Kaladanda.

करारविन्देन पदारविन्दं
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं
बालं मुकुन्दं शिरसा नमामि।।18।।

karāravindena padāravindaṃ
mukhāravinde viniveśayantam I
vaṭasya patrasya puṭe śayānaṃ
bālaṃ mukundaṃ śirasā namāmi II

अपने कमलरूपी हाथों से, कमलरूपी पैर को कमलरूपी मुख में डालते हुए, वट के पत्र-पुट पर सोये हुए बाल-मुकुन्द को सिर झुका कर प्रणाम करता हूँ।

Bowing my head I salute the Bala (child) Mukunda who puts his lotus like foot in his lotus like mouth with his lotus like hands, and who is asleep in the vessel formed by the leaves of the banyan tree.

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्द्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।19।।

vasudevasutaṃ devaṃ kaṃsacāṇūramarddanam I
devakīparamānandaṃ kṛṣṇaṃ vande jagadgurum II

वसुदेव के पुत्र, कंस और चाणूर के विनाशक, देवकी को परम आनन्द देने वाले, संसार के गुरु भगवान् कृष्ण की वन्दना करता हूँ।

I praise Lord Krishna the son of Vasudeva, the slayer of Kansa and Chanura, the one who gives highest joy to Devaki and who is the preceptor of the world.

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि
विश्वविनोदिनि नन्दनुते।
गिरवरविन्ध्यशिरोधिनिवासिनि
विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि
भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते।
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि
रम्यकपर्दिनि शैलसुते।।20।।

ayi girinandini nanditamedini
viśvavinodini nandanute /
girivaravindhya-śirodhinivāsini
viṣnuvilāsini jiṣṇunute //
bhagavati he śitikaṇṭhakuṭumbini
bhūrikuṭumbini bhūrikṛte /
jaya jaya he mahiṣāsuramardini
ramyakapardini śailasute //

हे पर्वत पुत्री, पृथ्वी को आनन्दित करने वाली, विश्व का विनोद करने वाली, नन्द के द्वारा पूजित, श्रेष्ठ पर्वत विन्ध्याचल के शिखर पर निवास करने वाली, व्यापक रूप से प्रसन्न रहने वाली, विजय शील लोगों द्वारा वन्दित, भगवान् शिव की पत्नी, विपुल परिवार वाली, प्रचुर कार्य करने वाली, महिषासुर का विनाश करने वाली, सुरम्य वस्त्राभूषण धारण करने वाली, हे भवानी पार्वती तुम्हारी जय हो।

Praise be to you Goddess Parvati, you who are the daughter of (the king of) mountains; the one who makes the earth and the world rejoice; you are worshipped by Nanda, who lives on the peak of the great Vindhya, omnijovial worshipped by the victorious, are Lord Shiva's wife, have a large family,

have much to your credit, are the destroyer of Mahishasura; and are the one who wears beautiful clothes and ornaments.

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।21।।

sarvasvarūpe sarveśe sarvaśakti – samanvite /
bhayebhyastrāhi no devi durge devi namo'stu te //

हे दुर्गे, सभी रूपों वाली, सभी वस्तुओं की अधिष्ठात्री, हर प्रकार की शक्तियों से युक्त, तुम हमारी हर तरह के भयों से रक्षा करो।

O Goddess Durga, you who can take any form, who resides in every object and encompasses every power ! Protect us from all fear.

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्ति - प्रदायिनि।
मन्त्रमूर्त्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।22।।

siddhibuddhiprade devi bhuktimuktipradāyini /
mantramūrtte sadā devi mahālakṣmi namo'stu te //

सिद्धि, बुद्धि, भुक्ति एवं मुक्ति प्रदान करने वाली हे लक्ष्मी! मन्त्र रूपा देवी, तुम्हारी सदा जय हो।

O Lakshmi, giver of fulfilment, wisdom, enjoyment and emancipation, mantra-like Devi, may you always be praised.

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।23।।

sarasvati namstubhyaṃ varade kāmarūpiṇi /
vidyārambhaṃ karīṣyāmi siddhirbhavatu me sadā //

वर देने वाली, स्वेच्छा से रूप धारण करने वाली, (माँ) सरस्वती, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। मैं विद्यारम्भ करने जा रहा हूँ, मुझे सिद्धि प्रदान करो।

Giver of boons, able to take any form at will, O Goddess Sarswati, I salute you. I am about to begin learning, please grant me success.

दूरीकृतसीतार्तिः प्रकटीकृतरामवैभवस्फूर्तिः।
दारितदशमुखकीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्त्तिः।।24।।

dūrīkṛtasītārtiḥ prakaṭīkṛta - rāmavaibhavasphūrtiḥ /
dāritadaśamukhakīrtiḥ purato mama bhātu hanumato murttiḥ //

भगवती सीता की पीड़ा को दूर करने वाले, भगवान् राम के वैभव को प्रकाशित करने वाले, रावण की कीर्ति को नष्ट करने वाले, हनुमान् जी की मूर्त्ति मेरे सामने प्रकट हो।

May the image of Hanuman who removed goddess Sita's misery, spread Rama's fame and destroyed Ravana's fame, present before me.

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत्स्मरणाद् भवेत्।।25।।

buddhirbalaṃ yaśo dhairyaṃ nirbhayatvamarogatā /
ajāḍyaṃ vākpaṭutvaṃ ca hanumatsmaraṇād bhavet //

भगवान् हनूमान के स्मरण से बुद्धि, बल, यश, धैर्य, निर्भयता, आरोग्य, विद्वत्ता और वाक्चातुर्य की प्राप्ति होती है।

Remembering lord Hanuman's name leads to diligence, fame, valour, patience, redemption from fear and disease and eloquence.

जपाकुसुम-संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ।।26।।

japākusumasaṅkāśaṃ kāśyapeyaṃ mahādyutim /
tamo,riṃ sarvapāpaghnaṃ praṇato'smi divākaraṃ //

जपा कुसुम के समान लाल वर्ण वाले, अतिद्युतिमान्, कश्यप के पुत्र, अन्धकार के नाशक, सर्व पाप-विनाशक, भगवान् सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ।

I pray to that sun god which is red Like the Hibiscus flower, glorious, son of Kashyapa, destroyer of darkness and all sins.

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।27।।।

dadhiśaṅkhatuṣārābhaṃ kṣīrodārṇavasambhavam /
namāmi śaśinaṃ somaṃ śambhormukuṭabhūṣaṇam //

दही, शंख और तुषार के समान वर्ण वाले, क्षीर-सागर से समुत्पन्न और भगवान् शिव की जटा के भूषण, चन्द्रदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।

I salute the moon god who is white like yogurt, conch shells and snow, who has emerged from the ocean; and who adorns Shiva's knot of hair.

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।28।।

dharaṇīgarbhasambhūtaṃ vidyūtkāntisamaprabham /
kumāraṃ śaktihastaṃ taṃ maṅgalaṃ praṇamāmyaham //

पृथ्वी के पुत्र, विद्युत् की कान्ति के समान कान्ति वाले, बलशाली कुमार मङ्गल को मैं नमस्कार करता हूँ।

I salute that Kumara Mangala who is the earth's son, lustrous like lightning and who is powerful.

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।29।।

priyaṅgu-kalikāśyāmaṃ rūpeṇā'pratimaṃ budham /
saumyaṃ saumyaguṇopetaṃ taṃ budhaṃ praṇamāmyham //

जो प्रियङ्गु की कली के समान श्याम वर्ण वाले हैं, अप्रतिम रूप वाले हैं, रुचिकर आभा वाले हैं और चन्द्रमा के गुणों से युक्त हैं, उन बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

I Salute Budha who is black like the bud of the Priyangu creeper, and has exquisite charm with the qualities of the moon.

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।30।।

devānāṃ ca ṛṣīṇāṃ ca guruṃ kāñcanasannibham /
buddhibhūtaṃ trilokeśaṃ taṃ namāmi bṛhaspatim //

देवों और ऋषियों के गुरु, स्वर्ण वर्ण की आभा से प्रदीप्त, बुद्धि से समुत्पन्न, तीनों लोकों के स्वामी उस बृहस्पति देव को मैं नमस्कार करता हूँ।

I Salute Brihashpati who is the teacher of the gods and sages, is lustrous, wise and lord of the three worlds.

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।। 31।।

himakundamṛṇālābhṃ daityānām paramaṃ gurum /
sarvaśāstra-pravaktāraṃ bhārgavaṃ praṇamāmyaham //

हिम, कुन्द और मृणाल की कान्ति के समान कान्ति वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के प्रवचन में पटु भार्गव (शुक्राचार्य) को मैं नमस्कार करता हूँ।

I Salute Bhargava (Shukracharya) who has a white glow like snow, the kunda flower and the lotus stalk; who is the supreme teacher of the demons; and who is learned and articulate in all Shastras.

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।32।।

nīlāñjanasamābhāsaṃ raviputraṃ yamāgrajam /
chāyāmartaṇḍasambhūtaṃ taṃ namāmi śanaiścaram //

जो काले अञ्जन के समान आभा वाले हैं, सूर्य-पुत्र हैं, यम के अग्रज हैं और छाया तथा सूर्य की सन्तान हैं, उन शनिदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

I Salute Shani who has a black lustre; who is the offspring of the Sun, the elder brother of Yama and son of (the couple) Chhaya-Martanda.

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य-विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।33।।

ardhakāyaṃ mahāvīryaṃ candrādityavimardanam /
siṃhikāgarbha-saṃbhūtaṃ taṃ rāhuṃ praṇamāmyaham //

आधे शरीरवाले, महाबलशाली, चन्द्र एवं सूर्य का ग्रहण करने वाले और सिंहिका के गर्भ से समुत्पन्न उस राहु देवता को मैं नमस्कार करता हूँ।

I salute Rahu who has half a body, who is very powerful, who can eclipse the Moon and the Sun, and who has come out of a lioness's womb.

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।34।।

palāśapuṣpasaṅkāśaṃ tārakāgrahamastakam /
raudraṃ raudrātmakaṃ ghoraṃ taṃ ketuṃ praṇmāmyahaṃ //

पलाश के पुष्प के समान वर्ण वाले, ताराग्रहों में प्रमुख, रौद्ररूप वाले, रुद्र के गुणों से युक्त, भयानक केतु देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

I salute the fearsome Ketu who has the colour of Palash flowers, who is foremost among the planets, who has an angry face and who has Rudra's qualities.

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करम्।।35।।

śrutismṛtipurāṇānāmālayaṃ karuṇālayaṃ /
namāmi bhagvatpādaṃ śaṅkaraṃ lokaśaṅkaram //

वेदों, स्मृतियों और पुराणों के मूल आधार देव, जो अत्यन्त करुणामय हैं, जो कल्याणकारी हैं, ऐसे भगवान् शङ्कर को मैं प्रणाम करता हूँ।

I Salute Lord Shiva who is the foundation of the Vedas, Smritis and Puranas; who is extremely compassionate; and who ensures the well-being of the world.

अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
मर्दनमथनमौलेर्मालतीपुष्पमाला ।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ।।36।।

abhinavabisavallī pādapadmasya viṣnor-
madanamathanamaulermālatīpuṣpamālā /
jayati jayapatākā kāpyasau mokṣalakṣmyāḥ
kṣapitakalikalaṅkā jāhnvī naḥ punātu //

जो भगवान् विष्णु के चरणकमल का नूतन मृणाल है तथा काम को भस्म करने वाले शिव के ललाट की मालती-पुष्पमाला है, जयशील मोक्ष लक्ष्मी की विजय पताका है, वह कलि के कलङ्क को नष्ट करने वाली भगवती गङ्गा हमें पवित्र करें।

May Goddess Ganga who is the fresh lotus stalk of Lord Vishnu's lotus feet, the garland of the head of Shiva (destroyer of Kama), victorious Lakshmi's flag of victory and the destroyer of the mark of sin of the Kali, make us pure.

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि।।37।।

pāpāpahāri duritāri taraṅgadhāri
śailapracāri girirāja-guhāvidāri /
jhaṅkārakāri haripādarajo'pahāri
gāṅgaṃ punātu satataṃ śubhakāri vāri //

पापों का हरण करने वाला, पापों का शत्रु, तरङ्ग को धारण करने

वाला, शैल पर बहने वाला, गिरिराज की गुफाओं को विदीर्ण करने वाला, 'झङ्कार' ध्वनि करने वाला, भगवान् श्रीहरि की पादधूलि का प्रक्षालक और निरन्तर शुभ करने वाला, गङ्गा-जल मुझे पवित्र करे।

May the water of the Ganga that destroys sin, which is the enemy of sin, encompasses waves, flows on mountains, rends the caves of the king of mountains, Himalaya, has a pleasant bell-like sound, washes the dirt on feet of Lord Vishnu, and which always bring, good fortune, make me pure.

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।38।।

yadakṣaraṃ padaṃ bhraṣṭaṃ mātrāhīnaṃ ca yadbhavet /
tatsarvaṃ kṣamyatāṃ devi prasīda parameśvari //

हे देवी / देव जो अक्षर या पद भ्रष्ट हो अथवा मात्राहीन हो उन सबको क्षमा करो और हे परमेश्वरी/परमेश्वर ! प्रसन्न हो जाओ।

O God / Goddess, forgive all those who are ignorant about letters, words or syllables, and bestow your grace.

चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रम्
Carpaṭapañjarikāstotram

भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मूढमते ।
सम्प्राप्ते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षति डुकृञ् करणे।।1।।

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ।।2।।

bhaja govindaṃ bhaja govindaṃ govindaṃ bhaja mūḍhamate /
samprāpte sannihite maraṇe nahi nahi rakṣati dukṛñ karaṇe //1//

dinamapi rajanī sāyaṃ prātaḥ śiśiravasantau punarāyātaḥ /
kālaḥ krīḍati gacchatyāyustadapi na muñcatyāśāvāyuḥ //2//

हे मूढ़मति ! गोविन्द को भज, क्योंकि मृत्यु के समीप आने पर 'डुकृञ् करणे' (यह व्याकरण का धातु-पाठ) रक्षा नहीं करता।

दिन और रात, साँझ और सवेरा, शिशिर और वसन्त बार-बार आते हैं, काल की लीला चलती है और आयु बीत जाती है, फिर भी आशा नहीं छूटती है।

Pray to Lord, O fool! When the time of death comes, grammatical expression i. e. dukṛñ karaṇe does not save.

Day and night, dusk and dawn, winter and spring come repeatedly; Time goes on, so does life, yet one does not give up hope.

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानू रात्रौ चिबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः।।3।।

यावद्वित्तोपार्जनसक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे।।4।।

agre vahniḥ pṛṣṭhe bhānū rātrau cibukasamarpitajānuḥ I
karatalabhikṣā tarutalavāsastadapi na muñcatyāśāpāśaḥ II3II

yāvadvittopārjanasaktastavannijaparivāaro raktaḥ I
paścāddhāvati jarjaradehe vārtāṃ pṛcchati kō,pi na gehe II4II

दिन में आगे से अग्नि और पीछे से सूर्य शरीर को तपाते हैं, रात्रि के समय घुटनों में ठोड़ी दबाकर पड़े रहते हैं, हाथ में भिक्षा लाते हैं, वृक्ष के नीचे निवास करते हैं, फिर भी आशारूपी बन्धन नहीं छोड़ता है।

जब तक धन के कमाने में लगा है तभी तक तुम्हारा परिवार तुमसे प्रेम करता है, बूढ़े हो जाने पर घर में कोई बात भी नहीं करेगा।

In day-time fire is there in front and sun is there behind; in the night people sit with the knees stuck to the chin; they receive alms in their palms, and live under trees; yet the bondage of hope does not leave them.

As long as a person has the ability to earn money, so long will his dependents be attached to him. After that, when he grows old, no one will say a word to him.

जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः काषायाम्बरबहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति लोको ह्युदरनिमित्तं बहुकृतशोकः।।5।।

भगवद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम्।।6।।

jaṭilo muṇḍīluñcitakeśaḥ kāṣāyāmbarabahukṛtaveṣaḥ I
paśyannapi ca na paśyati loko hyudaranimittaṃ bahukṛtaśokaḥ II5II

bhagavadgītā kiñcidadhītā gaṅgājalalavakaṇikā pītā I
sakṛdapi yasya murārisamarcā tasya yamḥ kiṃ kurute carcāṃ II6II

जटाधारी होकर, मुण्डी होकर, लुञ्चित-केशी होकर, काषायाम्बर धारणकर, ऐसे नाना प्रकार के वेष धारण करके मनुष्य देखता हुआ भी नहीं देखता और पेट के लिए बहुत तरह से शोक करता है।

जो भगवद्गीता थोड़ी भी पढ़ लेता है, गङ्गाजल की कुछ बूँदे पी लेता है, और एक बार भी भगवान् कृष्ण की अर्चना कर लेता है, क्या यमराज उसकी चर्चा कर सकता है?

An ascetic moves around with matted locks, his head shaven, and hairs pulled out, clad in ochre-coloured and other robes. Man, seeing all this does not still see (understand) that these are all grabs assumed for filling one's stomach.

He, who has studied the Bhagavadgita even a little, who has drunk a drop of the water of the Ganga and who has performed the worship of the Destroyer of the demon Mura (viz. Sri Krishna) at least once - can Yamaraja do him any harm?

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्।।7।।

बालस्तावत्क्रीडासक्तस्तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः पारे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः।।8।।

aṅgaṃ galitaṃ palitaṃ muṇḍaṃ daśanavihīnaṃ jātaṃ tuṇḍam /
vṛddho yāti gṛhitvā daṇḍaṃ tadapi na muñcatyāśāpiṇḍam //7//

bālastāvat-krīḍāsaktas-taruṇastāvat-taruṇīraktaḥ /
vṛddhastāvaccintāmagnaḥ pāre brahmaṇi ko'pi na lagnaḥ //8//

अङ्ग ढीले हो गये हैं, शिर के बाल पक गये हैं, मुख में दाँत नहीं रह गये हैं, लाठी लेकर चलता है, फिर भी आशा नहीं छोड़ती है।

बालक तो खेल में आसक्त हैं, तरुण स्त्री में आसक्त हैं, वृद्ध नाना प्रकार की चिन्ताओं में पड़े हैं। पर-ब्रह्म में कोई भी लीन नहीं है।

His body has become old, the hair on his head has turned grey, his mouth has become toothless; he holds a stick, and moves about. Even then, not desert hope.

A boy is attached to sports; a youth is attached to a young woman; and old man is obsessed with worries but no one is attatched to the Supreme Brahman.

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपया पारे पाहि मुरारे।।9।।

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम्।।10।।

punarapi jananaṃ punarapi maraṇaṃ punarapi jananijaṭhare śayanam I
iha saṃsāre khalu dustāre kṛpayā pāre pāhi murāre II9II

punarapi rajanī punarapi divasaḥ punarapi pakṣaḥ punarapi māsaḥ I
punarapyayanaṃ punarapi varṣaṃ tadapi na muñcatyāśāmarṣam II10II

इस संसार में पुनः पुनः जन्म, पुनः पुनः मरण और पुनः पुनः माता के गर्भ में निवास करना पड़ता है। हे मुरारी! मैं आपकी शरण में हूँ, इस दुस्तर अपार संसार से कृपया पार करें।

रात, दिन, पक्ष, मास, अयन (छः मास) और वर्ष बार-बार आते हैं और जाते हैं; फिर भी मनुष्य आशा और ईर्ष्या को नहीं छोड़ता है।

In this world there is repeated birth, repeated death, and recurring stay in one's mother's womb. O Krishna, I seek your refuge. Please save me from this world that is difficult to cross.

Nights, days, fortnights, months, half-years, years all come and go repeatedly. But man does not abandon hope and jealousy.

वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः ।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ।।11।।

नारीस्तनभरनाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय वारम्वारम् ।।12।।

vayasi gate kaḥ kāmavikāraḥ śuṣke nīre kaḥ kāsāraḥ /
naṣṭe dravye kaḥ parivāro jñate tattve kaḥ saṃsāraḥ //11//

nārīstanabharanābhiniveśaṃ mithyā–māyā–mohāveśam /
etanmāṃsavasādivikāraṃ manasi vicāraya vāraṃvāram //12//

अवस्था बीत जाने पर काम-विकार नहीं रहता है, जल के सूखने पर जलाशय नहीं रहता है, धन नष्ट होने पर परिवार नहीं रहता है, उसी प्रकार तत्त्व का ज्ञान होने पर संसार नहीं रहता है।

स्त्री के स्तनों एवं नाभिस्थल में झूठी माया और मोह का आवेश है, ये सब मांस और चर्बी के ही विकार हैं - ऐसा बार-बार अपने मन में विचार करो।

When youth is spent, there is no lustful yearning. When its water is evaporated, there is no lake. When there is no money, there are no dependants. In the same way when the truth is known, there is no world.

In a woman's breast and navel reside illusion and desire, This is a modification of flesh and fat. Think well about this in your mind again and again.

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविचारम्।।13।।

गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम्।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम्।।14।।

kastvaṃ ko'haṃ kuta āyātaḥ kā me jananī ko me tātaḥ /
iti paribhāvaya sarvamasāraṃ viśvaṃ tyaktvā swapnavicāram //

geyaṃ gītānāmasahasraṃ dhyeyaṃ śrīpatirūpamajasram /
neyaṃ sajjanasaṅge cittaṃ deyaṃ dīnajanāya ca vittam //

तू कौन है, मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, मेरी माता कौन है और पिता कौन है? इस प्रकार विचार करो। असार संसार को स्वप्नवत् समझो।

भगवद्गीता और विष्णुसहस्रनाम का गायन करना चाहिए, भगवान् विष्णु के स्वरूप का निरन्तर ध्यान करना चाहिए, चित्त को सन्तजनों के संग में लगाना चाहिए, धन का दान दीनजनों के लिए करना चाहिए।

Who are you? Who am I? Where have I come from? Who is my mother? Who is my father? Thus enquire, leaving aside the entire world which is like a dream and an illusion.

The Bhagavadgita and the Vishnu-Sahasranama should be sung; the form of Vishnu should be always meditated upon; the mind should be influenced by the company of the good; and wealth should be distributed among the poor.

यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत्पृच्छति गेहे।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन् काये।।15।।

सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्त शरीरे रोगः।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम्।।16।।

yāvajjīvo nivasati dehe kuśalaṃ tāvatpṛcchati gehe /
gatavati vāyau dehāpāye bhāryā bibhyti tasmin kāye //

Sukhataḥ kriyate rāmābhogaḥ paścāddhanta śarīre rogaḥ /
yadyapi loke maraṇaṃ śaraṇaṃ tadapi na muñcati pāpācaraṇam //

जब तक प्राण शरीर में है, तब तक ही लोग कुशल पूछते हैं, प्राण वायु के निकलते ही स्त्री भी शरीर से डरती है।

पहले तो मनुष्य मज़े से स्त्री-भोग करता है किन्तु बाद में शरीर में व्याधियाँ हो जाती हैं। संसार में मरना निश्चित है, फिर भी मनुष्य पापाचार नहीं छोड़ता।

As long as there is breath in the body, so long do people of the household ask about one's welfare. Once the breath leaves and the body is destroyed, the wife from that same body.

One easily takes to carnal enjoyment initially, afterwards, there is disease in the body. Although, in the world death is certain, man does not relinquish sinful ways.

रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः।
नाहं न त्वं नायं लोकस्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः।।17।।

कुरुते गङ्गासागरगमनं व्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीनः सर्वमतेन मुक्तिं भजति न जन्मशतेन।।18।।

(इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितं चर्पटपञ्जरिकास्तोत्रं सम्पूर्णम्।)

rathyācarpaṭaviracitakanthaḥ puṇyāpuṇyavivarjitapanthaḥ I
nāhaṃ na tvaṃ nāyaṃ lokastadapi kimarthaṃ kriyate śokaḥ II

kurute gaṅgāsāgaragamanaṃ vrataparipālanamathavā dānaṃ. I
jñānavihīnaḥ sarvamatena muktiṃ bhajati na janma - śatena II

(itī śrīśaṅkarācāryaviracitaṃ carpaṭapañjarikāstotraṃ sampūrṇam)

गली में पड़े चिथड़ों से कन्था बना लिया, पुण्य और अपुण्य से रहित मार्ग अपना लिया, न मैं हूँ, न तू है, और न यह संसार है, ऐसा जान लेने पर भी शोक क्यों किया जाता है?

गङ्गा–सागर जाने पर भी, व्रतों का अनुष्ठान एवं दान आदि करने पर भी, ज्ञान के विना सौ जन्मों में भी मुक्ति नहीं हो सकती है, यह सभी सम्प्रदायों का अभिमत है।

He who wears a dress made of rags that lie about in the streets, who walks in the path that is beyond merit and demerit. I do not exist, neither do you, nor does this world. Why is there distress despite knowing this?

Going to the place where the Ganga joins the sea; or observing religious vows with care; offering gifts, all these do not lead to liberation - if there is no knowledge - even in a hundred lives according to all schools of thought.

शिवताण्डवस्तोत्रम्
Śivatāṇḍavastotram

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।।1।।

jaṭāṭavīgalajjalapravāhapāvitasthale
gale'valambya lambitāṃ bhujaṅgatuṅgamālikām /
ḍamaḍ-ḍamaḍ-ḍamaḍ-ḍamanninādavaḍḍamarvayaṃ
cakāra caṇḍatāṇḍavaṃ tanotu naḥ śivaḥ śivam //

अन्वयः - यः जटाटवीगलज्जलप्रवाह-पावितस्थले-गले लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् अवलम्ब्य डमड् - डमड् - डम - न्निनाद्वत् डमर्वयं चण्ड-ताण्डवं चकार (स) शिवः नः शिवं तनोतु।।

- जिस (भगवान शिव) ने अपने जटारूपी जंगल से निकलती हुई गंगा जी के प्रवाह से पवित्र किए गये गले में सर्पों की विशाल माला को धारण करते हुए डमरू के डम- डम शब्दों से युक्त प्रचण्ड ताण्डव (उद्धतनृत्य) किया, वे शिवभगवान् हमारे कल्याण का विस्तार करें।

Who wears a huge necklace of serpents around his

neck that has been made pure (sanctified) by the flow of the Ganga that emerges from his forest like knot of matted hair, and who dances the fierce 'tandava dance to the 'dum dum' sound of the 'damaru,' that Shiva may increase our good fortune.

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।।2।।

jaṭākaṭāha - sambhrama - bhramannilimpanirjharī -
vilolavīcivallarīvirājamānamūrddhani /
dhagad-dhagad-dhagajjvalallalaṭapaṭṭapāvake
kiśoracandraśekhare ratiḥ pratikṣaṇaṃ mama //

अन्वयः - जटा-कटाह-सम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-विलोलवी-चिवल्लरी - विराजमानमूर्धनि धगद् - धगद्-धगज्ज्वलल् - ललाटपट्ट-पावके किशोर-चन्द्रशेखरे प्रतिक्षणं मम रतिः (भवतु)।

-जिसका सिर, जटारूपी कड़ाह में तेजी से घूमती हुई गङ्गा के प्रवाह की चञ्चल तरङ्ग-समूहों से सुशोभित है, जिसके ललाट में रहने वाली (तृतीय नेत्र की) अग्नि धक् धक् जल रही है, जिसके मस्तक पर बालचन्द्रमा विराजमान है, ऐसे उस भगवान् में मेरा प्रेम सदा बना रहे।

Whose head is made beautiful by the playful waves which arise from the swift flow of the Ganga in the knot of matted hair, in whose forehead the fire of his third eye burns, in whose head the new moon resides, to that God may I always remain devoted.

धराधरेन्द्रनन्दिनी-विलासबन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि।।3।।

dharādharendranandinī-vilāsabandhubandhura-
sphuraddigantasantatipramodamānamānase /
kṛpākaṭākṣadhoraṇī-niruddhadurdharāpadi
kvaciddigambare mano vinodametu vastuni //

अन्वयः - धराधरेन्द्र - नन्दिनी - विलास - बन्धु - बन्धुर - स्फुरद्दिगन्तसन्तति - प्रमोदमानमानसे कृपाकटाक्ष-धोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद् दिगम्बरे वस्तुनि (मे) मनः विनोदम् एतु।

- हिमालय की पुत्री पार्वती के विलास काल में सहायक लहरदार शिरोभूषण के द्वारा समस्त दिशाओं को प्रकाशित होते देखकर जिनका मन प्रसन्न हो रहा है, जिनकी कृपा दृष्टि से कठिन आपत्ति भी रुक जाती है, ऐसे उस दिगम्बर भगवान् में मेरा मन आनन्द प्राप्त करे।

May my mind rejoice when I think of Lord Shiva whose clothes are the directions, whose mind rejoices when he sees the quarters brightly illumined by the ornaments whose radiance becomes enhanced during dalliance and whose compassionate glances are capable of counteracting the worst of distress !

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि।।4।।

jaṭābhujaṅgapiṅgalasphuratphaṇāmaṇiprabhā-
kadambakuṅkumadravapraliptadigvadhūmukhe /
madandhasindhurasphurattvaguttarīyamedure
mano vinodamadbhutaṃ bibhartu bhūtabhartari //

अन्वयः- **जटा-भुजङ्ग-पिङ्गलस्फुरत्फणा-मणि-प्रभाकदम्ब-कुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे मदान्ध - सिन्धुर-स्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे भूतभर्तरि (मे) मनः अद्भुतं विनोदं बिभर्त्तु।**

- जिनकी जटाओं में लिपटे सर्पो के फणों की मणियों का चमकता हुआ पिङ्गलवर्ण का प्रभा-समूह, दिशारूपी वधू के मुखपर कुङ्कुमराग का लेप कर रहा है,, मतवाले हाथी के चर्म का हिलता हुआ उत्तरीय (अङ्गवस्त्र) धारण करने से स्निग्धवर्ण वाले उन भूतनाथ में मेरा मन अद्भुत आनन्द प्राप्त करे।

May my mind rejoice greatly when I think of Lord Shiva (Lord of creatures) in whose knot of hair are entangled snakes whose hoods glorified by jewels emit a saffron glow that reddens the quarters that resemble the face of a bride, who is lustrous because he wears an 'angavastra' made of the skin of a tusker in rut.

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर -
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः।।5।।

sahasralocanaprabhṛtyaśeṣalekhaśekhara-
prasūnadhūlidhoraṇīvidhūsarāṅghripīṭhabhūḥ /
bhūjaṅgarājamālayā nibaddhajāṭajūṭakaḥ
śriyai cirāya jāyatāṃ cakorabandhuśekharaḥ //

अन्वयः - सहस्रलोचन - प्रभृत्यशेषलेख - शेखर - प्रसून-धूलिधोरणी- विधूसर-अङ्घ्रिपीठभूः भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः चकोरबन्धुशेखरः (मम) चिराय श्रियै जायताम्।

• जिनकी चरण-पादुका इन्द्र आदि समस्त देवों के सिर की शोभा बढ़ाने वाले पुष्पों के पराग से अत्यन्त मलिन है, वासुकी सर्प की माला से बँधी हुई जटा वाले वे भगवान् शिव मुझे चिरस्थायी सम्पत्ति दें।

Whose sandal is soiled with the nectar of flowers that increases the beauty of the heads of Indra and all the other gods, whose knot of hair is tied with the garland of the lordly serpent, Vasuki - may that Lord Shiva give me long-lasting prosperity.

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः।।6।।

lalāṭacatvarajvaladdhanañjayasphuliṅgabhā-
nipītapañcasāyakaṃ namannilimpanāyakaṃ /
sudhāmayūkhalekhayā virājamānaśekharaṃ
mahākapāli sampade śiro jaṭālamastu naḥ //

अन्वयः- ललाट-चत्वर-ज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा-निपीत-पञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकं सुधामयूख- लेखया विराजमानशेखरं महाकपालि जटालं शिरः नः सम्पदे अस्तु।

जिसने ललाटवेदी पर प्रज्वलित अग्नि की चिंगारियों के तेज से कामदेव

को भस्म कर दिया, जिसे देवनायक इन्द्र नमस्कार करते हैं, सुधांशु (चन्द्र) की कला से सुशोभित मुकुटवाला, विशाल ललाट वाला, घनी जटाओं से युक्त, वह मस्तक हमारी सम्पत्ति का साधक बने।

The one who destroyed Kamadeva with the glow of the sparks from the fire that burns in his forehead, who is saluted by Indra, the leader of gods, whose head-gear is made beautiful by a part of the moon, who has a broad forehead and dense locks, may that head (of Shiva) help bring us prosperity.

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल -
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक -
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम।।7।।

karālabhālapaṭṭikādhagaddhagaddhagajjvala-
ddhanañjayāhutīkṛtapracaṇḍapañcasāyake /
dharādharendranandinīkucāgracitrapatraka -
prakalpanaikaśilpini trilocane ratirmama //

अन्वयः - कराल - भालपट्टिका - धगद् - धगद् - धगज्ज्वलद्- धनञ्जयाहुतीकृत - प्रचण्ड - पञ्च - सायके धराधरेन्द्र- नन्दिनी - कुचाग्र - चित्र - पत्रक - प्रकल्पने एकशिल्पिनि त्रिलोचने मम रतिः (भूयात्)।

जिन्होंने अपनी विकराल भालपट्टिका पर धक्-धक् जलती हुई अग्नि में प्रचण्ड कामदेव का हवन कर दिया था, हिमालय की पुत्री पार्वती के स्तनों पर पत्रावली रचना के एकमात्र शिल्पी उन भगवान् त्रिलोचन में मेरी अनुरक्ति बनी रहे।

May I remain devoted to Lord Shiva (who has three eyes),

who sacrificed Kamadeva in the fire that burned on his forehead and who is the one and only engraver of the figures on the breasts of Paravati, the daughter of Himalaya.

नवीनमेघमण्डली-निरुद्धदुर्धरस्फुर -
त्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ।।8।।

navīnameghamaṇḍalīniruddhadurdharasphurat
kuhūniśīthinītamaḥ prabandhabaddhakandharaḥ /
nilimpanirjharīdharastanotu kṛttisindhuraḥ
kalānidhānabandhuraḥ śriyaṃ jagaddhurandharaḥ //

अन्वयः - नवीन - मेघमण्डली - निरुद्ध - दुर्धर - स्फुरत् - कुहूनिशीथिनी - तमः - प्रबन्ध - बद्धकन्धरः निलिम्पनिर्झरीधरः कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः जगद्धुरन्धरः (नः) श्रियं तनोतु।

जिनके कण्ठ में नवीन मेघ समूह से घिरी हुई अमावस्या की मध्यरात्रि के समय फैले हुए अन्धकार की श्यामता बनी है; जो गजचर्म धारण किये हुए हैं, वे संसार के भार को धारण करने वाले, चन्द्रमा की स्थिति से मनोहर कान्ति वाले भगवान् गङ्गाधर मेरी सम्पत्ति का विस्तार करें।

Whose neck is black like the darkness that comes about when a new chain of clouds surround the mid-night which has no moon, who wears the skin of an elephant, who bears the burden of the world, who is charmingly lustrous because of the presence of the moon, may that Lord Shiva (bearer of the Ganga) increase my prosperity.

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा -
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।।9।।

praphullanīlapaṅkajaprapañcakālimaprabhā-
valambikaṇṭhakandalīruciprabaddhakandharaṃ I
smaracchidaṃ puracchidaṃ bhavacchidaṃ makhacchidaṃ
gajacchidāndhakacchidaṃ tamantakacchidaṃ bhaje II

अन्वयः - प्रफुल्ल - नीलपङ्कज - प्रपञ्च - कालिमप्रभावलम्बि- कण्ठ - कन्दलीरुचिप्रबद्ध - कन्धरं स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तम्अन्तकच्छिदं भजे।

जिनका कण्ठ प्रफुल्ल नीलकमल समूह की श्याम प्रभा का अनुकरण करने वाले हिरण की जैसी छवि से सुशोभित है, तथा जो कामदेव, त्रिपुरासुर, संसार, दक्षयज्ञ, गजासुर, अन्धकासुर और यमराज का भी विनाश करने वाले हैं, उनको मैं भजता हूँ।

I worship him whose neck vies with that of a deer in charm, which is similar to the dark glow of a cluster of blooming blue lotuses and who is capable of destroying Kamadeva, Tripura, Sansara, Daksha yagya, Gajasura, Andhakasura and Yamaraja.

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी -
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।।10।।

akharvasarvamaṅgalākalākadambamañjarī-
rasapravāhamādhurīvijṛmbhaṇāmadhuvrataṃ /
smarāntakaṃ purāntakaṃ bhavāntakaṃ makhāntakaṃ
gajāntakāndhakāntakaṃ tamantakāntakaṃ bhaje //

अन्वयः - अखर्व-सर्वमङ्गला-कलाकदम्बमञ्जरी-रसप्रवाह-माधुरी-विजृम्भणा-मधुव्रतं स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तम् अन्तकान्तकं भजे।

जो दर्प रहित पार्वती की कला रूपी कदम्ब मञ्जरी की मकरन्दधारा की माधुरी का पान करने वाले मधुप हैं तथा कामदेव, संसार, त्रिपुरासुर गजासुर, अन्धकासुर, और यमराज का अन्त करने वाले हैं, उनको मैं भजता हूँ।

I worship him who enjoys the essence of Paravati's prideless beauty in the same way as a bee enjoys the essence of a lotus and who is the destroyer of Kamadeva, worldly ties, Tripurasura, Daksha-yagya, Gajasura, Andhakasura and Yamaraja.

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वस -
द्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल -
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ।।11।।

jayatvadabhravibhramabhramadbhujaṅgamaśvasad-
vinirgamatkramasphuratkarālabhālahavyavāṭ /
dhimid-dhimid-dhimid-dhvananmṛdaṅgatuṅgamaṅgala-
dhvanikramapravartitapracaṇḍatāṇḍavaḥ śivaḥ //

अन्वयः - अदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गम - श्वसद्विनिर्गमत्क्रम-स्फुरत् - कराल - भाल - हव्यवाट् धिमिद् - धिमिद्-

धिमिद् - ध्वनन्मृदङ्ग - तुङ्गमङ्गल - ध्वनि - क्रमप्रवर्तित-
प्रचण्डताण्डवः शिवः जयतु।

जिनके मस्तक पर तीव्र वेग के साथ घूमते हुए सर्प की फुफकार से ललाट की भयानक अग्नि क्रमशः प्रज्वलित होती हुई निकल रही है। धिमिद्-धिमिद् बजते हुए मृदङ्ग के उत्कृष्ट मङ्गल-घोष के क्रम से जिनका प्रचण्ड ताण्डव हो रहा है, उन भगवान् शिव की जय हो।

Praise to the Shiva whose forehead-fire starts burning regularly due to the quickly moving snakes' hissing , who dances the 'tandava' dance to the auspicious beat of the 'Mridanga'.

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्।।12।।

dṛṣadvicitratalpayorbhujaṅgamauktikasrajor-
gariṣṭharatnaloṣṭhayoḥ suhṛdvipakṣapakṣayoḥ I
tṛṇāravindacakṣuṣoḥ prajāmahīmahendrayoḥ
samapravṛttikaḥ kadā sadāśivaṃ bhajāmyaham II

अन्वयः - दृषद्-विचित्रतल्पयोः, भुजङ्ग-मौक्तिकस्रजोः, गरिष्ठरत्न-लोष्ठयोः, सुहृद्-विपक्ष-पक्षयोः, तृण-अरविन्दचक्षुषोः, प्रजा - महीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः अहं कदा सदाशिवं भजामि।।

पत्थर और अद्भुत शय्या में, सर्पमाला एवं मुक्तामाला में, श्रेष्ठरत्न और मिट्टी के ढेले में, मित्रपक्ष और शत्रुपक्ष में, तृण एवं कमललोचना तरुणी में, प्रजा और राजा में समान भाव वाला होकर मैं कब सदाशिव को भजूँगा?

When I, while considering a bed of stones and silk alike, a garland of snakes and pearls alike, the best of jewels and a blob of mud alike, a camp of friends and foes alike and grass and a beautiful woman alike, will be able to worship and praise Lord Shiva.

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।।13।।

kadā nilimpanirjharīnikuñjakoṭare vasan
vimuktadurmatiḥ sadā śirasthamañjaliṃ vahan I
vilolalolalocano lalāmabhālalagnakaḥ
śiveti mantramuccaran kadā sukhī bhavāmyhaham II

अन्वयः- ललामभाललग्नकः निलिम्प - निर्झरी - निकुञ्जकोटरे वसन्, विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं वहन्, विलोललोललोचनः 'शिव'-इति मन्त्रम् उच्चरन्, अहं कदा सुखी भवामि।

सुन्दर भाल वाले भगवान् शिव में लीन होकर, अपनी दुर्मति का त्यागकर, गङ्गाजी के तटवर्ती निकुञ्ज के भीतर रहता हुआ, सिर पर हाथ जोड़कर निश्चल दृष्टि से 'शिव' नाम मन्त्र का उच्चारण करता हुआ, मैं कब सुखी होऊँगा ?

When will I be having the joy of devoting myself to Lord Shiva with a beautiful spear, having left off my evil-passions, having taken residence in a grove near the Ganga, folding my hands above my head and reciting the name of Lord Shiva with a fixed mind?

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ स भक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम्।।14।।

imaṃ hi nityamevamuktamuttamottamaṃ stavaṃ
paṭhan- smaran-bruvan-naro viśuddhimeti santatam I
hare gurau sa bhaktimāśu yāti nānyathā gatiṃ
vimohanaṃ hi dehināṃ tu śaṅkarasya cintanaṃ II

अन्वयः - (यः) नित्यमेव उक्तम् इमम् उत्तमोत्तमं स्तवं हि पठन् स्मरन् ब्रुवन् (भवति) स नरः सन्ततं विशुद्धिम् एति, आशु हरे गुरौ सुभक्तिं याति, अन्यथागतिं तु न (याति)। शङ्करस्य चिन्तनं देहिनां विमोहनं हि (करोति)।

जो मनुष्य इस भाँति से उक्त इसी उत्तमोत्तम स्तोत्र का नित्य पाठ, स्मरण और वर्णन करता है, वह सदा विशुद्ध रहता है और अतिशीघ्र ही श्रेष्ठ शिवजी की अच्छी भक्ति प्राप्त कर लेता है। वह विपरीत स्थिति को नहीं प्राप्त होता है, क्योंकि शिवजी का चिन्तन मुनष्यों के मोह का नाश ही करता है।

Whoever recites, memorizes and describes this stotra regularly in this way always remains pure and soon attains the bhakti of the great Lord Shiva. He does not fall prey to wrong paths because meditating of Lord Shiva kills ignorance in human.

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।।15।।

(इति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।)

pūjāvasānasamaye daśavaktragītaṃ
yaḥ śambhupūjanamidaṃ paṭhati pradoṣe I
tasya sthirāṃ rathagajendraturaṅgayuktāṃ
lakṣmīṃ sadaiva sumukhīṃ pradadāti śambhuḥ II

(iti śrīrāvaṇakṛtaṃ śivātaṇḍavastotraṃ sampūrṇam)

अन्वयः - यः प्रदोषे पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं शम्भुपूजनपरम् इदं स्तोत्रं पठति, शम्भुः तस्य रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां स्थिरां सदैव सुमुखीं (च) लक्ष्मीं प्रददाति।।

सायंकाल में पूजा की समाप्ति होने पर रावण के द्वारा गाये हुये शम्भु पूजा से सम्बन्धित इस स्तोत्र का जो पाठ करता है, भगवान् शम्भु उस भक्त को रथ, श्रेष्ठ हाथी तथा घोड़ों से युक्त स्थिर तथा अनुकूल रहने वाली लक्ष्मी प्रदान करते हैं।

Whoever recites these verses sung by Ravana as he was praying Shambhu, in the evening after finishing his prayers, Lord Shiva bestows such bounties upon him like chariots, the best of elephants and horses, and ever - staying and auspicious Lakshmi.

शिवमहिम्नः स्तोत्रम्
Śivamahimnaḥ Stotram

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येषस्तोत्रे हर! निरपवादः परिकरः।।1।।

mahimnaḥ pārante paramaviduṣo yadyasadṛśī
stutirbrahmādīnāmapi tadavasannāstvayi giraḥ I
athāvācyaḥ sarvaḥ svamatipariṇāmāvadhi gṛṇan
mamāpyeṣastotre hara! nirapavādaḥ parikaraḥ II

अन्वयः- हर! यदि ते महिम्नः परं पारम् अविदुषः स्तुतिः असदृशी, तद् ब्रह्मादीनाम् अपि गिरः त्वयि अवसन्नाः। अथ स्वमति परिणामावधि गृणन् सर्वः अवाच्यः, (अतः) मम अपि स्तोत्रे एष परिकरः निरपवादः।

हे हर! यदि आपकी अपार महिमा का पार न पाने वालों के द्वारा की गई आपकी स्तुति अनुचित है तो ब्रह्मादि की भी वाणी आपकी महिमा के वर्णन योग्य नहीं है, अतः अपनी अपनी मति के अनुसार आपका गुणगान करने वाले किसी को भी बुरा नहीं कहना चाहिए। इसलिए मैं भी आपकी स्तुति करने का प्रयास कर रहा हूँ।

O Lord! if your praise by persons who do not know your full greatness be inappropriate, than even Brahama and others cananot praise You. No one need be condemend for singing your praise according to the best of his capability; and thus I am making the present effort.

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।2।।

atītaḥ panthānaṃ tava ca mahimā vāṅmanasayo -
ratadvyāvṛttyā yaṃ cakitamabhidhatte śrutirapi /
sa kasya stotavyaḥ katividhaguṇaḥ kasya viṣayaḥ
pade tvarvācīne patati na manaḥ kasya na vacaḥ //

अन्वयः- तव महिमा च वाङ्मनसयोः पन्थानम् अतीतः। यं श्रुतिः अपि अतद्-व्यावृत्त्या चकितम् अभिधत्ते, स कस्य स्तोतव्यः? कतिविधगुणः? कस्य विषयः? (तथापि) अर्वाचीने पदे कस्य मनः कस्य वचः (च) न पतति।

आप की महिमा वाणी और मन से परे है। वेद भी आश्चर्यचकित होकर 'नेति' 'नेति' कहते हैं, उसकी स्तुति कौन कर सकता है? उसके गुण कैसे हैं? वह कैसे समझा जा सकता है। (अर्थात् आपका वर्णन कोई नहीं कर सकता।) आपके नवीन साकार रूप में किसका मन नहीं आकृष्ट होता? किसकी वाणी आकृष्ट नहीं होती?

Your majesty transgresses the capacity of words and the mind. Even the Vedas, unable to describe that majesty in its fulness have exclaimed in awe- "Not only this", "Not only this". Who can praise such a one adequately? What are His attributes? How can He be grasped? Even so every devotee does apply his mind and his words in singing praises of your numerous "Leelas".

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।।3।।

madhusphītā vācaḥ paramamamṛtaṃ nirmitavata-
stava brahman kiṃ vāgapi suragurorvismayapadam I
mama tvetāṃ vāṇīṃ guṇakathanapuṇyena bhavataḥ
punāmītyarthe'smin puramathana buddhirvyavasitā II

अन्वयः- हे ब्रह्मन्! परमम् अमृतम् मधुस्फीताः वाचः निर्मितवतः तव सुरगुरोः अपि वाक् किं विस्मयपदम्? हे पुरमथन! मम तु एतां वाणीं भवतः गुणकथनपुण्येन पुनामि इति अर्थे अस्मिन् बुद्धिः व्यवसिता।

हे ब्रह्मस्वरूप! आप अत्यन्त माधुर्ययुक्त अमृतरूपी वेदवाणी के निर्माता हैं! क्या आपको सुरगुरु बृहस्पति की भी वाणी विस्मित कर सकती है? हे पुरमथन, मैंने तो अपनी इस वाणी को आपके गुणकथन के पुण्य से पवित्र करने के लिए बुद्धि लगाई है।

O Lord, You are the Creator of honey-sweet words (viz. the "Vedas"). Your praise even by Brahma cannot astonish you. Therefore, O Lord, I am applying myself to your praise merely with a view to sanctify my tongue with a hymn to Your glory.

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।4।।

tavaiśvaryaṃ yattajjagadudayarakṣāpralayakṛt
trayīvastuvyastaṃ tisṛṣu guṇabhinnāsu tanuṣu /
abhavyānāmasmin varada ramaṇīyāmaramaṇīṃ
vihaṅtuṃ vyākrośīṃ vidadhata ihaike jaḍadhīyaḥ //

अन्वयः- हे वरद! जगदुदयरक्षाप्रलयकृत् त्रयीवस्तु गुणभिन्नासु तिसृषु तनुषु व्यस्तं यद् इह तव ऐश्वर्यं तद् विहन्तुम् एके जडधियः अस्मिन् अभव्यानां रमणीयाम् अरमणीं व्याक्रोशीं विदधते।

हे वर देने वाले प्रभो! सृष्टि की उत्पत्ति, पालन व संहार करने वाला, वेदों द्वारा प्रतिपाद्य, सत्त्व-रजस् तम गुणों के भेद से ब्रह्मा-विष्णु-शंकर रूप तीन शरीरों में व्याप्त जो यह आपका ऐश्वर्य है, उसका खण्डन करने के लिए कुछ कुण्ठित बुद्धि के नास्तिक लोग आपके ऐश्वर्य के विषय में मन्दबुद्धि लोगों को प्रिय लगने वाले अनुचित शब्द-प्रयोग करते रहते हैं।

O Lord, You are the Power which creates, sustains and dissolves the world, the Power described by the three Vedas with manifestations (Brahma, Vishnu and Shiva) according to the three Gunas (Sattva, Rajas, Tamas). Nevertheless, many foolish persons try to belittle Your Majesty by using unpleasing language befitting only to unworthy persons.

किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।।5।।

kimīhaḥ kiṅkāyaḥ sa khalu kimupāyastribhuvanaṃ
kimādhāro dhātā sṛjati kimupādāna iti ca /
atarkyaiśvarye tvayyanavasaraduḥstho hatadhiyaḥ
kutarko'yaṃ kāṃścinmukharayati mohāya jagataḥ //

अन्वयः - स धाता किमीहः किङ्कायः किमुपायः किमाधारः किमुपादानः च त्रिभुवनं सृजति इति अयं कुतर्कः अतर्क्यैश्वर्ये त्वयि अनवसरदुःस्थः खलु जगतः मोहाय कांश्चित् हतधियः मुखरयति।

वह ब्रह्मा किस इच्छा के वशीभूत होकर किस शरीर से, किस विधि से, किस आधार में अधिष्ठित होकर व किस समवायिकारण से तीनों लोकों की उत्पत्ति करता है - इस प्रकार का कुतर्क कल्पनातीत ऐश्वर्य वाले आपके विषय में रहस्य न पाकर अस्थिर होते हुए भी संसार को भ्रम में डालने के लिए कुछ बुद्धिहीन लोगों को वाचाल बनाता है।

About you of unimaginable glory some other foolish persons are found creating confusion in the minds of men by elaborating You, with such inappropriate and ill-conceived arguments such as, "W ith what object, with what form with what means, on what basis and with what resources, does the great Lord create three World?"

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।6।।

ajanmāno lokāḥ kimavayavavanto'pi jagatā -
madhiṣṭhatāraṃ kiṃ bhavavidhiranādṛtya bhavati /
anīśo vā kuryād bhuvanajanane kaḥ parikaro
yato mandāstvāṃ pratyamaravara saṃśerata ime //

अन्वयः - अमरवर! इमे लोकाः अवयववन्तः अपि किम् अजन्मानः? किम् भवविधिः जगताम् अधिष्ठातारम् अनादृत्य भवति? अनीशः वा कुर्यात् (तर्हि) भुवनजनने कः परिकरः? यतः मन्दाः (अतः) त्वां प्रति संशेरते।

हे देवों में श्रेष्ठ! ये पृथ्वी आदि लोक अवयवी होने पर भी क्या जन्म-रहित हो सकते हैं? क्या सृष्टि की उत्पत्ति कर्त्ता के विना हो सकती है? ईश्वर से भिन्न यदि कोई मनुष्य, आदि इसका कर्ता है तो भू आदि लोगों की रचना करने के लिए उसके पास क्या सामग्री है? क्योंकि वे मन्दबुद्धि हैं इसलिए आपके विषय में संशय किया करते हैं।

O greatest of The shining ones, they do not comprehend that these Worlds cannot be birthless; that without a Creator the process of creation would be impossible; and that nobody other than the Almighty could take up the creation of all these World: only the foolish harbour such doubts.

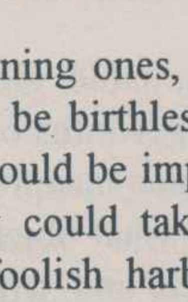

त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।7।।

trayī sāṅkhyaṃ yogaḥ paśupatimataṃ viaṣṇavamiti
prabhinne prasthāne paramidamadaḥ pathyamiti ca /
rucīnāṃ vaicitryādṛjukutilanānāpathajuṣāṃ
nṛṇāmeko gamyastvamasi payasāmārṇava iva //

अन्वयः- त्रयी सांख्यम् योगः पशुपतिमतम् वैष्णवम् इति प्रभिन्ने प्रस्थाने इदम् परम् अदः पथ्यम् इति रुचीनाम् वैचित्र्याद् ऋजुकुटिलनानापथजुषाम् नृणाम् पयसाम् अर्णवः इव त्वम् एकः गम्यः असि।

वेद, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, शैवशास्त्र, वैष्णवशास्त्र इत्यादि विभिन्न मार्गों में "यह (हमारा) मत श्रेष्ठ है, वह (दूसरे का) मत श्रेष्ठ नहीं" इस प्रकार की रुचियों में भेद होने से सीधे-टेढ़े, अनेक मार्गों के अनुसार चलनेवाले मनुष्यों द्वारा प्राप्त करने योग्य वैसे ही आप एक हैं जैसे नदियों द्वारा प्राप्त करने योग्य समुद्र ।

The three Vedas and the various system of worship and philosophy, such as Sankhya, Yoga, Shaiva and Vaishnava, point out "this is good", "that is beneficent" and so on. You are the ultimate goal of all these devotees travelling by various paths, straight or crooked, in their varied ways, in the same manner as the Ocean is the goal of all channels of water, straight or meandering.

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।।8।।

mahokṣaḥ khaṭvāṅgaṃ paraśurajinaṃ bhasma phaṇinaḥ
kapālaṃ cetīyattava varada tantropakaraṇaṃ /
surāstāṃ tāmṛddhiṃ dadhati tu bhavadbhrūpraṇihitāṃ
na hi svātmārāmaṃ viṣayamṛgatṛṣṇā bhramayati //

अन्वयः- वरद! महोक्षः, खट्वाङ्गम्, परशुः, अजिनम्, भस्म, फणिनः, कपालम् च इति इयत् तव तन्त्रोपकरणम्। सुराः तु ताम् ताम् ऋद्धिम् भवद्भ्रूप्रणिहिताम् दधति। हि विषयमृगतृष्णा स्वात्मारामं न भ्रमयति।

हे प्रभो! बैल, खाट का पाया, फरसा, मृगचर्म, भस्म, सर्प और खप्पर यही सब आपके व्यवहारोपयोगी साधन हैं। परन्तु (आप दाता हैं, अतः) देवता लोग भिन्न-भिन्न ऋद्धियों को आपकी कृपा कटाक्ष से धारण करते हैं। (आप स्वयं उपभोग नहीं करते) क्योंकि आत्मा में रमण करने वाले को सांसारिक विषयों की मृगतृष्णा भ्रम में नहीं डाल सकती ।

O granter of boons, Your equipment consists of several worthless items, such as the bull, the part of cot, an axe, the deer-skin, ashes, the snakes and the skulls; nevertheless, by a mere glance of grace from You the Shining Ones attain indescribable prosperity. The External Spirit surely is not deluded by the mirage of sense-objects.

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।9।।

dhruvaṃ kaścit sarvaṃ sakalamaparastvadhruvamidaṃ
paro dhrauvyādhrauvye jagati gadati vyastaviṣaye ।
samaste'pyetasmin puramathana tairvismita iva
stuvañjihremi tvāṃ na khalu nanu dhṛṣṭā mukharatā ॥

अन्वयः - पुरमथन! कश्चिद् इदम् सर्वम् ध्रुवम् गदति, अपरः सकलम् अध्रुवम्। तु परः जगति व्यस्तविषये ध्रौव्याध्रौव्ये एतस्मिन् समस्ते तैः विस्मित इव अपि त्वाम् स्तुवन् न जिह्रेमि। ननु मुखरता खलु धृष्टा।

हे त्रिपुरासुर का विनाश करने वाले! कोई इस सम्पूर्ण जगत् को नित्य बताता है, अन्य कोई इसे अनित्य बताता है, तथा अन्य कोई जगत् में नित्य और अनित्य दोनों प्रकार के पदार्थ मानते हैं। ऐसा होने पर आश्चर्य में पड़ा हुआ सा भी आपकी स्तुति करता हुआ, मैं लज्जित नहीं हो रहा हूँ। वस्तुतः वाचालता ही ढीठ होती है।

O Destroyer of the Tripura, some say "All this is Eternal": other say "All this is Transient": still others say "This entire world consists of a fusion of the External and the Transient". While being confounded by such statements, I am not abashed in singing Your praise : indeed a singer has to leave off shyness.

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ।।10।।

tavaiśvaryaṃ yatnādyadupari virañcirhariradhaḥ
paricchettuṃ yātāvanalamanalaskandhavapuṣaḥ /
tato bhaktiśraddhābharagurugṛṇadbhyāṃ giriśa yat
svayaṃ tasthe tābhyāṃ tava kimanuvṛttirna phalati //

अन्वयः गिरिश! अनलस्कन्धवपुषः तव यद् ऐश्वर्यम् परिच्छेत्तुम् विरञ्चिः उपरि हरिः अधः यत्नाद् यातौ अनलम्, ततः भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्याम् ताभ्याम् तस्थे। तव अनुवृत्तिः किम् न फलति?

हे कैलासवासी! अग्निस्तम्भ के समान आपकी तेजोमयी मूर्ति का जो पार पाने के लिए ब्रह्माजी ऊपर की ओर, विष्णुजी नीचे की ओर प्रयत्नपूर्वक गये, वह पार न पा सके। बाद में भक्ति और श्रद्धा से अवनत होकर स्तुति करते हुए उन दोनों के समक्ष आप स्थिर हो गए। आपके अनुसरण से क्या फल नहीं मिलता ?

One who dwells on Mount Kailasa, What benefits are unattainable through devotion for You? Even Lord Brahma and Lord Vishnu who tried to measure the full glory of Your shining form could not succeed; but when they sang songs in Your praise with sincere love and devotion, You did appear in person before them. So, is there any thing that is not possible through devotion to you?

अयत्नादापाद्य - त्रिभुवनमवैर - व्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।।11।।

ayatnādāpādya-tribhuvanamavaira-vyatikaraṃ -
daśāasyo yadbāhūnabhṛta raṇakaṇḍūparavaśān /
śiraḥ padmaśreṇīracitacaranāmbhoruhabaleḥ
sthirāyās-tvadbhaktes-tripurahara visphūrjitamidaṃ //

अन्वयः - त्रिपुरहर! शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायाः त्वद्भक्तेः इदम् विस्फूर्जितम् यद् दशास्यः त्रिभुवनम् अयत्नाद् अवैरव्यतिकरम् आपाद्य रणकण्डूपरवशान् बाहून् अभृत।

हे त्रिपुर-संहारक! अपने मस्तकरूपी कमलों की पंक्ति को आपके चरणकमलों में समर्पित करके की गई आपकी निश्चल भक्ति का यह प्रताप है कि दशग्रीव रावण ने तीनों लोकों को अनायास ही पूर्णतया निर्वैर बनाकर युद्ध के लिए खुजलाने वाली भुजाओं को धारण किया।

O destroyer of Tripura! Ravana, the ten-headed demon King, worshipped You by putting at Your lotus-feet the garland of his ten heads. This unflinching devotion made him unrivalled in all the Three World and his twenty arms continued to itch for a fight without an adversary to oppose him.

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।।12।।

amuṣya tvatsevāsamadhigatasāraṃ bhujavanaṃ
balātkailāse'pi tvadadhivasatau vikramayataḥ /
alabhyā pātāle'pyalasa-calitāṅguṣṭhaśirasi
pratiṣṭha tvayyāsīd dhruvamupacito muhyati khalaḥ //

अन्वयः - त्वत्सेवासमधिगतसारम् भुजवनम् त्वदधिवसतौ कैलासे अपि बलात् विक्रमयतः अमुष्य त्वयि अलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि पाताले अपि प्रतिष्ठा अलभ्या आसीत्। उपचितः खलः ध्रुवम् मुह्यति।

आपकी सेवा से प्राप्त शक्तिवाली अपनी भुजाओं से आपके निवास-स्थान कैलासपर्वत पर भी हठपूर्वक पराक्रम दिखाने वाले उस रावण को आपके द्वारा अँगूठे के अग्रभाग से हल्का सा दबाये जाने पर पाताल में भी शरण नहीं मिली; क्योंकि समृद्धि प्राप्त करके दुष्ट अवश्य ही मोह में फंस जाता है।

The same Ravana, whose arms became so powerful because of his devotion for You, had the cheek to try to lift your abode (Kailasa); and then, with just a light shaking of the tip of your toe (denoting displeasure) he fell from this greatness so rapidly that he could not find a place even in the lowest abyss. Vicious people always fall into evil thoughts once they attain high position..

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।।13।।

yadṛddhiṃ sutrāmṇo varada! paramoccairapi satī-
madhaścakre bāṇaḥ parijanavidheyatribhuvanaḥ /
na taccitraṃ tasmin varivasitari tvaccaraṇayor -
na kasyāpyunnatyai bhavati śirasastvayyavanatiḥ //

अन्वयः - वरद! परिजनविधेयत्रिभुवनः बाणः सुत्राम्णः परमोच्चैः सतीम् अपि ऋद्धिम् यद् अधः चक्रे तत् त्वच्चरणयोः वरिवसितरि तस्मिन् न चित्रम्। त्वयि शिरसः अवनतिः कस्य अपि उन्नत्यै न भवति?

हे वरद! त्रिलोक को सेवक की तरह वश में रखने वाले बाणासुर ने इन्द्र की बहुत अधिक बढ़ी हुई सम्पत्ति को भी जो नीचा दिखा दिया, वह आपके चरणों में सिर झुकाने वाले उसके लिए आश्चर्य की बात नहीं थी। आपके आगे मस्तक को झुकाना किसकी उन्नति के लिए नहीं होता?

O Lord, Banasura could subjugate all the three world and excel even Indra's prosperity. This would be amazing, but for the fact that this was the fruit of his extreme devotion and surrender at Your feet. A sincere and low bow before You can lead to the highest pinnacle of prosperity.

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।।14।।

akāṇḍabrahmāṇḍa - kṣaya - cakita - devāsurakṛpā-
vidheyasyā'sīdyastrinayana viṣaṃ saṃhṛtavataḥ /
sa kalmāṣaḥ kaṇṭhe tava na kurute na śriyamaho
vikāro'piślāghyo bhuvana-bhaya-bhaṅga-vyasaninaḥ //

अन्वयः- त्रिनयन! अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुर-कृपाविधेयस्य विषं संहृतवतः तव कण्ठे कल्माषः आसीद्। स तव श्रियम् न कुरुते इति न। अहो! भुवनभयभङ्गव्यसनिनः विकारः अपि श्लाघ्यः।

हे त्र्यम्बक! सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अचानक संहार से भयभीत हुए देव और दानवों पर दया के वशीभूत होकर विष का पान करने से आपका गला काला पड़ गया है। वह क्या आपकी शोभा को नहीं बढ़ाता है? अर्थात् बढ़ाता है। वस्तुतः ब्रह्माण्ड के भय को दूर करने में संलग्न सज्जन का विकार भी प्रशंसनीय होता है।

O three-eyed Lord, when poison came up through the churning of the ocean by the Gods and the Demons, they were all aghast with fear as if the untimely end of all creation was imminent. In Your kindness You drank all poison which still makes Your throat blue. O lord, even this blue mark does but increase Your glory. What is apparently a blemish becomes an ornament in One intent on ridding the world of all fear.

**असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।।15।।**

*asiddhārthā naiva kvacidapi sadevasuranare
nivartante nityaṃ jagati jayino yasya viśikhāḥ I
sa paśyannīśa tvāmitarasurasādhāraṇamabhūt
smaraḥ smartavyātmā nahi vaśiṣu pathyaḥ paribhavaḥ II*

अन्वयः- **ईश! जयिनः यस्य विशिखाः सदेवासुरनरे जगति क्वचिदपि नित्यम् असिद्धार्थाः न एव निवर्तन्ते, त्वाम् इतरसुरसाधारणम् पश्यन् स एव स्मरः स्मर्तव्यात्मा अभूत्। हि वशिषु परिभवः पथ्यः न (भवति)।**

हे महेश! सदा विजय प्राप्त करने वाले जिस कामदेव के तीखे बाण देव-असुर-मानव से परिपूर्ण जगत् में कहीं से भी सदा कार्य किए बिना नहीं लौटते, वह कामदेव आपको अन्य देवताओं की तरह साधारण देव समझता हुआ नाममात्र का हो गया, अर्थात् मारा गया। निश्चित है कि जितेन्द्रियों का अपमान कल्याणकारी नहीं होता ।

O Lord, Cupid is well-known for his shafts prevailing over the gods, the asuras and men alike, everywhere and at all times, but when he thought You were like an ordinary god, he was instantly reduced to ashes. Those who have power over their senses, never face defeat.

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।।16।।

mahī pādāghātād vrajati sahasā saṁśayapadaṃ
padaṃ viṣṇorbhrāmyad bhujaparīgharugṇagrahagaṇam /
muhurdyaurdausthyaṃ yātyanibhṛtajaṭātāḍitataṭā
jagadrakṣayai tvaṃ naṭasi nanu vāmaiva vibhutā //

अन्वयः- ननु त्वम् जगद्रक्षायै नटसि (तथापि) मही पादाघातात् सहसा संशयपदम् व्रजति, विष्णोः पदम् भ्राम्यद् भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् (व्रजति), अनिभृतजटाताडिततटा द्यौः मुहुः दौस्थ्यम् याति। विभुता ननु वामा एव।

यद्यपि आप जगत् की रक्षा के लिए नृत्य (ताण्डव) करते हैं, तथापि पृथ्वी नृत्यकाल में होने वाले पाद के आघात से अचानक सन्देह को प्राप्त हो जाती है (कि नीचे न धँस जाऊँ), विष्णु भगवान् का पद अर्थात् आकाश घूमती हुई भुजाओं की चोट से इधर-उधर उछलते हुए ग्रहों वाला हो जाता है, खुली हुई जटाओं के झटके खाये हुए किनारों वाला स्वर्ग दुरवस्था को प्राप्त हो जाता है, क्योंकि वैभव विपरीत ही हुआ करता है।

Even though You dance for the prosperity of the world, the entire earth trembles under the tread of Your footsteps, the star-bespangled sky is in turmoil due to the lashing of your arms and the movement of Your uncontrolled matted locks perturbs even the abode of gods. Indeed, the actions of the Great are incomprehensibly mysterious.

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।।17।।

viyadvyāpī tārāgaṇa - guṇitaphenodgamaruciḥ
pravāho vārāṃ yaḥ pṛṣatalaghudṛṣṭaḥ śirasi te ।
jagaddvīpākāraṃ jaladhivalayaṃ tena kṛtami-
tynenaivonneyaṃ dhṛtamahimadivyaṃ tava vapuḥ ॥

अन्वयः - **वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः वारां यः प्रवाहः, ते शिरसि पृषतलघुदृष्टः, तेन जगद् जलधिवलयं द्वीपाकारं कृतम् इति अनेन एव तव दिव्यं वपुः धृतमहिम (इति) उन्नेयम्।**

पूरे आकाश में व्याप्त तथा तारागणों की चमक से बढ़ी हुई चमकवाली फेन से युक्त जल (आकाशगंगा) का जो प्रवाह आपके शिर में छोटी सी बूँद के समान दिखाई पड़ता है, उसी जलप्रवाह ने पृथ्वी को समुद्र से घेर कर द्वीप के आकार का बना दिया। इसी से ही आपका अलौकिक शरीर महिमा को धारण करने वाला है, यह सिद्ध है।

That Heaven-pervading stream (Ganga–the milky way), whose white foam gets added lustre from the glimmering stars, becomes a small drop on Your matted locks. Yet, that stream has divided the World into seven Continents and has put a girdle of oceans round the earth. From this, one can easily guess how great Your divine glory is!

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।।18।।

rathaḥ kṣoṇī yantā śatadhṛtiragendro dhanuratho
rathāṅge candrārkau rathacaraṇapāṇiḥ śara iti /
didhakṣoste ko'yaṃ tripuratṛṇamāḍambaravidhir-
vidheyaiḥ krīḍantyo na khalu paratantrāḥ prabhudhiyaḥ //

अन्वयः – क्षोणी रथः, शतधृतिः यन्ता, अगेन्द्रो धनुः, चन्द्रार्कौ रथाङ्गे, अथो रथचरणपाणिः शरः इति त्रिपुरतृणं दिधक्षोः ते अयम् आडम्बरविधिः कः? खलु विधेयैः क्रीडन्त्यः प्रभुधियः परतन्त्राः न।

पृथ्वी को रथ, ब्रह्मा को सारथि, सुमेरु पर्वत को धनुष, सूर्य व चन्द्रमा को रथ के दो पहिये तथा चक्रपाणि भगवान् विष्णु को बाण बनाकर तृण के समान त्रिपुरासुर को जलाने के इच्छुक आप शंकर की यह आडम्बर रचना किसलिए थी? वास्तविकता यह है कि अपने अधीन पदार्थों से (निष्प्रयोजन) खेलती हुई प्रभु की बुद्धियाँ पराधीन नहीं कही जा सकतीं।

What paraphernalia did You employ in destroying the Demon Tripura whom You could effortlessly burn like a piece of grass–the earth was the chariot, Brhama the Charioteer, the Meru Mountain the bow, Lord Vishnu the arrow, and the Sun and the Moon the two wheels of the Chariot. Surely the Lord is all powerful to do what He wills; yet he delights his devotees by such sport.

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।।19।।

hariste sāhasraṃ kamalabalimādhāya padayor-
yadekone tasmin nijamudaharannetrakamalam /
gato bhaktyudrekaḥ pariṇatimasau cakravapuṣā
trayāṇāṃ rakṣāyai tripurahara jāgarti jagatām //

अन्वयः - हे त्रिपुरहर! हरिः ते पदयोः साहस्त्रं कमलबलिम् आधाय तस्मिन् एकोने निजम् नेत्रकमलम् यद् उदहरत् असौ भक्त्युद्रेकः चक्रवपुषा परिणतिं गतः त्रयाणां जगतां रक्षायै जागर्ति।

हे त्रिपुरहर! विष्णु भगवान् ने आपके चरणों में एक हजार कमलपुष्पों का उपहार भेंट करने का नियम बनाया और एक दिन उन कमलपुष्पों में से एक कम हो जाने पर अपने नेत्र कमल को निकालकर जो भेंट किया, वही भक्ति का आवेग सुदर्शनचक्र के रूप में परिवर्तित होकर तीनों लोकों की रक्षा के लिए सदा सावधान रहता है।

O destroyer of the 'Tripura' when Vishnu was offering You a Thousand lotus flowers and found just one flower-less, He pulled out His lotus eye to offer it at Your feet. This devotion, since transformed into the divine disc called "Sudarshana" is ever awake to protect the World (from all evils).

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवम्
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः।।20।।

kratau supte jāgrattvamasi phalayoge kratumatāṃ
kva karma pradhvastaṃ phalati puruṣārādhanamṛte I
atastvāṃ samprekṣya kratuṣu phaladānapratibhuvaṃ
śrutau śraddhāṃ baddhvā dṛḍhaparikaraḥ karmasu janaḥ II

अन्वयः - **क्रतुमतां क्रतौ सुप्ते फलयोगे त्वं जाग्रत् असि। प्रध्वस्तं कर्म पुरुषाराधनम् ऋते क्व फलति? अतः त्वां क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं सम्प्रेक्ष्य जनः श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कर्मसु दृढपरिकरः (भवति)।**

यज्ञादि कर्म करनेवालों के यज्ञादि क्रियाकलाप के नष्ट हो जाने पर भी फल देने के लिए आप जागते रहते हैं। नष्ट हुआ कर्म चेतनपुरुष (शिव) की आराधना के बिना क्या फल दे सकता है? अर्थात् नहीं दे सकता। भाव यह है कि कर्म स्वयं या उससे उत्पन्न जड़ अदृष्ट बिना चेतन के फल नहीं दे सकता। इसीलिए आपको यज्ञादि कर्म के फल देने का उत्तरदायी देखकर मनुष्य वेदों में श्रद्धा को दृढ़ बनाकर कर्मों में दृढ़ता से तत्पर रहते हैं।

Sacrificial worship, like all actions is instantly destroyed (according to Philosophers). Even so You are ever awake to reward worshippers for it. Such worship can, indeed bear no fruit, except when accompanied by devotion to the Lord. Finding You an alert and competent security for rewarding them, people engage themselves in such sacrifices, with full faith in Vedas.

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता -
मृषीणामार्त्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः।।21।।

kriyādakṣo dakṣaḥ kratupatiradhīśastanubhṛtā
mṛṣīṇāmārtvijyaṃ śaraṇada sadasyāḥ suragaṇāḥ /
kratubhraṁśastvattaḥ kratuphalavidhānavyasanino
dhruvaṃ kartuḥ śraddhāvidhuramabhicārāya hi makhāḥ //

अन्वयः - **हे शरणद! क्रियादक्षः तनुभृताम् अधीशः दक्षः क्रतुपतिः ऋषीणाम् आर्त्त्विज्यम् सुरगणाः सदस्याः, क्रतुफलविधानव्यसनिनः त्वत्तः क्रतुभ्रंशः (जातः)। ध्रुवम् हि कर्तुः श्रद्धाविधुरं मखाः अभिचाराय।**

हे शरणद! जिस यज्ञ में कर्मकाण्ड में निपुण देहधारियों का स्वामी राजा दक्ष प्रजापति स्वयं यजमान था, त्रिकालदर्शी ऋषि ऋत्विज् थे और देवगण सदस्य थे, यज्ञादिकर्मों का फल देने के स्वभाव वाले आपके द्वारा वह यज्ञ विनष्ट हो गया। निश्चय ही, कर्त्ता की श्रद्धा के बिना किए गए यज्ञ विपरीत फल देते हैं।

O giver of refuge, Daksha Prajapati conducted that celebrated sacrifice in which he himself, an expert in these practices, was the worshipper; great sages were the priests and all the gods including Brahma were invitees. Nevertheless, it was destroyed by You, insted of rewarding the worshipper. Certainly, without real devotion, sacrifices can produce nothing but destruction of the worshipper.

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम्
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।।22।।

prajānāthaṃ nātha prasabhamabhikaṃ svāṃ duhitaraṃ
gataṃ rohidbhūtāṃ riramayiṣumṛṣyasya vapuṣā /
dhanuṣpāṇeryātaṃ divamapi sapatrakṛtamamuṃ
trasantaṃ te'dyāpi tyajati na mṛgavyādharabhasaḥ //

अन्वयः - हे नाथ! स्वां दुहितरं रोहिद्भूतां ऋष्यस्य वपुषा गतं प्रसभं रिरमयिषुम् अभिकं प्रजानाथं ते अपि धनुष्पाणेः मृगव्याधरभसः सपत्राकृतम् दिवं यातं त्रसन्तम् अमुम् अद्य अपि न त्यजति।

हे नाथ! अपनी पुत्री के मृगी बन जाने पर मृग का शरीर धारण कर बलपूर्वक उससे रमण करने की इच्छा वाले कामुक ब्रह्मा पर आपने धनुष धारण कर निपुण शिकारी की तरह अचूक बाण छोड़ा। मृगशिरा नक्षत्र बनकर आकाश में गये भयभीत ब्रह्मा को वह बाण आर्द्रा नक्षत्र बनकर आज भी नहीं छोड़ता।

O Lord, even today, the Star Hunter chasing the deer-constellation is in the sky due to Your ever vigilant arrow chasing and afflicting, Brahma for his amorous designs on his daughter who assumed the form of a doe to escape him.

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।।23।।

svalāvaṇyāśaṃsādhṛta - dhanuṣamahnāya tṛṇavat
puraḥ pluṣṭaṃ dṛṣṭvā puramathana puṣpāyudhamapi I
yadi straiṇaṃ devī yamanirata dehārdhaghatanā-
davaiti tvāmaddhā bata varada mugdhā yuvatayaḥ II

अन्वयः - हे पुरमथन! हे यमनिरत! स्वलावण्याशंसाधृतधनुषं पुष्पायुधं पुरः तृणवत् अह्नाय प्लुष्टं दृष्ट्वा अपि देवी देहार्धघटनाद् यदि त्वां स्त्रैणम् अवैति हे वरद! अद्धा। बत युवतयः मुग्धाः।

हे त्रिपुरमथन! हे योगिन्! पार्वती के सौन्दर्य से आपको वश में करने की आशा से धनुष उठाये हुए कामदेव को अपने सामने तिनके की तरह तुरन्त जलता हुआ देखकर भी जगदम्बा पार्वती अर्द्धनारीश्वर रूप में धारण करने से यदि आपको स्त्री में आसक्त मानती हैं, तो हे वरद! यह ठीक है, क्योंकि युवतियाँ भोली होती हैं।

O destroyer of 'Tripura'! O self controller! having herself seen that Cupid, who had raised his shafts against You on the strength of her own physical charm, was destroyed instantaneously, Devi Parvati should not think that You are slave to feminine grace, on seeing Your occasional half-female form. Alas! these young ladies are innocent.

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमाङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि।।24।।

śmaśāneṣvākrīḍā smarahara piśācāḥ sahcarā -
ścitābhasmālepaḥ sragapi nṛkaroṭīparikaraḥ /
amāṅgalyaṃ śīlaṃ tava bhavatu nāmaivamakhilaṃ
tathāpi smartṝṇāṃ varada paramaṃ maṅgalamasi //

अन्वयः - हे स्मरहर! श्मशानेषु आक्रीडा, पिशाचाः सहचराः, चिताभस्म आलेपः, अपि नृकरोटीपरिकरः स्रक्। एवं तव अखिलं शीलम् अमाङ्गल्यं नाम भवतु, तथापि हे वरद! स्मर्तॄणां परमं मङ्गलम् असि।

हे कामनाशक! श्मशानों में आपका विहार होता है, भूतप्रेत आपके साथी हैं, चिता की राख आपके शरीर का लेप है, और मनुष्यों की खोपड़ियों की माला पहनते हैं। हे वरद! इस प्रकार आपके सारे आचरण अमाङ्गलिक होते हुए भी स्मरण करने वालों के लिए आप परम कल्याणकारी हैं।

O Destroyer of Cupid, Your actions seem inauspicious because you sport in the burning ghat, in the companionship of goblins, applying the ashes of funeral pyres on the body or putting on a garland of human skulls etc. etc. but O lord, for those who remember You, You are the Highest Bliss.

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्।।25।।

manaḥ pratyakcitte savidhamavadhāyāttamarutaḥ
prahṛṣyadromāṇaḥ pramadasalilotsaṅgitadṛśaḥ /
yadālokyāhlādaṃ hrada iva nimajjyāmṛtamaye
dadhatyantastattvaṃ kimapi yaminastat kila bhavān //

अन्वयः - यमिनः सविधम् आत्तमरुतः मनः प्रत्यक्चित्ते अवधाय यत् किम् अपि तत्त्वम् आलोक्य प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः अमृतमये ह्रदे निमज्ज्य इव अन्तः आह्लादं दधति तत् किल भवान्।

योगिगण विधिपूर्वक प्राणायाम करते हुए मन को अन्तरात्मा में एकाग्र कर जिस किसी भी तत्त्व का दर्शन करके रोमाञ्चित व हर्षाश्रुपूरितनेत्रों वाले होकर अमृतमय सरोवर में निमग्न हुए से अपने अन्दर ही परमसुख को प्राप्त करते हैं, वह आप ही हैं।

When Yogis with self-restraint deliberately and systematically withdraw their sense from the sense-objects and look inward, they reach the stage of Samadhi (deep meditation) through various forms of breath-control, their hair standing erect and their eyes filled with joyous tears,. You are that Bliss which they visualise with indescribable thrill in their innermost heart, as if they are immersed in nectar.

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।।26।।

tvamarkastvaṃ somastvamasi pavanastvaṃ hutavahas-
tvamāpastvaṃ vyoma tvamu dharaṇirātmā tvamiti ca /
paricchinnāmevaṃ tvayi pariṇatā bibhratu giraṃ
na vidmastattattvaṃ vayamiha tu yattvaṃ na bhavasi //

अन्वयः - त्वम् अर्कः, त्वम् सोमः, त्वं पवनः, त्वम् हुतवहः, त्वम् आपः, त्वं व्योम, त्वम् धरणिः, त्वम् उ आत्मा च असि इति एवम् त्वयि परिच्छिन्नां गिरं परिणताः बिभ्रतु, वयम् तु इह तत् तत्त्वं न विद्मः यत् त्वम् न भवसि।

आप सूर्य हैं, आप चन्द्रमा हैं, आप वायु हैं, आप अग्नि हैं, आप जल हैं, आप आकाश हैं, आप पृथ्वी हैं और आप ही आत्मा हैं - इस प्रकार विद्वान् लोग आपके बारे में सीमित वाणी बोलते रहें लेकिन हम जगत् में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जानते जो आप न हों। अर्थात् आप अपरिच्छिन्न हैं।

The learned may use such diffused terminology in describing You, as You are the Sun, the Moon, Wind, Fire, or that You are the Sky, the Earth, or the Atman etc. We, however, do not know of any element here which is not You.

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम्।।27।।

trayīṃ tisro vṛttīstribhuvanamatho trīnapi surā-
nakārādyair - varṇais - tribhirabhidadhattīrṇavikṛti I
turīyaṃ te dhāma dhvanibhiravarundhānamaṇubhiḥ
samastaṃ vyastaṃ tvāṃ śaraṇada gṛṇātyomitipadam II

अन्वयः - हे शरणद! त्रयीं, तिस्रो वृत्तीः, त्रिभुवनम् अथो, त्रीन् सुरान् अपि अकारद्यैः त्रिभिः वर्णैः अभिदधत्, (तथा च) तीर्णविकृति तुरीयं ते धाम अणुभिः ध्वनिभिः अवरुन्धानम् ओम् इति पदम् त्वां समस्तं व्यस्तं गृणाति।

हे शरणदाता! तीनों वेदों (ऋक् यजुः, साम,) तीन अवस्थाओं (जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति), तीनों भुवनों (भूः,भुवः, स्वः) और तीनों देवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को अ-उ-म् इन तीन वर्णों से (सर्व विकारातीत अवस्थात्रय से परे) बोध कराने वाला 'ॐ' यह पद समस्त रूप में भी और व्यस्त रूप में भी आप ही को प्रतिपादित करता है।

O giver of refuge, the 'A-U-M' (ॐ) is a complete description of You in the integrated abstract form as well as in diversified forms. The three Vedas, the three attitudes, the three World and the three Gods are all described by the three letters of the term 'A-U-M'. The same letter also describes Your fourth Transcendental Form. i.e. Eternal Consciousness.

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव! श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते।।28।।

bhavaḥ śarvo rudraḥ paśupatirathograḥ saha mahāṁs-
tathā bhīmeśānāviti yadabhidhānāṣṭakamidam /
amuṣmin pratyekaṃ pravicarati deva! śrutirapi
priyāyāsmai dhāmne praṇihitanamasyo'smi bhavate //

अन्वयः - **हे देव! भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिः उग्रः सहमहान् तथा भीमेशानौ इति इदम् यद् अभिधानाष्टकम् अमुष्मिन् प्रत्येकम् श्रुतिः अपि प्रविचरति अथ अस्मै प्रियाय धाम्ने भवते प्रणिहितनमस्यः अस्मि।**

हे देव! भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महादेव, भीम तथा ईशान ये जो आपके आठ नाम हैं, उनमें से एक-एक का क्रमशः वेदशास्त्र भी (स्मृति, पुराण, आदि तो करते ही हैं) विशेष बोध कराते हैं। उस परमानन्दस्वरूप स्वप्रकाशस्वरूप आपको विधिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

O Lord, You are denoted by eight separate names, viz. Bhava, Sharva, Rudra, Pashupati, Ugra, Mahadeva, Bheema and Ishan. The Vedas attempt to explain each name. I can only offer my humble salutations to You who are the Self-illumined Eternal Cosciousness and the Resort of all devotees.

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।।29।।

namo nediṣṭhāya priyadava daviṣṭhāya ca namo
namaḥ kṣodiṣṭhāya smarahara mahiṣṭhāya ca namaḥ I
namo varṣiṣṭhāya trinayana yaviṣṭhāya ca namo
namaḥ sarvasmai te tadidamiti śarvāya ca namaḥ II

अन्वयः - **हे प्रियदव! नेदिष्ठाय दविष्ठाय च (ते) नमो नमः।**
हे स्मरहर! क्षोदिष्ठाय महिष्ठाय च (ते) नमो नमः।
हे त्रिनयन! वर्षिष्ठाय यविष्ठाय च (ते) नमो नमः।
सर्वस्मै तदिदमिति शर्वाय च ते नमो नमः।

हे वनों से प्रेम करने वाले! समीपातिसमीप और दूरातिदूर आपको बारम्बार नमस्कार है। हे कामान्तक! सूक्ष्मातिसूक्ष्म और महत्तम आपको बारम्बार नमस्कार है। हे त्रिनेत्र! वृद्धातिवृद्ध और युवकातियुवक आपको बारम्बार नमस्कार है। हे सर्वरूप! अखिल जगत् के अधिष्ठान आपको बारम्बार नमस्कार है।

O Lover of lonely forests, I bow down to you as a Presence that is the Farthest as well as the Nearest, the Smallest as well as the Greatest, the Oldest as well as the Youngest; indeed I bow down to one that can be described only as All.

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।30।।

bhahularajase viśvotpattau bhavāya namo namaḥ
prabalatamase tatsaṁhāre harāya namo namaḥ /
janasukhakṛte sattvodriktau mṛḍāya namo namaḥ
pramahasi pade nistraiguṇye śivāya namo namaḥ //

अन्वयः - विश्वोत्पतौ बहुलरजसे भवाय नमो नमः। तत्संहारे प्रबलतमसे हराय नमो नमः। जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः। प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।

सृष्टि की उत्पत्ति के लिए रजोगुण-प्रधान ब्रह्मारूप आपको बारम्बार नमस्कार है। सृष्टि का संहार करने के लिए तमोगुणप्रधान रुद्ररूप आपको बारम्बार नमस्कार है। लोगों को सुख देने के लिए सत्त्व प्रधान सुखमय आप को बारम्बार नमस्कार है। मायारहित ज्योतिर्मय त्रिगुणातीत मोक्षपद की प्राप्ति के लिए कल्याणरूप आपको बारम्बार नमस्कार है।

You assumed the form of Brahma with the predominance of "Rajoguna" for creation: the form of Rudra with the dominance of "Tamoguna" for its destruction: and the form of Vishnu with predominance of "Satvaguna" for its happiness. But, for salvation and elevation above the three gunas and beyond the reach of Maya, is the resplendent form of Shiva: I offer my obeisance and seek refuge in You.

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।।31।।

kṛśapariṇati cetaḥ kleśavaśyaṃ kva cedaṃ
kva ca tava guṇasīmollaṅghinī śaśvadṛddhiḥ /
iti cakitamamandīkṛtya mām bhaktirādhād-
varada caraṇayoste vākyapuṣpopahāram //

अन्वयः - हे वरद! कृशपरिणति क्लेशवश्यम् इदं चेतः च क्व गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वत् तव ऋद्धिः च क्व इति चकितं माम् अमन्दीकृत्य भक्तिः ते चरणयोः वाक्यपुष्पोपहारम् आधात्।

हे वरद! अल्प परिणाम वाला क्लेशों के अधीन यह मेरा चित्त कहाँ और गुणों की सीमा से अधिक तथा नित्य आपकी विभूति कहाँ, इस प्रकार आश्चर्य में पड़े (असमर्थ) मुझको योग्य बनाकर आपके चरणों की भक्ति ने, आपके चरणों में वाक्यरूपपुष्पों की भेंट अर्पित कराई है।

O giver of all boons, on the one hand is my mind, immature and afflicted, on the other is Your Eternal Indescribable Glory. Amazed and puzzled I have been impelled by my devotion to present these verbal flowers (in the form of this hymn) at Your feet.

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरु-वर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।32।।

asitagirisamaṃ syāt kajjalaṃ sindhupātre
surataru-vara-śākhā lekhanī patramurvī /
likhati yadi gṛhītvā śāradā sarvakālaṃ
tadapi tava guṇānāmīśa pāraṃ na yāti //

अन्वयः - **हे ईश! यदि सिन्धुपात्रे असितगिरिसमं कज्जलम् सुरतरुवरशाखा लेखनी उर्वी (च) पत्रम् स्यात् (तथा) शारदा गृहीत्वा सर्वकालं लिखति, तद् अपि तव गुणानां पारं न याति।**

हे प्रभो! यदि समुद्ररूप दवात में काला पर्वत स्याही बने, कल्पवृक्ष की मोटी-मोटी शाखाएँ कलम बनें और पृथ्वी कागज बने तथा साक्षात् सरस्वती इन सबको लेकर निरन्तर लिखती रहें तो भी आपके गुणों का पार नहीं पाया जा सकता।

If the Goddess of learning herself were to write about Your glory on the vast earth with a pen prepared from the "Kalpa-T aru" and using the ocean as an ink-pot with mountains of ink-powder till the end of time, she will still not succeed in describing Your glory fully.

असुर-सुर-मुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
ग्रंथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।।33।।

asura - sura - munīndrairarcitasyendumauler -
grathita - guṇa - mahimno nirguṇasyeśvarasya /
sakala-gaṇa-variṣṭhaḥ puṣpadantābhidhāno
ruciramalaghu-vṛttaiḥ stotrametaccakāra //

अन्वयः - असुरसुरमुनीन्द्रैः अर्चितस्य इन्दुमौलेः ग्रथितगुणमहिम्नः निर्गुणस्य ईश्वरस्य एतद् रुचिरं स्तोत्रम् पुष्पदन्ताभिधानः सकलगणवरिष्ठः अलघुवृत्तैः चकार।

राक्षसों, देवताओं व मुनीन्द्रों द्वारा पूजित, मस्तक पर चन्द्रमा धारण किये हुए, गुणगणमहिमा से युक्त, निर्गुण आप महादेव भगवान् का यह मनोहारी स्तोत्र पुष्पदन्तनामक सर्व-गन्धर्वगणोंमें श्रेष्ठ गन्धर्वराज ने बड़े श्लोकों से किया।

The foremost of the Gandharvas named Pushpadanta, has composed these longish and majestic verses in praise of Lord Shiva who is worshipped alike by the demons, the Gods and sages of repute, although the Lord is `Nirguna' (i.e. without any attributes.)

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च।।34।।

aharaharanavadyaṃ dhūrjateḥ stotrametat
paṭhati paramabhaktyā śuddhacittaḥ pumān yaḥ I
sa bhavati śivaloke rudratulyas tathā'tra
pracuratara dhanāyuḥ putravān kīrtimāṁśca II

अन्वयः - **शुद्धचित्तः यः पुमान् धूर्जटेः अनवद्यम् एतत् स्तोत्रम् अहः अहः परमभक्त्या पठति स अत्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्त्तिमान् च भवति तथा शिवलोके रुद्रतुल्यः (भवति)।**

पवित्र हृदयवाला जो मनुष्य जटाधारी शिव के परम-पवित्र इस स्तोत्र को प्रतिदिन परमभक्तिपूर्वक पढ़ता है, वह इस लोक में अत्यधिक धन आयुवाला, पुत्रों वाला व यशस्वी होता है तथा शिवलोक में शिव के समान होता है।

Whoever recites this sacred hymn everyday with sincerity and devotion reaches the Shivaloka after death and becomes equal to Lord Shiva himself. Here, in his life, he gets prosperity, Long life, progeny and glory.

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।35।।
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।36।।

maheśānnāparo devo mahimno naparā stutiḥ /
aghorānnāparo mantro nāsti tattvaṃ guroḥ param //
dīkṣā dānaṃ tapastīrthaṃ jñanaṃ yāgādikāḥ kriyāḥ /
mahimnaḥ stavapāṭhasya kalāṃ nārhanti ṣoḍaśīm //

अन्वयः - महेशाद् अपरः देवः न (अस्ति), महिम्नः अपरा स्तुतिः न (अस्ति), अघोराद् अपरः मन्त्रः न (अस्ति) गुरोः परम् तत्त्वं न अस्ति।

अन्वयः - दीक्षा दानं तपः तीर्थम् ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः महिम्नः स्तवपाठस्य षोडशीं कलां न अर्हन्ति।

महेश्वर से बढ़कर और कोई देवता नहीं है, महिम्न से बढ़कर और कोई स्तुति नहीं है, अघोर मन्त्र से बढ़कर और कोई मन्त्र नहीं है, गुरु से बढ़कर और कोई तत्त्व नहीं है।

दीक्षा लेना, दान, तप, तीर्थ, ज्ञान, तथा यज्ञ आदि क्रियाएँ 'महिम्नः स्तोत्र' के पाठ की सोलहवीं कला के भी बराबर नहीं हैं।

There is no God mightier than Lord Shiva, nor is there any hymn holier than this "Mahimna-stotra", there is no 'mantra' more powerful than the 'Aghoramantra', nor is any truth superior to the preceptor.

Consecrations, charities, penances, pilgrimages, attainment of knowledge and sacrificial offerings – none of these pieties can equal even a sixteenth portion of the merit earned by reciting this hymn.

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्-
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः।।37।।

kusumadaśana - nāmā sarva - gandharvarājaḥ -
śiśuśaśadhara - maulerdevadevasya dāsaḥ /
sa khalu nijamahimno bhraṣṭa evāsya roṣāt -
stavanamidamakārṣīddivyadivyaṃ mahimnaḥ //

अन्वयः - शिशुशशधरमौलेः देवदेवस्य दासः कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः अस्य रोषात् खलु निजमहिम्नः भ्रष्टः स एव महिम्नः इदं दिव्यदिव्यं स्तवनम् अकार्षीत्।

मस्तक पर बाल चन्द्रमा को धारण करने वाले देवों के देव शङ्कर का एक भक्त पुष्पदन्त नाम वाला गन्धर्वों का राजा था, वह इन्हीं शङ्कर जी के क्रोध से ही अपनी महिमा से गिर गया। फिर अपने दिव्य पद की प्राप्ति के लिए उसने ही, शिव भगवान् की महिमा के इस परमदिव्य स्तोत्र की रचना की।

The Gandharva-king named Pushpadanta, a servant of the great Lord Shiva, who bears the crescent moon on his head, had once fallen from his greatness having incurred the Lord's displeasure. He then composed this sublime tribute to the glory of the Lord (to regain his lost status).

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्।।38।।

suravara - munipūjyaṃ svargamokṣaikahetuṃ
paṭhati yadi manuṣyaḥ prāñjalirnānyacetāḥ /
vrajati śivasamīpaṃ kinnaraiḥ stūyamānaḥ
stavanamidamamoghaṃ puṣpadantapraṇītam //

अन्वयः - पुष्पदन्तप्रणीतम् अमोघम् सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुम् इदं स्तवनम् यदि मनुष्यः प्राञ्जलिः नान्यचेताः पठति, किन्नरैः स्तूयमानः शिवसमीपं व्रजति।

पुष्पदन्त द्वारा बनाये हुए, निष्फल न होने वाले, बड़े-बडे देवताओं और मुनियों द्वारा पूजनीय, स्वर्ग और मोक्ष के एक मात्र उपाय इस स्तोत्र को यदि मनुष्य हाथ जोड़कर तथा एकाग्रचित्त होकर पढ़ता है तो वह किन्नरों द्वारा प्रशंसा प्राप्त करता हुआ शिव जी के पास जाता है।

This hymn is praised by gods and sages alike as He is the only means of attaining heavenly salvation. If a person recites it in all humility and with concentrated mind, he attains the vicinity of Lord Shiva while kinnaras singing in his praise. This hymn composed by Pushpadanta is unfailing.

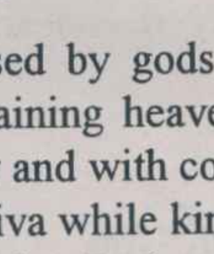

श्रीपुष्पदन्त – मुखपङ्कज – निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।।39।।

śrīpuṣpadanta - mukhapaṅkaja - nirgatena
stotreṇa kilviṣahareṇa harapriyeṇa /
kaṇṭhasthitena paṭhitena samāhitena
suprīṇito bhavati bhūtapatirmaheśaḥ //

अन्वयः – श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन किल्विषहरेण हरप्रियेण स्तोत्रेण कण्ठस्थितेन समाहितेन पठितेन भूतपतिः महेशः सुप्रीणितः भवति।

श्रीपुष्पदन्त के मुखकमल से निकले हुए निखिल पापों का नाश करने वाले शिवजी के प्रिय इस स्तोत्र को कण्ठस्थ कर एकाग्रचित्त हो पाठ करने से भूतनाथ महेशजी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

This hymn sung by Shri Pushpadanta removes all evil propensities and is dear to the Lord. Whoever learns it by heart and recites it carefully is endeared to the Lord of all creatures.

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।।40।।

ityeṣā vāṅmayī pūjā śrīmacchaṅkarapādayoḥ /
arpitā tena deveśaḥ prīyatāṃ me śadāśivaḥ //

अन्वयः- **इति एषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः अर्पिता, तेन सदाशिवः देवेशः मे प्रीयताम्।**

यह शब्दमयी पूजा श्री शङ्कर भगवान् के चरणों में समर्पित है। इससे सदा कल्याण करने वाले महादेव मुझ पर प्रसन्न हों।

This poetic tribute is dedicated at the feet of the great Lord. May He be pleased with me!

पुरुषसूक्तम् (शुक्लयजुर्वेद)
Puruṣasūktam (Śuklayajurveda)

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिꣳ सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

sahasraśīrṣā puruṣaḥ sahasrākṣaḥ sahasrapāt /
sa bhūmiṃ sarvataspṛtvātyatiṣṭhaddaśāṅgulam //

अन्वयः - पुरुषः सहस्रशीर्षा सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं सर्वतः स्पृत्वा दशाङ्गुलम् अति अतिष्ठत्।

परमपुरुष असंख्य सिर वाला, असंख्य नेत्रों वाला तथा असंख्य पैरों वाला है। यह पृथ्वी को चारों ओर से व्याप्त कर (उससे भी) दस अङ्गुल परिमाण में अधिक है।

Thousand headed Purusha, thousand eyed, thousand footed having pervaded the earth on all sides, he still extends ten fingers beyond it.

पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

puruṣa evedaṃ sarvaṃ yadbhūtaṃ yacca bhāvyam /
utāmṛtatvasyeśāno yadannenātirohati //

अन्वयः - इदं सर्वं यत् भूतं यत् च भाव्यं पुरुषः एव। (सः) अमृतत्वस्य ईशानः उत् यत् अन्नेन अतिरोहति।

यह सब, जो हो गया है और जो होगा, पुरुष ही है, यह अमरत्व का स्वामी है, तथा जो अन्न से समृद्ध होता है उसका भी है।

Purusha alone is all this-whatever has been and whatever is going to be. Further, he is the lord of immortality and also of what grows on account of food.

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

etāvānasya mahimāto jyāyāṃśca pūruṣaḥ /
pādo'sya viśvā bhūtāni tripādasyāmṛtaṃ divi //

अन्वयः - **एतावान् अस्य महिमा, अतः ज्यायान् च पूरुषः अस्य पादः विश्वा भूतानि, अस्य त्रिपात् अमृतं दिवि।**

उसकी इतनी महिमा है, और इससे भी बड़ा पुरुष है। उसके एक चतुर्थांश में सम्पूर्ण लोक है और तीन चतुर्थांश अमर, जो आकाश में है।

Such is his greatness; greater, indeed, than this is Purusha all creatures constitute but one-quarter of him, his three, quarters are the immortal in the heaven.

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

tripādūrdhva udaitpuruṣaḥ pādo'syehābhavatpunaḥ /
tato viṣvaṅ vyakrāmat-sāśanānaśane abhi //

अन्वयः- **त्रिपात् पुरुषः ऊर्ध्व उद् ऐत् अस्य पादः पुनः इह अभवत्। ततः विष्वङ् साशनाशने अभि वि अक्रामत्।**

तीन चतुर्थांश के साथ पुरुष ऊपर चला गया फिर भी एक चतुर्थांश

यहीं पर रह गया है। उससे उसने अपने को जीव, निर्जीव सभी रूपों में चारों तरफ फैलाया।

With his three-quarters did Purusha rise up; one-quarter of him again remains here. With it he spread out on all sides over what eats and eats not.

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

tato virāḍajāyata virājo adhi pūruṣaḥ /
sa jāto atyaricyata paścādbhūmimatho puraḥ //

अन्वयः - ततः विराट् अजायत विराजः अधि पूरुषः (अजायत)। स जातो (एव) अति अरिच्यत, पश्चात् भूमिम् अथो पुरः।

उस (तीन चतुर्थांश) से विराट् उत्पन्न हुआ, विराट् से जीवात्मा रूप पुरुष उत्पन्न हुआ। होते ही उसने अपने को देव, मनुष्य आदि रूपों में विराट् से अलग कर लिया। इसके बाद पृथिवी को (उत्पन्न किया), बाद में शरीर का निर्माण किया।

From him was Virat born, from the Virat evolved Purusha. He, being born, projected himself (from Virat), then (he created) the earth and then the bodies.

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।6।।

tasmādyajñātsarvahutaḥ sambhṛtaṃ pṛṣadājyam /
paśūṃstāṃścakre vāyavyānāraṇyā grāmyāśca ye //

अन्वयः- तस्मात् सर्वहुतः यज्ञात् पृषदाज्यं सम्भृतम् तस्मात् वायव्यान् आरण्या पशून् ये च ग्राम्याः तान् चक्रे।

उस सर्वहुत यज्ञ से दधिमिश्रित घृत को संग्रह किया, जिससे आकाश में रहने वाले, जंगलों में रहने वाले और गाँवों में रहने वाले पशुओं को उत्पन्न किया।

From that sarvahut sacrifice, the butter mixed with curd was gathered up. He created these creatures of the air, of the forests, and those of the villages.

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।7।।

tasmādyajñātsarvahuta ṛcaḥ sāmāni jajñire /
chandāṃsi jajñire tasmādyajustasmādajāyata //

अन्वयः - तस्मात् सर्वहुतः यज्ञात् ऋचः सामानि जज्ञिरे, तस्मात् छन्दांसि जज्ञिरे, तस्मात् यजुः अजायत।

सर्वहुत उस यज्ञ से ऋचाएँ और साम उत्पन्न हुए, उससे छन्द उत्पन्न हुए, उससे यजुष् उत्पन्न हुए।

From that sarvahut sacrifice were born the Ṛks and the samans; from that were born the metres; from that were born the Yajuṣ.

तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।8।।

tasmādaśvā ajāyanta ye ke cobhayādataḥ /
gāvo ha jajñire tasmāttasmajjātā ajāvayaḥ //

अन्वयः- तस्मात् अश्वाः ये के च उभयादतः अजायन्त, तस्मात् ह गावः जज्ञिरे, तस्मात् अजावयः जाताः।

उस सर्वहुत यज्ञ से अश्व उत्पन्न हुए तथा वे सभी जो दोनों तरफ दाँत वाले हैं, उससे गायें उत्पन्न हुईं, उससे बकरियाँ तथा भेंड़े पैदा हुईं।

From that, horses were born, and all those who have double rows of teeth; cows were born from that; from that were born goats and sheep.

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।9।।

taṃ yajñaṃ barhiṣi praukṣan puruṣaṃ jātamagrataḥ /
tena devā ayajanta sādhyā ṛṣayaśca ye //

अन्वयः - तम् अग्रतः जातं यज्ञं पुरुषं बर्हिषि प्र औक्षन्। देवाः साध्याः ये ऋषयश्च आसन् (ते सर्वे) तेन अयजन्त।

उस सबसे पहले उत्पन्न यज्ञ के साधनभूत पुरुष को देवताओं ने पवित्र दूर्वा पर रखकर प्रोक्षण किया। उससे देवताओं ने, प्रजापतियों ने और ऋषियों ने यज्ञ सम्पादित किया।

The sacrificial victim, namely Purusha, born at the very beginning, they sprinkled with sacred water upon the sacrificial grass. With him as oblation, the gods performed the sacrifice, and also the Sādhyās and the seers.

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।।10।।

yatpuruṣaṃ vyadadhuḥ katidhā vyakalpayan /
mukhaṃ kimasyāsītkiṃ bāhū kimūrū pādā ucyete //

अन्वयः - (देवाः) यत् पुरुषं वि अदधुः कतिधा वि अकल्पयन्? अस्य मुखं किमासीत्, किं बाहू, किम् ऊरू? (किं) पादौ उच्येते?

(देवताओं) ने जब पुरुष को विभक्त किया उस समय उसके कितने भाग किये? उसका मुख क्या था? (उसकी) दोनों भुजाएँ क्या थीं, उसकी दोनों जंघाएँ क्या थीं? (उसके) दोनों पैर क्या कहे जाते हैं?

When they divided the Purusha, in how many portions did they arrange him? What was his mouth? what were his two arms? What were the two thighs and two feet called.

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रो अजायत।।11।।

brāhmaṇo'sya mukhamāsīdbāhū rājanyaḥ kṛtaḥ /
ūrūtadasya yadvaiśyaḥ padbhyāṃ śūdro ajāyata //

अन्वयः - अस्य मुखं ब्राह्मणः आसीत्, राजन्यः बाहू कृतः यत् वैश्यः तत् अस्य ऊरू शूद्रः पद्भ्याम् अजायत।

ब्राह्मण उसका मुख था, दोनों भुजाएँ क्षत्रिय बनीं, जो जंघाएँ थीं, उनसे वैश्य हुआ, तथा उसके दोनों पैरों से शूद्र उत्पन्न हुआ।

Brahmana was his mouth, Ksatriya was made of his two arms, then his two thighs became Vaisya and from his two feet Shudra was born.

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।12।।

candramā manaso jātaścakṣoḥ sūryo ajāyata /
śrotrādvāyuśca prāṇaśca mukhādagnirajāyata //

अन्वयः - **(अस्य) मनसः चन्द्रमा जातः; चक्षोः सूर्यः अजायत, श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च, मुखाद् अग्निः अजायत।**

(उस पुरुष के) मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, (उसकी) आँख से सूर्य उत्पन्न हुआ, कान से वायु तथा प्राण और मुख से अग्नि उत्पन्न हुआ।

The moon was born from (his) mind, from the eye the sun was born, from the ear the wind and breath and from the mouth Agni was born.

नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।13।।

nābyā āsīdantarikṣaṃ śīrṣṇo dyauḥ samavartata /
padbhyāṃ bhūmirdiśaḥ śrotrāttathā lokāṃ akalpayan //

अन्वयः - **नाभ्याः अन्तरिक्षम् आसीत् शीर्ष्णः द्यौः सम् अवर्तत पद्भयां भूमिः; श्रोत्रात् दिशः तथा लोकान् अकल्पयन्।**

(उसकी) नाभि से अन्तरिक्ष (उत्पन्न हुआ) था; शिर से आकाश उत्पन्न हुआ, दोनों पैरों से पृथ्वी, कान से दिशाएँ। इसी प्रकार सभी लोकों की सृष्टि (देवताओं ने) की।.

From the navel was the atmosphere (middle region) created, from the head the heaven (sky) issued forth, from the two feet the earth, the quarters (cardinal directions) from the ear. Thus did they fashion the world.

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।14।।

yatpuruṣeṇa haviṣā devā yajñamatanvata /
vasanto'syāsīdājyaṃ grīṣma idhmaḥ śaradhaviḥ //

अन्वयः - देवाः यत् पुरुषेण यज्ञम् अतन्वत, अस्य आज्यं वसन्तः इध्मः ग्रीष्मः हविः शरद् आसीत्।

देवताओं ने जब पुरुष रूपी हवि से यज्ञ किया (उस समय) वसन्त उस (यज्ञ) का घी था, ग्रीष्म इसका इन्धन और शरत् इसका हवि था।

When the gods performed the sacrifice with Purusha as the oblation, the spring was its clarified butter the summer the sacrificial fuel and the autumn the oblation.

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।।15।।

saptāsyāsanparidhayastriḥsapta samidhaḥ kṛtāḥ /
devā yadyajñaṃ tanvānā abadhnan puruṣaṃ paśum //

अन्वयः - अस्य सप्त परिधयः आसन् त्रिःसप्त समिधः कृताः यत् यज्ञं तन्वानाः देवाः पुरुषं पशुम् अबध्नन्।

उसकी सात परिधियाँ थीं; इक्कीस समिधाएँ बनाई गईं थीं, जिस समय यज्ञ करते हुए देवताओं ने पुरुष पशु को बाँधा था।

Seven were his enclosing sticks in this sacrifice, thrice seven were made the fire sticks when the gods, performing the sacrifice, bound down Purusha, the sacrificial victim.

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि।
धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

yajñena yajñamayajanta devāstāni
dharmāṇi prathamānyāsan I
te ha nākaṃ mahimānaḥ sacanta
yatra pūrve sāddhyāḥ santi devāḥ II

अन्वयः - **देवाः यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त। तानि प्रथमानि धर्माणि आसन्। ते ह महिमानः नाकं सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः देवाः (च) सन्ति।**

यज्ञ से देवताओं ने यज्ञ पुरुष का पूजन किया; वे ही सर्व प्रथम धर्म थे। पूजनेवालों ने स्वर्ग को प्राप्त किया जहाँ पर सृष्टि करने में समर्थ ब्रह्मा आदि पुराने देवताओं का वर्ग तथा देवगण निवास करते हैं।

With the sacrifice the god worshipped the Purusha. These were the first norms. These greatnesses reached the sky where live the ancient Sadhyas and gods.

(इति पुरुषसूक्तं समाप्तम्)
(iti Puruṣasūktaṃ samāptam)

श्रीसूक्तम्
Śrīsūktam

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।1।।

hiraṇyavarṇāṃ hariṇīṃ suvarṇarajatasrajām /
candrāṃ hiraṇmayīṃ lakṣmīṃ jātavedo ma ā vaha //

अन्वयः - जातवेदः हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीम् मे आवह ।

हे अग्निदेव! सुवर्ण वर्ण वाली, हरिणी के समान चञ्चल एवं हरित वर्ण वाली, सोने और चाँदी की माला वाली, चन्द्रमा के समान सबको प्रसन्न करने वाली, स्वर्णशरीर वाली लक्ष्मी को मेरे लिये बुलाओ।

O Lord of fire, bring Lakshmi who is like a golden deer, playful, garlanded by gold and silver, who pleases all like the moon, and has a golden body.

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।2।।

tāṃ ma āvaha jātavedo lakṣmīmanapagāminīm /
yasyāṃ hiraṇyaṃ vindeyaṃ gāmaśvaṃ puruṣānaham //

अन्वयः - जातवेदः मे अनपगामिनीं तां लक्ष्मीम् आवह, यस्यां हिरण्यं गाम् अश्वं पुरुषान् अहं विन्देयम्।

हे अग्निदेव! मेरे लिए दूसरे स्थान पर न जाने वाली उस लक्ष्मी को बुलाओ, जिनके आगमन से मैं गाय, घोड़े और परिवार को प्राप्त करूँ।

O Lord of fire, call Lakshmi who will not abandon me, and whose coming will grant me cows, horses and family.

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।।

aśvapūrvāṃ rathamadhyāṃ hastinādapramodinīm /
śriyaṃ devīmupahvaye śrīrmā devī juṣatām //

अन्वयः - अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीं देवीं श्रियम् उपह्वये, देवी मा जुषताम्।

जिसके आगे-आगे घोड़े चल रहे हैं, जो रथ के मध्य में स्थित है; जो हाथियों के निनाद को सुनकर प्रसन्न होने वाली है, ऐसी लक्ष्मी देवी का मैं आवाहन करता हूँ, वह मेरे यहाँ सदा निवास करे।

I invoke that Lakshmi who has horses in front, and who sits in the middle of a chariot, who is pleased to hear the sound of elephants. May she always make a home with me.

कां सस्मितां हिरण्यप्राकारा -
मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां
तामिहोपह्वये श्रियम्।।4।।

kāṃ sasmitāṃ hiraṇyaprākārā-
mārdrāṃ jvalantīṃ tṛptāṃ tarpayantīm I
padme sthitāṃ padmavarṇāṃ
tāmihopahvaye śriyam II

अन्वयः - **कां सस्मितां हिरण्यप्राकाराम् आर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं पद्मे स्थितां तां श्रियम् इह उपह्वये।**

अवर्णनीय, मन्दहास से युक्त, हिरण्य से चारों तरफ घिरी हुई, स्नेह और करुणा से पूर्ण हृदय वाली, सर्वथा तृप्त तथा भक्तों को भी तृप्त करने वाली कमल पर विराजमान कमलवर्णाङ्गी, उस लक्ष्मी को मैं यहाँ बुलाता हूँ।

I invoke that Lakshmi, who is indescribable, smiling, surrounded by gold, full of love and compassion, always fulfilled and who fulfils her devotees, who sits on a lotus and who is lotus coloured, that Lakshmi I invoke.

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमीं शरणं प्रपद्ये
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।5।।

candrāṃ prabhāsāṃ yaśasā jvalantīṃ
śriyaṃ loke devajuṣṭāmudārām I
taṃ padmanemīṃ śaraṇaṃ prapadye
alakṣmīrme naśyatāṃ tvāṃ vṛṇe II

अन्वयः - **चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीम् लोके देव-जुष्टाम् उदारां पद्मनेमीं तां श्रियं शरणं प्रपद्ये। मे अलक्ष्मीः नश्यताम्, त्वां वृणे।**

चन्द्रमा के समान आह्लादित करने वाली अपनी कान्ति एवं कीर्ति

से द्योतित, स्वर्ग में देवताओं से पूजित, अत्यन्त उदार और हाथ में लीलाकमल रखने वाली उस लक्ष्मी की शरण को प्राप्त करता हूँ। मेरी दरिद्रता नष्ट हो जाए इसलिए मैं तुम्हारा आश्रय लेता हूँ।

I find refuge with that Lakshmi who pleases like the moon, who is worshipped by gods in heaven for her lustre and fame, extremely generous and with a lotus in her hand for play. I seek refuge so that my poverty is destroyed.

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु
या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।6।।

ādityavarṇe tapaso'dhijāto
vanaspatistava vṛkṣo'tha bilvaḥ I
tasya phalāni tapasā nudantu
yā antarā yāśca bāhyā alakṣmīḥ II

अन्वयः - **आदित्यवर्णे! तव तपसः वनस्पतिः अथ बिल्वः अधिजातः, तस्य फलानि तपसा याः अन्तरा याश्च बाह्याः अलक्ष्मीः (ताः) नुदन्तु।**

हे सूर्य के समान तेजस्विनी लक्ष्मी! तुम्हारे तपोबल से वनस्पति पैदा हुई, उसके बाद बिल्व पैदा हुआ, उस बिल्व के फल, तपस्या से मेरे अन्दर और बाहर की समस्त दरिद्रता को दूर करें।

O Lakshmi of sun-like lustre ! It is becasue of your power that vanaspati was born, then **'bel'** was born. May the bel fruits by my penance remove my poverty–internal and external.

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।7।।

upaitu māṃ devasakhaḥ kīrtiśca maṇinā saha /
prādurbhūto'smi rāṣtre'smin kīrtimṛddhiṃ dadātu me //

अन्वयः - मां कीर्तिः मणिना सह देवसखः उपैतु अस्मिन् राष्ट्रे प्रादुर्भूतः अस्मि मे कीर्तिं समृद्धिं ददातु।

हे लक्ष्मी! मुझे कीर्ति और मणिभद्र के साथ कुबेर प्राप्त हों (अर्थात् यश और धन प्राप्त हों)। मैं इस राष्ट्र में पैदा हुआ हूँ, मुझे कीर्ति और समृद्धि प्रदान करो।

O Lakshmi, give me fame, and Manibhadra and with him Kubera (i.e. fame and wealth). I have been born in this country, give me fame and prosperity.

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।8।।

kṣutpipāsāmalāṃ jyeṣṭhāmalakṣmīṃ nāśayāmyaham /
abhūtimasamṛddhiṃ ca sarvāṃ nirṇuda me gṛhāt //

अन्वयः - अहं क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् अलक्ष्मीं नाशयामि, मे गृहात् सर्वाम् अभूतिम् असमृद्धिं निर्णुद।

मैं भूख और प्यास से मलिन शरीर वाली, लक्ष्मी की ज्येष्ठ बहन दरिद्रता का नाश चाहता हूँ, मेरे घर से सभी प्रकार की अभूति को, दरिद्रता को और अपूर्णता को दूर करो।

I want to destroy Alakshmi, elder sister of Lakshmi (i. e. poverty), who is dirty bodied due to hunger and thirst. Remove all poverty and lack of fulfilment from my home.

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्
ईश्वरीꣳसर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।9।।

gandhadvārāṃ durādharṣāṃ nityapuṣṭāṃ karīṣiṇīm /
īśvarīṃ sarvabhūtānāṃ tāmihopahvaye śriyam //

अन्वयः - गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं सर्वभूतानाम् ईश्वरीम् तां श्रियम् इह उपह्वये।

सुगन्ध से प्राप्त होने वाली, किसी से भी अपमानित न होने वाली, सर्वदा धन-धान्य और पशुओं से परिपूर्ण करने वाली, जगत् के सभी प्राणियों की स्वामिनी लक्ष्मी देवी को मैं अपने घर में बुलाता हूँ।

I invite that Lakshmi in my home who is scented, unridiculed, always filling with wealth, food and animals and who is Goddess of all beings of the world.

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनाꣳरूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।10।।

manasaḥ kāmamākūtiṃ vācaḥ satyamaśīmahi /
paśūnāṃ rūpamannasya mayi śrīḥ śrayatāṃ yaśaḥ //

अन्वयः - मनसः कामम् आकूतिम्, वाचः सत्यं, पशूनां च अन्नस्य रूपम् अशीमहि मयि श्रीः यशः श्रयताम्।

मेरे मन की कामना पूर्ण हो, मेरी वाणी सत्य हो, पशुओं और अन्नों के भण्डार प्राप्त हों मेरे घर में सम्पत्ति एवं कीर्ति का निवास रहे।

May the desires of my heart be fulfilled, may my voice be proved true, may I gain animals and grain, may my home have both wealth and fame.

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।11।।

kardamena prajā bhūtā mayi sambhava kardam /
śriyaṃ vāsaya me kule mātaraṃ padmamālinīm //

अन्वयः - **कर्दमेन प्रजा भूता (हे) कर्दम! मयि सम्भव, पद्ममालिनीं मातरं मे कुले वासय।**

कर्दम ऋषि के कारण प्रजा पैदा हुई। हे कर्दम! मेरे घर में जन्म ग्रहण करो, कमल की माला धारण करने वाली, अपनी माता लक्ष्मी को मेरे कुल में निवास कराओ।

All creatures were born because of Kardama rishi. O Kardama, accept birth in my home, make your mother Lakshmi who wears a garland of lotuses reside in my home.

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12।।

āpaḥ sṛjantu snigdhāni ciklīta vasa me gṛhe /
ni ca devīm mātaraṃ śriyaṃ vāsaya me kule //

अन्वयः - **आपः स्निग्धानि सृजन्तु चिक्लीत मे गृहे वस च, मातरं श्रियं देवीं मे कुले निवासय।**

जलदेवता स्निग्ध और मनोहर पदार्थों को पैदा करें, चिक्लीत (लक्ष्मी पुत्र) तुम भी मेरे घर में निवास करो और अपनी माता लक्ष्मी देवी को मेरे वंश में निवास कराओ।

Lord of water, produce pleasant materials. Chiklita (son

of Lakshmi) reside in my home, and make your mother Lakshmi reside in my family.

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१३।।

ārdrāṃ puṣkariṇīṃ puṣṭiṃ piṅgalāṃ padmamālinīm I
candrāṃ hiraṇmayīṃ lakṣmīṃ jātavedo ma ā vaha II

अन्वयः - जातवेदः आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीं चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं मे आवह।

हे अग्नि! दया और करुणा का भाव रखने वाली, हाथियों के शुण्डाग्र में स्थित जलकलशों से अभिषिक्त, पुष्टि करने वाली, पिङ्गलवर्ण वाली कमलों की माला धारण करने वाली और चन्द्रमा के समान आह्लादित करने वाली लक्ष्मी का मेरे लिए आवाहन करो।

O Jataveda (Fire), call that Lakshmi for me who is forgiving and compassionate, anointed with water flowing from pitches held in the trunks of two elephants, who increases all, who wears a garland of yellow lotuses and who pleases like the moon.

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।14।।

ārdrāṃ yaḥ kariṇīṃ yaṣtiṃ suvarṇāṃ hemamālinīm I
sūryāṃ hiraṇmayīṃ lakṣmīṃ jātavedo ma āvaha II

अन्वयः - जातवेदः आर्द्रां यः करिणीम् यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीं सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं मे आवह।

हे अग्नि! कोमल स्वभाव वाली, दुष्टों को दण्ड देने वाली, समस्त

प्राणि-वर्ग की अवलम्बन-स्वरूपा, सुवर्णसदृशा, सुवर्ण की माला धारण करने वाली, सूर्य के समान वर्ण वाली हिरण्य से युक्त लक्ष्मी को मेरे घर में बुलाओ।

O Jataveda (Fire), call that Lakshmi to my home who is mild-mannered, who punishes wrong-doers, who is the foundation of all creatures, golden-hued, who wears a golden necklace, with a complexion like that of the sun and gold.

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो -
ऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।15।।

tāṃ ma ā vaha jātavedo lakṣmīmanapagāminīm /
yasyāṃ hiraṇyaṃ prabhūtaṃ gāvo dāsyo'śvān vindeyaṃ puruṣānaham //

अन्वयः - जातवेदः मे ताम् अनपगामिनीं लक्ष्मीं आवह यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावः दास्यः अश्वान् पुरुषान् विन्देयम्।

हे अग्नि! तुम मेरे घर में उस अन्यत्र न जाने वाली लक्ष्मी को बुलावो जिस लक्ष्मी के आगमन से मैं बहुत सा धन, गाएँ, दासियाँ, घोड़े और मनुष्यों को प्राप्त करूँ।

O Fire god, call that Lakshmi to my home who does not go any where else, and from whom I will acquire much wealth, cows, servant–girls, horses and human beings.

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

yaḥ śuciḥ prayato bhūtvā juhuyādājyamanvahaṃ /
sūktaṃ pañcadaśarcaṃ ca śrīkāmaḥ satataṃ japet //

अन्वयः - य: श्रीकाम: (स:) शुचि: प्रयत: भूत्वा अन्वहम् जुहुयात्
पञ्चदशर्चं च (एतत्) सूक्तं सततं जपेत्।

जो मनुष्य लक्ष्मी प्राप्ति का अभिलाषी हो, वह पवित्र एवं संयमी होकर प्रतिदिन अग्नि में हवन करे और पन्द्रह ऋचाओं वाले श्री-सूक्त का नियमित पाठ करे।

Whoever desires Lakshmi should make sacrifices to the fire god daily with a firm mind and having purified himself, he should regularly recite the Shrisukta which has 15 verses.

(इति श्रीसूक्तं समाप्तम्)
(iti Śrīsūktaṃ samāptam)

शिवसङ्कल्पसूक्तम् (शुक्लयजुर्वेद)
Śivasaṅkalpasūktam (Śuklayajurveda)

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।1।।

yajjāgrato dūramudaiti daivaṃ
tadu suptasya tathaiveti I
duraṅgamaṃ jyotiṣāṃ jyotirekaṃ
tanme manaḥ śivasaṅkalpamastu II

अन्वयः - यत् जाग्रतः दूरम् उद् आ एति, यत् दैवम् ,तत् उ सुप्तस्य तथा एव एति, यत् दूरङ्गमम् ,यत् ज्योतिषाम् एकं ज्योतिः तत् मे मनः शिवसङ्कल्पम् अस्तु।

जो जाग्रत् अवस्था में अधिक दूर जाता है, जो आत्मद्रष्टा है, सुषुप्ति में भी लौट आता है, दूर जाने वाला वह जो सभी बाह्य इन्द्रियों का प्रकाशक है, वह मेरा मन शुभ संकल्पवाला हो।

May that mind of mine, which travel farther off (than other sense organs) when one is sleeping, which alone perceives the soul, which comes back in the same manner as (it travels away when one is sleeping), (which is) far reaching and which is the sole light of all external organs, be of auspicious resolution.

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो
यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।

यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।2।।

yena karmāṇyapaso manīṣiṇo
yajñe kriṇvanti vidatheṣu dhīrāḥ /
yadapūrvaṃ yakṣamantaḥ prajānāṃ
tanme manaḥ śivasaṅkalpamastu //

अन्वयः - येन अपसः धीराः मनीषिणः यज्ञे विदथेषु (च) कर्माणि कृण्वन्ति यत् अपूर्वम्, (यत्) यक्षम् , प्रजानाम् अन्तः, तत् मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

जिससे कर्मनिष्ठ धीर मनीषी विद्वान् यज्ञ तथा पूजा में विविध कर्म करते हैं , जो सबसे पहले उत्पन्न होता है पूज्य हैं अथवा जिसमें अनेक भाव विचार हैं और जो प्राणियों के भीतर रहता है,वह मेरा मन शुभसंकल्प वाला हो।

May that mind of mine through which resolute and intelligent men, devoted to the performance of religious rites, do their work in sacrifice and worship, which is unprecedented, capable of performing sacrifices, and (which is) present in all living beings, be of auspicious resolution.

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च
यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।3।।

yatprajñānamuta ceto dhṛtiśca
yajjyotirantaramṛtam prajāsu /
yasmānna ṛte kiñcana karma kriyate
tanme manaḥ śivasaṅkalpamastu //

अन्वयः - यत् प्रज्ञानम् , उत चेतः, धृतिः चः यत् प्रजासु अन्तः

अमृतं ज्योतिः (अस्ति) यस्मात् ऋते किञ्चन कर्म न क्रियते तत् मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

जो हर प्रकार के ज्ञान का साधन है, चित् है। जो धैर्य रूप है, जो सब प्राणियों में अन्दर रहने वाला अमृत प्रकाश रूप है, और जिसके अभाव में कोई काम नहीं किया जाता, वह मेरा मन शुभसंकल्प वाला हो।

May that mind of mine, which is the instrument of gaining special and general knowledge, which is steady, which is the immortal light in living beings, and without which no work is done, be of auspicious resolution.

येनेदं भूतं भुवनं भविष्य-
त्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।4।।

yenedaṃ bhūtaṃ bhuvanaṃ bhaviṣyat-
parigṛhītamamṛtena sarvam /
yena yajñastāyate saptahotā
tanme manaḥ śivasaṅkalpamastu //

अन्वयः- येन अमृतेन इदं भूतं भुवनं भविष्यत् सर्वं परिगृहीतम्, येन सप्तहोता यज्ञः तायते, तत् मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

जिस अमर मन के द्वारा इस संसार के भूत वर्तमान एवं भविष्यत् सभी पदार्थ ज्ञात होते हैं और जिसके द्वारा सात होताओं वाला (अग्निष्टोम) यज्ञ किया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

May that mind of mine which is immortal, by which everything is known in this world in present, past and future, and by which the sacrifice presided over by seven priests is performed, be of auspicious resolution.

यस्मिन्नृचः साम यजूंꣳषि यस्मिन् -
प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।
यस्मिꣳश्चित्तꣳसर्वमोतं प्रजानां
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।५।।

yasminnṛcaḥ sāma yajauṃṣi yasmin-
pratiṣṭhitā rathanābhāvivārāḥ I
yasmiṅścittaṃ sarvamotaṃ prajānāṃ
tanme manaḥ śivasaṅkalpamastu II

अन्वयः- यस्मिन् ऋचः साम यजूंषि रथनाभौ अराः इव प्रतिष्ठिताः, यस्मिन् प्रजानां सर्वं चित्तम् ओतम्, तत् मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

जिस प्रकार रथचक्र की तीलियाँ उसकी नाभि में प्रतिष्ठित होती हैं, उसी प्रकार जिस मन में ऋचाएँ, साम और यजुष् प्रतिष्ठित होते हैं, जिसमें प्राणियों का समग्र ज्ञान निहित है, वह मेरा मन शुभसंकल्प वाला हो।

May that mind of mine in which the Ṛks, Sama and Yajuṣ are set up like the spokes in the axle of a wheel, and in which all knowledge of living beings is woven, be of auspicious resolution.

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् -
नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।६।।

suṣārathiraśvāniva yanmanuṣyān
nenīyate'bhiśubhirvājina iva I
hṛtpratiṣṭhaṃ yadajiraṃ javiṣṭhaṃ
tanme manaḥ śivasaṅkalpamastu II

अन्वयः- यत् सुसारथिः अश्वान् इव अभीशुभिः वाजिन इव मनुष्यान् नेनीयते, यत् हृत्प्रतिष्ठम् अजिरं जविष्ठम् , तत् मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

जैसे अच्छा सारथी घोड़ों की लगाम के द्वारा तेज चलने वाले घोड़ों को इधर-उधर ले जाता है, उसी प्रकार जो मनुष्यों को प्रेरित करता है, जो हृदय में स्थित है, जो वार्धक्य से रहित और अतिशय वेगवान् है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।

May that mind of mine, which guides living beings from one place to another, as a good charioteer does with horses, and controls them by reins, which resides in the heart and is never old, and which is very fast, be of auspicious resolution.

(इति शिवसङ्कल्पसूक्तम्)
(iti Śivasaṅkalpasūktam)

रत्नमालिका
Ratnamālikā

कः खलु नालङ्क्रियते दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान्।
अमुया कण्ठस्थितया प्रश्नोत्तररत्नमालिकया।।1।।

kaḥ khalu nālaṅkriyate dṛṣṭādṛṣṭārthasādhanapaṭīyān /
amuyā kaṇṭhasthitayā praśnottararatnamālikayā //

भगवन्किमुपादेयं गुरुवचनं हेयमपि च किमकार्यम्।
को गुरुरधिगततत्त्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम्।।2।।

bhagavan kimupādeyaṃ guruvacanaṃ heyamapi ca kimakāryam /
ko gururadhigatatattvaḥ śiṣyahitāyodyataḥ satatam //

त्वरितं किं कर्तव्यं विदुषां संसारसंततिच्छेदः।
किं मोक्षतरोर्बीजं सम्यक्ज्ञानं क्रियासिद्धम्।।3।।

tvaritaṃ kiṃ kartavyaṃ viduṣāṃ saṃsārasaṃtaticchedaḥ /
Kiṃ mokṣatarorbījaṃ samyakjñānaṃ kriyāsiddham //

कःपथ्यतरो धर्मः कः शुचिरिह यस्य मानसं शुद्धम्।
कः पण्डितो विवेकी किं विषमवधीरणा गुरुषु।।4।।

kaḥ pathyataro dharmaḥ kaḥ śuciriha yasya mānasaṃ śuddham /
kaḥ paṇḍito vivekī kiṃ viṣamavadhīraṇā guruṣu //

किं संसारे सारं बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव।
किं मनुजेष्विष्टतमं स्वपरहितायोद्यतं जन्म।।5।।

kiṃ saṃsāre sāraṃ bahuśo'pi vicintyamānamidameva I
kiṃ manujeṣviṣṭatamaṃ svaparahitāyodyataṃ janma II

मदिरेव मोहजनकः कः स्नेहः के च दस्यवो विषयाः।
का भववल्ली तृष्णा को वैरी यस्त्वनुद्योगः।।6।।

madireva mohajanakaḥ kaḥ snehaḥ ke ca dasyavo viṣayāḥ I
kā bhavavallī tṛṣṇā ko vairī yastvanudyogaḥ II

कस्माद्भयमिह मरणादन्धादिह को विशिष्यते रागी।
कः शूरो यो ललना-लोचनबाणैर्न च व्यथितः।।7।।

kasmādbhayamiha maraṇādandhādiha ko viśiṣyate rāgī I
kaḥ śūro yo lalanā - locanabāṇairna ca vyathitaḥ II

पातुं कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिह युज्यते सदुपदेशः।
किं गुरुताया मूलं यदेतदप्रार्थनं नाम।।8।।

pātuṃ karṇāñjalibhiḥ kimamṛtamiha yujyate sadupadeśaḥ I
kiṃ gurutāyā mūlaṃ yadetadaprārthanaṃ nāma II

किं गहनं स्त्रीचरितं कश्चतुरो यो न खण्डितस्तेन।
किं दुःखमसंतोषः किं लाघवमधमतो याच्ञा।।9।।

kiṃ gahanaṃ strīcaritaṃ kaścaturo yo na khaṇḍitastena I
kiṃ duḥkhamasantoṣaḥ kiṃ lāghavamadhamato yācñā II

किं जीवितमनवद्यं किं जाड्यं पठितोऽप्यनभ्यासः।
को जागर्ति विवेकी का निद्रा मूढता जन्तोः।।10।।

kiṃ jīvitamanavadyaṃ kiṃ jāḍyaṃ paṭhito'pyanabhyāsaḥ /
ko jāgarti vivekī kā nidrā mūḍhatā jantoḥ //

नलिनीदलगतजलवत्तरलं किं यौवनं धनं चायुः।
कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः सज्जना एव।।11।।

nalinīdalagatajalavattaralaṃ kiṃ yauvanaṃ dhanaṃ cāyuḥ /
kathaya punaḥ ke śaśinaḥ kiraṇasamāḥ sajjanā eva //

को नरकः परवशता किं सौख्यं सर्वसङ्गविरतिर्या।
किं सत्यं भूतहितं प्रियं च किं प्राणिनामसवः।।12।।

ko narakaḥ paravaśatā kiṃ saukhyaṃ sarvasaṅgaviratiryā /
kiṃ satyaṃ bhūtahitaṃ priyaṃ ca kiṃ prāṇināmasavaḥ //

कोऽनर्थफलो मानः का सुखदा साधुजनमैत्री।
सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः सर्वथा त्यागी।।13।।

ko'narthaphalo mānaḥ kā sukhadā sādhujanamaitrī /
sarvavyasanavināśe ko dakṣaḥ sarvathā tyāgī //

किं मरणं मूर्खत्वं किं चानर्घं यदवसरे दत्तम्।
आमरणात्किं शल्यं प्रच्छन्नं यत्कृतं पापम्।।14।।

kiṃ maraṇaṃ mūrkhatvaṃ kiṃ cānarghaṃ yadavasare dattam /
āmaraṇātkiṃ śalyaṃ pracchannaṃ yatkṛtaṃ pāpam //

कुत्र विधेयो यत्नो विद्याभ्यासे सदौषधे दाने।
अवधीरणा क्व कार्या खलपरयोषित्परधनेषु।।15।।

kutra vidheya yatno vidyābhyāse sadouṣadhe dāne /
avadhīraṇā kva kāryā khalaparayoṣitparadhaneṣu //

काहर्निशमनुचिन्त्या संसारासारता न तु प्रमदा।
का प्रेयसी विधेया करुणा दीनेषु सज्जने मैत्री।।16।।

kāharniśamanucintyā saṃsārāsāratā na tu pramadā /
kā preyasī vidheyā karuṇā dīneṣu sajjane maitrī //

कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्य ह्यात्मा न शक्यते जेतुम्।
मूर्खस्य शङ्कितस्य च विषादिनो वा कृतघ्नस्य।।17।।

kaṇthagatairapyasubhiḥ kasya hyātmā na śakyate jetum /
mūrkhasya śaṅkitasya ca viṣādino vā kṛtaghnasya //

कः साधुः सद्वृत्तः कमधममाचक्षते त्वसद्वृत्तम्।
केन जितं जगदेतत्सत्यतितिक्षावता पुंसा।।18।।

kaḥ sādhuḥ sadvṛttaḥ kamadhamamācakṣate tvasadvṛttam /
kena jitaṃ jagadetatsatyatitikṣāvatā puṃsā //

कस्मै नमांसि देवाः कुर्वन्ति दयाप्रधानाय।
कस्मादुद्वेगः स्यात्संसारारण्यतः सुधियः।।19।।

kasmai namāṃsi devāḥ kurvanti dayāpradhānāya /
kasmādudvegaḥ syātsaṃsārāraṇyataḥ sudhiyaḥ //

कस्य वशे प्राणिगणः सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।
क्व स्थातव्यं न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाढ्ये।।20।।

kasya vaśe prāṇigaṇaḥ satyapriyabhāṣiṇo vinītasya I
kva sthātavyaṃ nyāyye pathi dṛṣṭādṛṣṭalābhāḍhye II

कोऽन्धो योऽकार्यरतः को बधिरो यो हितानि न शृणोति।
को मूको यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति।।21।।

ko'ndho yo'kāryarataḥ ko badhiro yo hitāni na śṛṇoti I
ko mūko yaḥ kāle priyāṇi vaktuṃ na jānāti II

किं दानमनाकाङ्क्षं किं मित्रं यो निवारयति पापात्।
कोऽलङ्कारः शीलं किं वाचां मण्डनं सत्यम्।।22।।

kiṃ dānamanākāṅkṣaṃ kiṃ mitraṃ yo nivārayati pāpāt I
ko'laṅkāraḥ śīlaṃ kiṃ vācāṃ maṇḍanaṃ satyam II

विद्युद्विलसितचपलं किं दुर्जनसंगतिर्युवतयश्च।
कुलशीलनिष्प्रकम्पाः के कलिकालेऽपि सज्जना एव।।23।।

vidyudvilasitacapalaṃ kiṃ durjanasaṅgatiryuvatayaśca I
kulaśīlaniṣprakampāḥ ke kalikāle'pi sajjanā eva II

चिन्तामणिरिव दुर्लभमिह किं कथयामि तच्चतुर्भद्रम्।
किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसा विशेषेण।।24।।

cintāmaṇiriva durlabhamiha kiṃ kathayāmi taccaturbhadram I
kiṃ tadvadanti bhūyo vidhūtatamasā viśeṣeṇa II

दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम्।
वित्तं त्यागसमेतं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम्।।25।।

dānaṃ priyavāksahitaṃ jñānamagarvaṃ kṣamānvitaṃ śauryam /
vittaṃ tyāgasametaṃ durlabhametaccaturbhadram //

किं शोच्यं कार्पण्यं सति विभवे किं प्रशस्तमौदार्यम्।
कः पूज्यो विद्वद्भिः स्वभावतः सर्वदा विनीतो यः।।26।।

kiṃ śocyaṃ kārpaṇyaṃ sati vibhave kiṃ praśastamaudāryam /
kaḥ pūjyo vidvadbhiḥ svabhāvataḥ sarvadā vinīto yaḥ //

कः कुलकमलदिनेशः सति गुणविभवेऽपि यो नम्रः।
कस्य वशे जगदेतत्प्रियहितवचनस्य धर्मनिरतस्य।।27।।

kaḥ kulakamaladineśaḥ sati guṇavibhave'pi yo namraḥ /
kasya vaśe jagadetatpriyahitavacanasya dharmaniratasya //

विद्वन्मनोहरा का सत्कविता बोधवनिता च।
कं न स्पृशति विपत्तिः प्रवृद्धवचनानुवर्तिनं दान्तम्।।28।।

vidvanmanoharā kā satkavitā bodhavanitā ca /
kaṃ na spṛśati vipattiḥ praovṛddhavacanānuvartinaṃ dāntam //

कस्मै स्पृहयति कमला त्वनलसचित्ताय नीतिवृत्ताय।
त्यजति च कं सहसा द्विजगुरुसुरनिन्दाकरं च सालस्यम्।।29।।

kasmai spṛhayati kamalā tvanalasacittāya nītivṛttāya /
tyajati ca kaṃ sahasā dvijagurusuranindākaraṃ ca sālasyam //

कुत्र विधेयो वासः सज्जननिकटेऽथवा काश्याम्।
कःपरिहार्यो देशः पिशुनयुतो लुब्धभूपश्च।।30।।

kutra vidheyo vāsaḥ sajjananikaṭe'thavā kāśyām /
kaḥ parihāryo deśaḥ piśunayuto lubdhabhūpaśca //

केनाशोच्यः पुरुषः प्रणतकलत्रेण धीरविभवेन।
इह भुवने कः शोच्यः सत्यपि विभवे न यो दाता।।31।।

kenāśocyaḥ puruṣaḥ praṇatakalatreṇa dhīravibhavena /
iha bhuvane kaḥ śocyaḥ satyapi vibhave na yo dātā //

किं लघुताया मूलं प्राकृतपुरुषेशु या याच्ञा।
रामादपि कः शूरः स्मरशरनिहतो न यश्चलति।।32।।

kiṃ laghutāyā mūlaṃ prākṛtapuruṣeśu yā yācñā /
rāmādapi kaḥ śūraḥ smaraśaranihato na yaścalati //

किमहर्निशमनुचिन्त्यं भगवच्चरणं न संसारः।
चक्षुष्मन्तोऽप्यन्धाः के स्युर्ये नास्तिका मनुजाः।।33।।

kimaharniśamanucintyaṃ bhagavaccaraṇaṃ na saṃsāraḥ /
cakṣuṣmanto'pyandhāḥ ke syuṛye nāstikā manujāḥ //

कःपङ्गुरिह प्रथितो व्रजति च यो वार्धके तीर्थम्।
किं तीर्थमपि च मुख्यं चित्तमलं यन्निवर्तयति।।34।।

kaḥ paṅguriha prathito vrajati ca yo vārdhake tīrtham /
kiṃ tīrthamapi ca mukhyaṃ cittamalaṃ yannivartayati //

किं स्मर्तव्यं पुरुषैर्हरिनाम सदा न यावनी भाषा।
को हि न वाच्यः सुधिया परदोषश्चानृतं तद्वत्।।35।।

kim smartavyaṃ puruṣairharināma sadā na yāvanī bhāṣā /
ko hi na vācyaḥ sudhiyā paradoṣaścānṛtaṃ tadvat //

किं सम्पाद्यं मनुजैर्विद्या वित्तं बलं यशः पुण्यम्।
कः सर्वगुणविनाशी लोभः शत्रुश्च कः कामः।।36।।

kiṃ sāmpādyaṃ manujairvidyā vittaṃ balaṃ yaśaḥ puṇyam /
kaḥ sarvaguṇavināśī lobhaḥ śatruśca kaḥ kāmaḥ //

का च सभा परिहार्या हीना या वृद्धसचिवेन।
इह कुत्रावहितः स्यान्मनुजः किल राजसेवायाम्।।37।।

kā ca sabhā parihāryā hīnā yā vṛddhasacivena /
iha kutrāvahitaḥ syānmanujaḥ kila rājasevāyām //

प्राणादपि को रम्यः कुलधर्मः साधुसङ्गश्च।
का संरक्ष्या कीर्तिः पतिव्रता नैजबुद्धिश्च।।38।।

prāṇādapi ko ramyaḥ kuladharmaḥ sādhusaṅgaśca /
kā saṃrakṣyā kīrtiḥ pativratā naijabuddhiśca //

का कल्पलता लोके सच्छिष्यायार्पिता विद्या।
कोऽक्षयवटवृक्षः स्याद्विधिवत्सत्पात्रदत्तदानं यत्।।39।।

kā kalpalatā loke sacchiṣyāyārpitā vidyā /
ko'kṣayavaṭavṛkṣaḥ syādvidhivatsatpātradattadānaṃ yat //

किं शस्त्रं सर्वेषां युक्तिर्माता च का धेनुः।
किं नु बलं यद्धैर्यं को मृत्युर्यदवधानरहितत्वम्।।40।

kiṃ śastraṃ sarveṣāṃ yuktirmātā ca kā dhenuḥ /
kiṃ nu balaṃ yaddhairyaṃ ko mṛtyuryadavadhānarahitatvam //

कुत्र विषं दुष्टजने किमिहाशौचं भवेदृणं नृणाम्।
किमभयमिह वैराग्यं भयमपि किं वित्तमेव सर्वेषाम्।।41।।

kutra viṣaṃ duṣṭajane kimihāśaucaṃ bhavedṛṇaṃ nṛṇām /
kimabhayamiha vairāgyaṃ bhayamapi kiṃ vittameva sarveṣām //

का दुर्लभा नराणां हरिभक्तिः पातकं च किं हिंसा।
को हि भगवत्प्रियः स्याद्योऽन्यं नोद्वेजयेदनुद्विग्नः।।42।।

kā durlabhā narāṇāaṃ haribhaktiḥ pātakaṃ ca kiṃ hiṃsā I
ko hi bhagavatpriyaḥ syādyo'nyaṃ nodvejayedanudvignaḥ II

कस्मात्सिद्धिस्तपसो बुद्धिः क्व नु भूसुरे कुतो बुद्धिः।
वृद्धोपसेवया के वृद्धा ये धर्मतत्त्वज्ञाः।।43।।

kasmātsiddhistapaso buddhiḥ kva nu bhūsure kuto buddhiḥ I
vṛddhopasevayā ke vṛddhā ye dharmatattvajñāḥ II

संभावितस्य मरणादधिकं किं दुर्यशो भवति।
लोके सुखी भवेत्को धनवान्धनमपि च किं यतश्चेष्टम्।।44।।

saṃbhāvitasya maraṇādadhikaṃ kiṃ duryaśo bhavati I
loke sukhī bhavet ko dhanavāndhanamapi ca kiṃ yataśceṣṭam II

सर्वसुखानां बीजं किं पुण्यं दुःखमपि कुतः पापात्।
कस्यैश्वर्यं यः किल शङ्करमाराधयेद्भक्त्या।।45।।

sarvasukhānāṃ bījaṃ kiṃ puṇyaṃ duḥkhamapi kutaḥ pāpāt I
kasyaiśvaryaṃ yaḥ kila śaṅkaramādhayedbhaktyā II

को वर्धते विनीतः को वा हीयेत यो दृप्तः।
को न प्रत्येतव्यो ब्रूते यश्चानृतं शश्वत्।।46।।

ko vardhate vinītaḥ ko vā hīyate yo dṛptaḥ I
ko na pratyetavyo brūte yaścānṛtaṃ śaśvat II

कुत्रानृतेऽप्यपापं यच्चोक्तं धर्मरक्षार्थम्।
को धर्मोऽभिमतो यः शिष्टानां निजकुलीनानाम्।।47।।

kutrānṛte'pyapāpaṃ yaccoktaṃ dharmarakṣārthaṃ /
ko dharmo'bhimato yaḥ śiṣṭānāṃ nijakulīnānām //

साधुबलं किं दैवं कः साधुः सर्वदा तुष्टः।
दैवं किं यत्सुकृतं कः सुकृती श्लाघ्यते च यःसद्भिः।।48।।

sādhubalaṃ kiṃ daivaṃ kaḥ sādhuḥ sarvadā tuṣṭaḥ /
daivaṃ kiṃ yatsukṛtaṃ kaḥ sukṛtī ślāghyate ca yaḥ sadbhiḥ //

गृहमेधिनश्च मित्रं किं भार्या को गृही च यो यजते।
को यज्ञो यः श्रुत्या विहितः श्रेयस्करो नृणाम्।।49।।

gṛhamedhinaśca mitraṃ kiṃ bhāryā ko gṛhī ca yo yajate /
ko yajño yaḥ śrutyā vihitaḥ śreyaskaro nṝṇām //

कस्य क्रिया हि सफला यः पुनराचारवाञ्छिष्टः।
कः शिष्टो यो वेदप्रमाणवान्को हतः क्रियाभ्रष्टः।।50।।

kasya kriyā hi saphalā yaḥ punarācāravāñchiṣṭaḥ /
kaḥ śiṣṭo yo vedapramāṇavānko hataḥ kriyābhraṣṭaḥ //

को धन्यः संन्यासी को मान्यः पण्डितः साधुः।
कः सेव्यो यो दाता को दाता योऽर्थितृप्तिमातनुते।।51।।

ko dhanyaḥ saṃnyāsī ko mānyaḥ paṇḍitaḥ sādhuḥ /
kaḥ sevyo yo dātā ko dātāyo'rthitṛptimātanute //

किं भाग्यं देहवतामारोग्यं कः फली कृषिकृत्।
कस्य न पापं जपतः कः पूर्णो यः प्रजावान्स्यात्।।52।।

kiṃ bhāgyaṃ dehavatāmārogyaṃ kaḥ phalī kṛṣikṛt /
kasya na pāpaṃ japataḥ kaḥ pūrṇo yaḥ prajāvānsyāt //

किं दुष्करं नराणां यन्मनसो निग्रहः सततम्।
को ब्रह्मचर्यवान्स्याद्यश्चास्खलितोर्ध्वरेतस्कः।।53।।

kiṃ duṣkaraṃ narāṇāṃ yanmanaso nigrahaḥ satatam /
ko brahmacaryavānsyādyaścāskhalitordhvaretaskaḥ //

का च परदेवतोक्ता चिच्छक्तिः को जगद्भर्ता।
सूर्यः सर्वेषां को जीवनहेतुः स पर्जन्यः।।54।।

kā ca paradevatoktā cicchaktiḥ ko jagadbhartā /
sūryaḥ sarveṣāṃ ko jivanahetuḥ sa parjanyaḥ //

कः शूरो यो भीतत्राता त्राता च कः स गुरुः।
को हि जगद्गुरुरुक्तः शम्भुर्ज्ञानं कुतः शिवादेव।।55।।

kaḥ śūro yo bhītatrātā trātā ca kaḥ sa guruḥ /
ko hi jagadgururuktaḥ śambhurjñānaṃ kutaḥ śivādeva //

मुक्तिं लभेत कस्मान्मुकुन्दभक्तेर्मुकुन्दः कः।
यस्तारयेदविद्यां का चाविद्या यदात्मनोऽस्फूर्तिः।।56।।

muktiṃ labheta kasmādmukundabhaktermukundaḥ kaḥ /
yastārayedavidyāṃ kā cāvidyā yadātmano'sphūrtiḥ //

कस्य न शोको यः स्यादक्रोधः किं सुखं तुष्टिः।
को राजा रञ्जनकृत्कश्च श्वा नीचसेवको यः स्यात्।।57।।

kasya na śoko yaḥ syādakrodhaḥ kiṃ sukhaṃ tuṣṭiḥ /
ko rājā rañjanakṛtkaśca śvā nīcasevako yaḥ syāt //

को मायी परमेशः क इन्द्रजालायते प्रपञ्चोऽयम्।
कः स्वप्ननिभो जाग्रद्व्यवहारःसत्यमपि च किं ब्रह्म।।58।

ko māyī parameśaḥ ka indrajālāyate prapañco'yam /
kaḥ svapnanibho jāgradvyavahāraḥ satyamapi ca kiṃ brahma //

किं मिथ्या यद्विद्यानाश्यं तुच्छं तु शशविषाणादि।
का चानिर्वचनीया माया किं कल्पितं द्वैतम्।।59।।

kiṃ mithyā yadvidyānāśyaṃ tucchaṃ tu śaśaviṣāṇādi /
kā cānirvacanīyā māyā kiṃ kalpitaṃ dvataṃ //

किं पारमार्थिकं स्यादद्वैतं चाज्ञता कुतोऽनादिः।
वपुषश्च पोषकं किं प्रारब्धं चान्नदायि किं चायुः।।60॥

kiṃ pāramārthikaṃ syādadvaitaṃ cājñatā kuto'nādiḥ /
vapuṣaśca poṣakaṃ kiṃ prārabdhaṃ cānnadāyi kiṃ cāyuḥ //

को ब्राह्मणैरुपास्यो गायत्र्यर्काग्निगोचरः शम्भुः।
गायत्र्यामादित्ये चाग्नौ शम्भौ च किं नु तत्तत्त्वम्।।61।।

ko brāhmanairupāsyo gāyatryarkāgnigocaraḥ śambhuḥ /
gāyatryāmāditye cāgnau śambhau ca kiṃ nu tattattvaṃ //

प्रत्यक्षदेवता का माता पूज्यो गुरुश्च कस्तातः।
कः सर्वदेवतात्मा विद्याकर्मान्वितो विप्रः।।62।।

pratyakṣadevatā kā mātā pūjyo guruśca kastātaḥ /
kaḥ sarvadevatātmā vidyākarmānvito vipraḥ //

कश्च कुलक्षयहेतुः संतापः सज्जनेषु योऽकारि।
केषाममोघवचनं ये च पुनः सत्यमौनशमशीलाः।।63।।

kaśca kulakṣayahetuḥ saṃtāpaḥ sajjaneṣu yo'kāri /
keṣāmamoghavacanaṃ ye ca punaḥ satyamaunaśamaśīlāḥ //

किं जन्म विषयसङ्गः किमुत्तरं जन्म पुत्रः स्यात्।
कोऽपरिहार्यो मृत्युः कुत्र पदं विन्यसेच्च दृक्पूते।।64।।

kiṃ janma viṣayasaṅgaḥ kimuttaraṃ janma putraḥ syāt I
ko'pariharyo mṛtyuḥ kutra padaṃ vinyasecca dṛkpūte II64II

पात्रं किमन्नदाने क्षुधितं कोऽर्च्यो हि भगवदवतारः।
कश्च भगवान्महेशः शङ्करनारायणात्मैकः।।65।।

pātraṃ kimannadāne kṣudhitaṃ ko'rcyo hi bhagavadavatāraḥ I
kaśca bhagavānmaheśaḥ śaṅkaranārāyaṇātmaikaḥ II

फलमपि भगवद्भक्तेः किं तल्लोकस्वरूपसाक्षात्त्वम्।
मोक्षश्च को ह्यविद्यास्तमयः कः सर्ववेदभूरथ चोम्।।66।।

phalamapi bhagavadbhakteḥ kiṃ tallokasvarūpasākṣāttvam I
mokṣaśca ko hyavidyāstamayaḥ kaḥ sarvavedabhūratha com II

इत्येषा कण्ठस्था प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम्।
ते मुक्ताभरणा इव विमलाश्चाभान्ति सत्समाजेषु।।67।।

ityeṣā kaṇṭhasthā praśnottararatnamālikā yeṣām I
te muktābharaṇā iva vimalāścābhānti satsamājeṣu II

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः
प्रश्नोत्तररत्नमालिका सम्पूर्णा।।

iti śrīmatparamahaṃsaparivrājakācāryasya
śrīgovindabhagavatpūjyapādaśiṣyasya śrīmacchaṅkarabhagavataḥ
***praśnottararatnamālikā** sampūrṇā II*

Dr. Ramesh Kumar Pandey

Born in Mayandipur village in the Jaunpur District of Uttar Pradesh in 1959, Dr. Pandey completed primary education in his village, and secondary education in an intermediate college. He obtained the degrees of B.A., M.A. and Ph.D. from Banaras Hindu University, Sahityacharya from Sampurnanand Sanskrit University (Varanasi), and D. Litt. from Kameshwar Singh Darbhanga Sanskrit University (Darbhanga), Bihar.

Dr. Pandey taught Sanskrit literature at Shri Sadashiv Kendriya Sanskrit Vidyapeeth, Puri (Orissa), for eight years.

Author of several notable books in the field of poetics and dramaturgy, Dr. Pandey is presently associated with Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, (Deemed University), located in the capital city of Delhi.

सम्पूर्णं जगदेव नन्दनवनं सर्वेऽपि कल्पद्रुमाः
गाङ्गं वारि समस्तवारिनिवहाः पुण्याः समस्ताः क्रियाः।
वाचः प्राकृतसंस्कृताः श्रुतिशिरो वाराणसी मेदिनी
सर्वावस्थितिरस्य वस्तु - विषया दृष्टे परब्रह्मणि।।

sampūrṇaṃ jagadeva nandanavanaṃ sarve'pi kalpadrumāḥ
gāṅgaṃ vāri samastavārinivahāḥ puṇyāḥ samastāḥ kriyāḥ I
vācaḥ prākṛtasaṃskṛtāḥ śrutiśiro vārāṇasī medinī
sarvāvasthitirasya vastu-viṣayā dṛṣṭe parabrahmaṇi II